

पाठशाला

भीतर और बाहर

अंक 28 | जून 2026 | तिमाही



पाठशाला

भीतर और बाहर

जून 2026 | अंक 28

सम्पादकीय टीम

प्रतिभा कटियार (मुख्य सम्पादक)

pratibha.katiyar@azimpremjjifoundation.org

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (सह सम्पादक)

shefali.mehta@azimpremjjifoundation.org

गौतम पाण्डेय

gautam@azimpremjjifoundation.org

राघवेंद्र हेर्ले

Raghavendra.herle@azimpremjjifoundation.org

सुनील कुमार साह

sunil@azimpremjjifoundation.org

गुरबचन सिंह

gurbachan.singh@azimpremjjifoundation.org

जगमोहन सिंह कठैत

jagmohan@azimpremjjifoundation.org

भास्कर उप्रेती

bhaskar.upreti@azimpremjjifoundation.org

सिद्धार्थ कुमार जैन

siddharth.jain@azimpremjjifoundation.org

शोभा लोकनाथन कावूरी

shobha.kavoori@azimpremjjifoundation.org

दशरथ कुमार पारीक

dashrath.pareek@azimpremjjifoundation.org

प्रबन्ध सम्पादक

सुधीश वेंकटेश

प्रकाशन टीम

मीरा प्रभु

शाहनाज बेगम

लोकराम वी जी

संबित महापात्र

publications@apu.edu.in

प्रकाशन कार्यालय

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी,

सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज

बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा

बेंगलूरु - 562125, कर्नाटक

अनुवाद सम्पादक

मधुकर एस पुट्टी (कन्नड़)

राजेश उत्साही (हिन्दी)

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (अँग्रेज़ी)

प्रूफ़रीडिंग

अतुल अग्रवाल

भोपाल, मध्य प्रदेश

लेआउट

लेआउट (हिन्दी) - गणेश ग्राफ़िक्स

भोपाल, मध्य प्रदेश

डिज़ाइन

डिज़ाइन टीम, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

फ़ोटो : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन आर्काइवज़, लेखक

आवरण चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

प्रिंटिंग

लक्ष्मी मुद्रणालय

बेंगलूरु, कर्नाटक

सम्पर्क के लिए लिखें : pathshala@apu.edu.in

पाठशाला भीतर और बाहर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा स्कूली शिक्षा को केन्द्र में रखकर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य देश भर के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तक अभ्यास-आधारित सामग्री पहुँचाकर उनका सहयोग करना है। यह एक मंच है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ़-एसई और एनसीएफ़-एफ़एस के आलोक में शिक्षकों के अनुभवों, प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की साझेदारी का। पाठशाला मूलतः हिन्दी में, फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवादित होकर प्रकाशित होती है।

- बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पत्रिका में उनके नाम बदल दिए गए हैं।
- लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- इस पत्रिका के सभी लेख क्रिएटिव कॉमन्स-एट्रिब्यूशन-नॉन-कमर्शियल 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत लाइसेंस प्राप्त हैं। हमारे लेखों को फिर से प्रकाशित करने के लिए, कृपया हमें लिखें।

सम्पादकीय

समूची विद्यालयी शिक्षा, बल्कि पूरी शिक्षा ही, असल में अलग-अलग विषयों के रास्तों पर चलते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की तरफ़ जाती है। सिर्फ़ कह देना भर काफ़ी नहीं है कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है, बल्कि इस सर्वांगीण विकास की परतों को तसल्ली से खोलकर देखना, समझना और उसके सापेक्ष ही पाठ्यपुस्तकों को, पाठ्यचर्या को देखना भी ज़रूरी है। इन सब का उद्देश्य विद्यार्थियों को अवधारणाओं की समझ देना तो है ही, लेकिन इसके साथ उनको विवेकशील, संवेदनशील और बेहतर नागरिक बनाना भी है। ऐसे नागरिक जिनके अन्दर किसी भी तरह के पूर्वाग्रह की कोई जगह न हो। इसलिए कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों को अवधारणा समझाना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि कैसे समझाया जाए, सीखने के लिए किस तरह का माहौल दिया जाए वह भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इसी बात को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* कुछ इस तरह देखती है—“शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण करना भी होगा, जो 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों से सुसज्जित हों।” (एनईपी 2020, 4.4)

पाठशाला भीतर और बाहर पत्रिका शिक्षा के इसी मूल उद्देश्य के साथ शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे साथियों के अनुभवों को सँजोने और उनकी बात, उनके द्वारा अपनाई गई प्रक्रियाओं को दूर तक पहुँचाने का प्रयास करती है।

इसी उद्देश्य के साथ पत्रिका का जून अंक आपके सामने है। इस अंक में आप पढ़ेंगे विद्यालय संस्कृति पर आलेख, किस तरह विद्यालय में ऐसी संस्कृति विकसित हो कि विद्यार्थी बेहतर इन्सान बनने की ओर अग्रसर हों। बाल साहित्य या पढ़ने की घण्टी को भाषा की गतिविधि तक सीमित न रखकर उसका जुड़ाव तमाम विषयों को समझने और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में कैसे देखा जा सकता है। *पाठशाला* के ही अंक 20 में प्रकाशित लेख को पढ़कर एक शिक्षक ने उसका उपयोग अपनी कक्षा में किया, और उस प्रक्रिया को लेख में लिखा जो कि इस अंक में प्रकाशित है। बिना किसी डर के विद्यार्थी बेहतर सीख सकें इसके लिए एक शिक्षक ने क्या किया, और उनकी कक्षा में किस तरह के बदलाव दिखे, यह पढ़ेंगे उनके लेख में। पहली और दूसरी भाषा सीखने से जुड़ी मुश्किलों और उनसे निकलने के लिए अपनाई गई प्रक्रियाओं के बारे में पढ़ना कक्षा प्रक्रिया के लिए काफ़ी उपयोगी हो सकता है। इन लेखों के अतिरिक्त हमेशा की तरह सभी स्थाई स्तम्भ भी अंक का हिस्सा हैं जिनमें विभिन्न राज्यों से आई शिक्षक डायरियाँ, 'किताबों से दोस्ती' में कुछ ज़रूरी किताबों की बात, 'उम्मीद जगाते शिक्षक' के अन्तर्गत ऐसे शिक्षक की कहानी है जिन्होंने पढ़ने-लिखने की गतिविधियों को ऐसे प्रभावी तरीकों से लागू किया कि विद्यार्थियों का पढ़ना-लिखना बेहतर हुआ। इसके अलावा हैं कुछ रोचक और उपयोगी गतिविधियाँ। उम्मीद है, हमेशा की तरह आपको यह अंक भी उपयोगी लगेगा।

आप जानते ही हैं, *पाठशाला* का दिसम्बर का अंक विशेषांक होता है। इस बार का यह विशेषांक अँग्रेज़ी शिक्षण पर केन्द्रित होगा। विद्यालयी शिक्षण की ज़मीनी चुनौतियों में अँग्रेज़ी शिक्षण एक बड़ी चुनौती के तौर पर दिखता है। ज़्यादातर विद्यार्थियों के घर में अँग्रेज़ी का वातावरण न होने के कारण उन्हें यह भाषा सीखने में ख़ासी मुश्किल आती है। एक अलग और अपरिचित भाषा को न जानने या कम जानने के चलते उनके भीतर एक डर और संकोच भी होता है। यह संकोच कई बार शिक्षक भी महसूस कर रहे होते हैं। इन्हीं चुनौतियों को समझते हुए कुछ ज़मीनी अनुभवों से जुड़े आलेख, प्रक्रियाएँ, आदि इस विशेषांक में होंगी। आप देश के किसी भी कोने से हों, अगर शिक्षण से जुड़े हैं, और आपके पास कुछ प्रक्रियाएँ या अनुभव हैं जिनमें आपने इन चुनौतियों के समाधान के लिए सफल प्रयास किए हों तो अपने अनुभव हमें 30 अगस्त तक ज़रूर लिख भेजिए।

शुभकामनाओं सहित
प्रतिभा कटियार
मुख्य सम्पादक

अनुक्रम

सम्पादकीय

1. विद्यालयी प्रक्रियाओं से मूल्यों और संस्कृति का विकास
अर्धेन्दु शेखर दाश 03
2. रीडिंग कॉर्नर बना सभी विषयों को सीखने का कोना
ताहिरा खान 06
3. अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे ? : तर्क और विज्ञान की यात्रा
अरविन्द कुमार सिंह 10
4. स्थानीय मान समझाने का एक चरणबद्ध तरीका
अभय कुमार 14
5. रीडिंग कॉर्नर के जरिए बोलने के कौशल को बेहतर करना
अंशिका शर्मा 18
6. फ़ाउण्डेशनल स्टेज पर पढ़ना सिखाने की कुछ असरदार रणनीतियाँ
आकाश शांडिल्य 21
7. शिक्षण अधिगम सामग्री : छोटे प्रयास, बड़ा प्रभाव
ए कविता 27
8. 'भयमुक्त कक्षा' बनाने में मददगार तरीके
राकेश शिवनाथ राजपूत 30
9. समय रेखा और इतिहास की समझ
हिमांशु खोले 34
10. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के दौरान बुनियादी साक्षरता पर काम
कल्पना बिष्ट 38

स्थाई स्तम्भ

1. शिक्षकों की डायरी से
पवित्रा संतोष, विजय निराला, प्रियंका चोपड़ा, सत्यवती 41
2. इनसे मिलिए—सुषमा खाखा
गुरु प्रसाद 47
3. किताबों से दोस्ती
बचपन में संविधान : प्रिया, यह रंग मेरा है : शोफ़ाली त्रिपाठी मेहता 50
4. आइए, करके देखें
भावना नायक, चन्द्रिका मुरलीधर, कृतिका 53
5. सम्पादक के नाम 56

विद्यालयी प्रक्रियाओं से मूल्यों और संस्कृति का विकास

अर्धेन्दु शेखर दाश

विद्यार्थियों में मूल्यों और संस्कृति के विकास में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ अपनाई जाने वाली छोटी-छोटी सार्थक प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में बड़े बदलाव ला सकती हैं। यह लेख एक विद्यालय में अपनाई गई ऐसी ही प्रक्रियाओं को दर्शाने वाले सकारात्मक अनुभवों को साझा करता है।



चित्र 1: विद्यार्थियों के विभिन्न तरह के व्यवहारों पर कक्षा में बातचीत

दोपहर के भोजन अवकाश के दौरान मैं विद्यालय की दूसरी मंज़िल के गलियारे में खड़े होकर सामने मैदान में खेल रहे विद्यार्थियों को देख रहा था। मेरा ध्यान कक्षा 1 के 2 विद्यार्थियों पर गया जो एक साथ खेल रहे थे। खेलते-खेलते एक विद्यार्थी का पैर गलती से दूसरे से टकरा गया। दूसरा विद्यार्थी रोने लगा, और कक्षा में वापस चला गया। कुछ मिनट बाद, कक्षा 4 के दो सीनियर विद्यार्थी, रोते हुए विद्यार्थी को कक्षा से लेकर वापस मैदान में आए। अपनी जगह से मैंने इस घटना को ध्यान से देखा।

शुरु में, बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों को आते देखकर मुझे चिन्ता हुई। समझ में नहीं आ रहा था कि वे स्थिति को कैसे सँभालेंगे। ज़रूरत पड़ने पर मैं हस्तक्षेप करने के लिए तैयार था। हालाँकि, जो कुछ मैंने देखा उससे मुझे खुशी और गहरी सन्तुष्टि मिली, क्योंकि यह उन मूल्यों और संस्कृति को दर्शाता है जिन्हें हम अपने विद्यार्थियों में विकसित करने का प्रयास करते हैं। कक्षा 1 के दोनों विद्यार्थियों के साथ कक्षा 4 के दो सीनियर विद्यार्थी बातचीत करते दिखाई दिए। थोड़ी देर की बातचीत के बाद, दोनों विद्यार्थियों ने आपस में हाथ मिलाया और हमेशा की तरह सभी अपनी कक्षाओं में लौट गए।

चूँकि मैं दूसरी मंज़िल के गलियारे से देख रहा था, इसलिए उनकी आपसी बातचीत सुन नहीं पाया। अब मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या चर्चा हुई। अगले दिन मैंने कक्षा 4 के दोनों विद्यार्थियों से बात की। उन्होंने बताया कि जब कक्षा 1 के विद्यार्थी को रोते हुए देखा, तब उन्होंने सबसे पहले उससे पूछा कि क्या हुआ है। फिर वे दूसरे विद्यार्थी के पास मैदान में गए, और उससे बातचीत कर स्थिति के बारे में पूछा। दूसरे विद्यार्थी ने बताया कि खेलते समय अनजाने में ऐसा हो गया था। सीनियर विद्यार्थियों ने कक्षा 1 के विद्यार्थियों को समझाया कि खेल के दौरान गलती हो सकती हैं, और चूँकि वे दोनों दोस्त हैं, उन्हें एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए, साथ खेलना चाहिए और साथ सीखना चाहिए। सीनियर विद्यार्थियों ने उन्हें खेल के दौरान एक दूसरे का ध्यान रखने को भी कहा जिससे किसी को चोट न लगे। फिर उन्होंने कक्षा 1 के विद्यार्थियों को आपस में हाथ मिलाने और खुशी-खुशी अपनी कक्षा में लौटने को कहा।

मैंने कक्षा 4 के विद्यार्थियों से पूछा कि उन्होंने मुश्किल परिस्थितियों को इतने धैर्य व शान्ति से सँभालना कहाँ सीखा। उन्होंने जवाब दिया, "विद्यालय में सीखा है।" उन्होंने बताया कि शिक्षक चर्चा के माध्यम से विवादों का समाधान करते हैं,

और कक्षा सभा के ज़रिए उन्होंने समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने के तरीके सीखे हैं। मैंने उन दोनों की सराहना की कि उन्होंने मज़बूत मूल्यों का प्रदर्शन किया और विश्वास तथा एकजुटता की संस्कृति को जिया। साथ ही मैं यह समझने की कोशिश करने लगा कि यह बात सिर्फ़ उन दो विद्यार्थियों की या एक घटना की नहीं है, बल्कि उन शैक्षिक प्रक्रियाओं की है जो विद्यालय की संस्कृति का हिस्सा बनकर विद्यार्थियों के जीवन का हिस्सा बन जाती हैं, जो कि शिक्षा का एक असल उद्देश्य है।

“ शिक्षक की भूमिका तर्क और चिन्तन का उपयोग करते हुए चर्चा को सही दिशा में ले जाना होती है। ”

इसी सन्दर्भ में, मैं अपने विद्यालय की दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं—कक्षा सभा और थाली की सफ़ाई एवं जाँच—को अच्छे अभ्यास के रूप में उजागर करना चाहता हूँ। यह प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों को एकजुटता की संस्कृति को समझने, विवाद के सकारात्मक समाधान का अभ्यास करने, ज़िम्मेदारी विकसित करने और आत्मानुशासन सीखने में मदद करती हैं।

कक्षा सभा प्रत्येक कक्षा में आयोजित की जाती है ताकि नियमों, विद्यार्थियों के मुद्दों और सांस्कृतिक मूल्यों पर चर्चा की जा

सके। कभी-कभी, सीनियर विद्यार्थियों को शिक्षक के मार्गदर्शन में छोटी कक्षाओं में चर्चा संचालित करने की ज़िम्मेदारी दी जाती है। इन चर्चाओं में अपनाया जाने वाला दृष्टिकोण लोकतांत्रिक होता है। प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेने और अपने विचार साझा करने का अवसर मिलता है। शिक्षक की भूमिका तर्क और चिन्तन का उपयोग करते हुए चर्चा को सही दिशा में ले जाना होती है।

मैं कक्षा 1 की कक्षा सभा की एक घटना साझा करना चाहता हूँ। सत्र के दौरान, दो विद्यार्थियों के बीच हुए विवाद पर चर्चा की गई। एक विद्यार्थी ने अपने मित्र को मारा था। जब शिक्षक ने विद्यार्थी से पूछा कि क्या उसने ऐसा किया है, तो उसने शुरुआत में इनकार कर दिया। हालाँकि, जब शिक्षक ने समझाया कि हर कोई गलतियाँ करता है और उन्हें स्वीकार करना विकास की ओर एक क़दम है, तब विद्यार्थी ने अपनी ग़लती मान ली। यह क्षण अपने-आप में ईमानदारी और जवाबदेही का एक पाठ बन गया।

इसके बाद शिक्षक ने बाकी विद्यार्थियों को आमंत्रित किया कि वे अपने विचार साझा करें कि इस स्थिति को कैसे सुलझाया जाना चाहिए। दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ सामने आईं। एक समूह ने सुझाव दिया कि मारने वाले विद्यार्थी को बदले में मारना चाहिए, जबकि दूसरे ने उसे मार्गदर्शन देने और सुधार का अवसर देने का प्रस्ताव रखा। बदले की भावना का विचार उन चीज़ों को दर्शाता है जो विद्यार्थियों ने अपने आस-पास देखी थीं, जहाँ बड़े अकसर ग़लत व्यवहार का जवाब सज़ा देकर देते हैं।

इस सोच को चुनौती देने के लिए, शिक्षक ने विद्यार्थियों के बीच कुछ चिन्तनशील प्रश्न पूछकर एक संवाद शुरू किया :

अगर हम उसे बदले में मारें तो क्या होगा?

क्या इससे उसका गुस्सा कम होगा या बढ़ेगा?

अगर आप उसकी जगह होते, तब क्या आप ऐसी सज़ा की उम्मीद करते?

इन प्रश्नों ने विद्यार्थियों को भावनात्मक प्रतिक्रिया देने की बजाय आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित किया। चर्चा से सामने आया कि प्रतिशोध स्थिति को और ख़राब कर सकता है, विद्यार्थी और ज़्यादा गुस्सैल हो सकता है, विद्यालय के बाहर फिर से बदला ले सकता है, और दोस्ती टूट सकती है। इससे उनके सीखने और सहयोग पर असर पड़ेगा। इस चिन्तन के माध्यम से विद्यार्थियों ने समझा कि पलटकर मारना कोई रचनात्मक समाधान नहीं है।

इसके बाद चर्चा दूसरे विकल्प की ओर मुड़ी। विद्यार्थियों ने सहमति जताई कि मारने वाले विद्यार्थी को माफ़ी माँगनी चाहिए, और सबके सामने वादा करना चाहिए कि वह इस व्यवहार को दोहराएगा नहीं। विद्यार्थी ने ऐसा किया। अपने दोस्त से माफ़ी माँगी और सही व्यवहार करने का संकल्प लिया। यह सार्वजनिक स्वीकारोक्ति थी। इसमें स्वीकार करने वाले के प्रति बाकी साथियों का प्रशंसा भाव था। यह बात विद्यार्थी को अपने



चित्र 2 : एक दूसरे को सुनते, सहमत-असहमत होते विद्यार्थी



चित्र 3 : थालियों की सफाई की जाँच-परख करते विद्यार्थी

कार्यों पर विचार करने में मददगार साबित हुई। इसने अन्य साथियों के सामने जवाबदेही के महत्त्व को भी मज़बूत किया।

बेशक, यह अनिश्चित है कि मारने वाला विद्यार्थी वास्तव में अपने व्यवहार में बदलाव लाएगा या नहीं। वह ग़लती दोहरा भी सकता है और नहीं भी। लेकिन महत्त्वपूर्ण पहलू उस प्रक्रिया में निहित है जिसका पालन विद्यालय में किया गया। व्यवहार में बदलाव आने में समय लगता है और सकारात्मक प्रोत्साहन से इसमें गति आती है। इसके अलावा, बाक़ी विद्यार्थी भी रचनात्मक दृष्टिकोण से निर्णय लेना सीखते हैं, जो सबसे महत्त्वपूर्ण सीख है। इस तरह की प्रक्रियाएँ सहानुभूति, समस्या समाधान और नैतिक तर्कशीलता के कौशल को विकसित करती हैं।

ये प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में मूल्यों और संस्कृति के विकास में मदद करती हैं, जो विद्यालय शिक्षा का एक आवश्यक हिस्सा है। उदाहरण के लिए, हमारे विद्यालय की मध्याह्न भोजन की प्रक्रिया में, विद्यार्थी और शिक्षक, दोनों भोजन परोसने, बैठने की व्यवस्था करने, और यह सुनिश्चित करने, कि सभी ठीक से खाएँ, जैसी ज़िम्मेदारियाँ साझा करते हैं। एक उल्लेखनीय प्रक्रिया यह भी विकसित की गई कि हर व्यक्ति दोपहर के भोजन के बाद अपनी थाली खुद साफ़ करता है। कुछ विद्यार्थियों को यह जाँचने की ज़िम्मेदारी दी जाती है कि थालियाँ ठीक से साफ़ हुई हैं या नहीं। यदि नहीं, तब उन्हें दुबारा साफ़ करने के लिए वापस कर दिया जाता है। यह ज़िम्मेदारी विद्यार्थियों के बीच बदलती रहती है ताकि कक्षा 5 से 11 तक के लगभग सभी विद्यार्थियों को यह भूमिका निभाने का अवसर मिल सके। यह नियम शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों पर समान रूप से लागू होता है। यदि किसी शिक्षक की थाली भी पूरी तरह साफ़ नहीं होती तब उसे वापस

कर दिया जाता है और शिक्षक सम्मानपूर्वक उसे फिर से साफ़ करते हैं।

यह दिनचर्या समानता और सम्मान के मूल्यों को दर्शाती है। भूमिकाओं या स्थिति की परवाह किए बिना, हर कोई निर्धारित प्रक्रियाओं में भाग लेता है। यह पारम्परिक मान्यताओं को भी चुनौती देती है—उदाहरण के लिए, घर पर थालियाँ साफ़ करना अकसर किसी माँ, किसी महिला या लड़कियों की ज़िम्मेदारी माना जाता है। साझा ज़िम्मेदारी का अभ्यास करके, हमारा विद्यालय निष्पक्षता, पारस्परिक सम्मान और इस विश्वास को बढ़ावा देता है कि सामुदायिक जीवन में इस तरह के पदानुक्रम (हायरार्की) का कोई स्थान नहीं है। यह इस विचार को मज़बूत करता है कि हम सभी समान हैं, और हमें सामूहिक ज़िम्मेदारी के नियमों का सामान्य तौर पर सम्मान करना चाहिए।

भोजन से परे, ऐसी ही प्रक्रियाएँ विद्यालय जीवन के अन्य पहलुओं में भी समाहित हैं। विद्यार्थी, शिक्षकों के साथ मिलकर स्वच्छता बनाए रखने, शिक्षण सामग्री को व्यवस्थित करने और समूह गतिविधियों में साथियों का सहयोग करने जैसी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं। यह दिनचर्या स्वामित्व की भावना, टीमवर्क और ज़िम्मेदारी को विकसित करती है। यह विद्यार्थियों को व्यापक प्रश्नों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करती है। मसलन, हमारे पर्यावरण को स्वस्थ रखने की ज़िम्मेदारी किसकी है; हमारे कार्य दूसरों को कैसे प्रभावित करते हैं; आदि। ऐसे चिन्तन विद्यार्थियों को रोज़मर्रा के कार्यों को सहयोग और सामाजिक ज़िम्मेदारी जैसे बड़े मूल्यों से जोड़ने में मदद करते हैं।



विद्यार्थी, शिक्षकों के साथ मिलकर स्वच्छता बनाए रखने, शिक्षण सामग्री को व्यवस्थित करने और समूह गतिविधियों में साथियों का सहयोग करने जैसी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं।



मूल रूप से, ये प्रक्रियाएँ केवल दिनचर्या नहीं हैं, बल्कि मूल्यों व विद्यालय संस्कृति के शक्तिशाली पाठ हैं। वे विद्यार्थियों को निष्पक्षता, सहानुभूति और सम्मान को आत्मसात करने में मदद करती हैं, जिससे वे ज़िम्मेदार व्यक्तियों के रूप में विकसित होते हैं। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है, सिर्फ़ शैक्षणिक उत्कृष्टता ही नहीं, बल्कि संस्कृति, मूल्यों और चरित्र का विकास भी।

अंग्रेज़ी से सम्पादकीय टीम द्वारा अनुवादित।



अर्धेन्दु शेखर दाश अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। उनकी गणित शिक्षण के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी कार्यशालाओं के आयोजन में अहम भूमिका रहती है। वे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों के लेखन कार्य से भी जुड़े रहे हैं।

सम्पर्क : arddhendu@azimpremjifoundation.org

रीडिंग कॉर्नर बना सभी विषयों को सीखने का कोना

ताहिरा खान

जब शिक्षक उद्देश्यों की स्पष्टता के साथ रीडिंग कॉर्नर की सहायता से विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना सिखाते हैं तब वे न सिर्फ भाषा सीखते हैं, वरन् विभिन्न पाठ्य विषयों से जुड़ी क्षमताओं का विकास भी कर रहे होते हैं। लेख में दर्ज अनुभव कुछ ऐसी ही प्रक्रियाओं को समझने में मदद करते हैं।



चित्र 1: स्कूल पुस्तकालय में तल्लीनता से बाल साहित्य पढ़ते विद्यार्थी

विद्यालयी शिक्षा में 'पढ़ना' केवल भाषा सीखने का माध्यम नहीं है, अपितु विद्यार्थी के समग्र विकास का आधार है। पढ़ने के मायने हैं—पढ़कर विचारों का बनना, अपने परिवेश को जानना, समाज और परिस्थितियों से सामंजस्य कर पाना, तर्क करना, सही-गलत का निर्णय ले पाना, मूल्यों का विकास कर पाना, आदि। इन क्षमताओं के विकास के लिए हम अलग-अलग पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से कार्य करते हैं। यह काम 'रीडिंग कॉर्नर' के माध्यम से अधिक सुगम तरीके से हो सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पठन संस्कृति के विकास और आधारभूत साक्षरता पर जोर है। इसके लिए 'रीडिंग कॉर्नर' का प्रावधान है। समझने की ज़रूरत है कि 'रीडिंग कॉर्नर' किताबों का कोना भर नहीं है, बल्कि सीखने की यात्रा का आकर्षक और प्रेरक अवसर है। जब विद्यार्थी विविध किस्म की किताबों से गुज़रता है तब उसके ज्ञान और समझ का दायरा बढ़ता है। बाल साहित्य के माध्यम से वह परिवेश और बाहरी दुनिया के जटिल मुद्दों को समझने का प्रयास करने लगता है। बाल साहित्य का सुनियोजित एक्सपोज़र उन्हें पाठ्यपुस्तक के सन्दर्भों को भी समझने में मदद करता है।



'रीडिंग कॉर्नर' किताबों का कोना भर नहीं है, बल्कि सीखने की यात्रा का आकर्षक और प्रेरक अवसर है।



उद्देश्य

- 'रीडिंग कॉर्नर' में नियमित रूप से 'पढ़ने की घण्टी' की व्यवस्था करना;
- विद्यार्थियों को अपनी पसन्द की कहानियाँ पढ़ने और चुनने की आज़ादी देना;
- कहानियों पर बातचीत और विद्यार्थियों को चर्चा के मौके देना;
- पढ़ी हुई कहानी को सुनाने और बातचीत के अवसर देना;
- बाल साहित्य के ज़रिए विद्यार्थियों को प्रवीण पाठक बनाना;
- 'रीडिंग कॉर्नर' के संचालन में विद्यार्थियों की सहभागिता बनाना; आदि।

पढ़ने का कोना / पुस्तकालय प्रबन्धन समिति

सत्र की शुरुआत में पुस्तकालय प्रबन्धन समिति से जुड़ी सारी तैयारी कर लेती हैं। जैसे—पंजिका निर्माण जिसमें किताबों का लेन-देन दर्ज हो सके; किताबों का स्तरीकरण और उनका बेहतर डिस्प्ले; सीखने के स्तर के आधार पर विद्यार्थियों के समूह बनाना; पुस्तकालय के सुचारु संचालन के लिए जिम्मेदारियाँ तय करना; किताबों को इस तरह व्यवस्थित करना कि सभी किताबें विद्यार्थियों की पहुँच में हों; बैठक व्यवस्था बनाना; आदि।

गणितीय अवधारणाओं पर काम

अंशुल ने अपनी पसन्द की एक किताब उठाई, और उसे कनिष्का को पढ़ाने लगा; "एक नन्हा बादल बीच गगन उड़ता आया।" कनिष्का भी किताब के चित्र देखकर बहुत खुश थी क्योंकि बहुत सुन्दर बादल बातें कर रहे थे। बादल थे 10, तो 1 से 10 तक गिनती भी दोहराई जा रही थी। जो किताब पढ़ी जा रही थी उसका शीर्षक था—*आओ गिनें बादल*। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों को सभी किताबों की गिनती करने के लिए कहा। उन्होंने इस तरह के आँकड़े पेश किए—

हिमांशु : मैम, पूरी किताबें 456 हैं।

नीलू : बुलबुल सीरीज़ की 125 हैं।

ऋतिका : बरखा सीरीज़ की 19 हैं।

सुनयना : अन्य किताबें 197 हैं।

सुरेश : गढ़वाली भाषा की 68 किताबें हैं।

आकाश : अँग्रेज़ी की 47 किताबें हैं।

मीनाक्षी : दो भाषाओं वाली 6 और बुलबुल अँग्रेज़ी की 17 हैं। 24 अन्य हैं।

नीरव : हिन्दी भाषा की सभी किताबें 409 हैं।

हमने रीडिंग कॉर्नर के डेटा का प्रयोग कक्षा 4 में अंकगणित की अवधारणा यथा स्मार्ट चार्ट और आँकड़ों के प्रदर्शन को समझने में किया। एक समूह को टेली चिह्न लगाकर टेबल बनाने, बार चार्ट में प्रदर्शित करने का काम दिया। दूसरे समूह से कहा कि 456 किताबों में से जितनी किताबें पढ़ी हैं, उन्हें प्रतिशत में बताएँ। कक्षा 2, 3 और 4 के विद्यार्थियों को जोड़, घटाव, गुणा, भाग, स्थानीय मान, आदि के प्रश्न दिए। जैसे—बताओ कि *बरखा सीरीज़* और *बुलबुल सीरीज़* की कितनी किताबें हैं; दोनों में कितना अन्तर है; आदि।

कक्षा 3 का हार्दिक एक किताब को ध्यान से देख रहा था। वह बोला, "मैंने भी चक्की देखी है जिसमें आटा पीसते हैं। मेरे घर पर दादी पीसती हैं। और घास काटने की मशीन भी है, और थाली, शीशा भी ऐसा ही गोल है।" वह गोल-गोल चीज़ों के बारे में बताने लगा। असल में, वह रेखागणित की पुस्तक *वृत्तों की दुनिया* देख रहा था। यहीं से वृत्तों के बारे में बात शुरू हुई। बात वस्तुओं से होती हुई ज्यामितीय आकृतियों—वृत्त, त्रिभुज, वर्ग, आयत, घन-घनाभ, शंकु—में अन्तर तक गई। फिर इसमें

परिमाणु, क्षेत्रफल तथा आयतन निकालना भी शामिल हो गया, यानी कक्षा 4 के पाठ्यक्रम पर चर्चा तक।

वृत्त की अवधारणा पर बात करते हुए वृत्त की परिधि, त्रिज्या और वृत्त बनाना सिखाना आसान हो गया। नीलेश और ऋतिक कुछ प्रश्नों में अटक रहे थे, और उदास-से थे। मैंने एक किताब का संवाद बोला, "डरना नहीं, बना लो मीत, तभी होगी गणित पर जीत।" यह सुनकर विद्यार्थियों के चेहरों पर मुस्कान आ गई। कहानी थी—*गणित के पंख*। यह कहानी विद्यार्थियों को बहुत अच्छी लगती है। विद्यार्थियों ने ठान लिया है कि गणित से डरेंगे नहीं।

पर्यावरण अध्ययन के मुद्दे

कक्षा 3, 4 और 5 के विद्यार्थियों से कहा, "सबसे अच्छी लगने वाली कविता सुनाओ।" विद्यार्थी खुश होकर गाने लगे। कविता की पंक्तियाँ कुछ ऊपर-नीचे थीं—

हलवा बढ़िया गाजर का

सब्जी खाऊँ हरी मटर की

सूप बनाऊँ जिसका चाहूँ

बन्दगोभी खाऊँ कच्ची-कच्ची

कक्षा 3 के विद्यार्थी मिलकर गा रहे थे, और बातें कर रहे थे। निर्भय बोला, "काश कोई बोलने वाला खरगोश मिल जाता!" अंकिता कह रही थी, "हाँ, मैं तो उससे ढेर सारी बातें करती, और गाजर भी ले लेती!" मैं उनकी बातें सुन रही थी। उनके लिए *बोलने वाला खरगोश* हैरान करने वाली बात थी। ऐसी ही हैरानी उन्हें *ऐलिस इन वंडरलैंड* पढ़कर हुई थी, जहाँ एक खरगोश बातें कर रहा है, गाना गा रहा है, और फुसफुसा रहा है। ऐसी कहानियों से कई कल्पनाएँ जन्म लेती हैं। कक्षा 3, 4 और 5 के पर्यावरण विषय के पाठ्यक्रम में 'भोजन' थीम है। समेकित शिक्षण प्रक्रिया के तहत इस कहानी पर चर्चा शुरू की। मैंने कहा, "कचरु खरगोश तो हलवा खाता है, आप लोग क्या-क्या खाते हो?" वे अपनी पसन्द के खाने बताने लगे। मैंने कहा, "एक थाली का चित्र बनाओ, उसमें लिखो कि आपको क्या पसन्द है।"



चित्र 2 : टीएलएम की मदद से विद्यार्थियों को बातचीत में शामिल करती शिक्षिका

सब विद्यार्थी लिखने लगे। कक्षा 1 के विद्यार्थियों के लिए शब्द लेखन का काम साथ में चल रहा था। वे अपनी पसन्द की खाने की चीजों के नाम कुछ तरह से लिख रहे थे।

हार्दिक : हलवा पूरी

अंकिता : दाल-चावल

मीता : सब्जी, दाल-रोटी

सुकेश : राजमा चावल

सुप्रिया : गोभी की सब्जी, दाल-रोटी

इस तरह खाने की लिस्ट तैयार हो गई। विद्यार्थियों से खाने के पोषक तत्वों और स्वस्थ शरीर के लिए ज़रूरी चीजों के बारे में चर्चा शुरू की। विद्यार्थियों को समझाया कि सन्तुलित भोजन क्या है। खाने में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, खनिज, लवण, आदि कितने ज़रूरी हैं। इसके बाद हमने मिड डे मील की थाली में इन्हें ढूँढ़ने का प्रयास किया। अब विद्यार्थी खुद बताते हैं कि आज उनकी थाली में क्या है और क्या नहीं। नीलू, ऋतिका, मनीषा और तनुजा ने सब्जियों से मिलने वाले पोषक तत्वों के बारे में जानकारी ली।

मैंने विद्यार्थियों को एक किताब दी—*सब्जियों वाले गमले*। इस किताब से विद्यार्थियों को सब्जियाँ खाने से होने वाले लाभ बताए। सब्जियों और फलों में कौन-से विटामिन मिलते हैं, इस पर बात की। जैसे—गाजर, पालक, पपीता और आम से विटामिन

ए मिलता है, और इसकी कमी से रतौंधी रोग हो जाता है। बीच में अंकिता बोली, "मेरी माँ और दादी खेत तैयार करती हैं।" विद्यार्थियों ने अपने अवलोकनों के आधार पर खेत बनाने, खाद डालने और बीज बोने का तरीका भी बताया। कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि उनके बाबा सुबह खेत से सब्जी लेकर मण्डी जाते हैं। कनिका ने बताया, "धनिया बोना आसान है। इस बार हमने बहुत सारा धनिया मण्डी में बेचा।"

"बीज कहाँ से लाते हो?" पूछने पर विद्यार्थियों ने बताया कि बीज फ़सल पकने पर बनाते हैं। अनाज के बीज बाज़ार से खरीदते हैं। इस दौरान विद्यार्थियों को एक कहानी याद आ गई—*एक था दाना अनजाना*। जब कहानी पर चर्चा हुई तब विद्यार्थियों ने बताया कि हम सोचते थे कि जंगलों में पेड़-पौधे कौन लगाता होगा, कौन खाद डालता होगा, बीज कहाँ से आते होंगे, यह कहानी पढ़कर सब समझ आ गया।

पशु-पक्षी, हवा-पानी, मधुमक्खी-चिड़िया सब बीज फैलाते हैं। चिड़िया अपनी चोंच से दाने ज़मीन में डाल देती है। बादल बारिश करते हैं। सब कितना मज़ेदार है न! सब एक दूसरे की मदद कर रहे हैं। प्रकाश ने बताया, "उसको सभी पात्रों में सबसे मज़ेदार 'अनजाना' लगा क्योंकि उस दाने को ये नहीं पता था कि वो कौन है। जब वो बड़ा हुआ तब मालूम हुआ कि वह बरगद है। उसके आकार-प्रकार को देखकर पहले कोई उसको प्यार नहीं करता था। अब वह सबको छाया देता है।"

ऐसी ही एक कहानी *अनोखा रिश्ता* पढ़कर विद्यार्थियों ने कहा कि हम भी अपने दादा-दादी के नाम से हर साल पेड़ लगाएँगे। उसकी ख़ूब देखभाल करेंगे क्योंकि पेड़ हमें छाया, लकड़ी, पत्ते और ऑक्सीजन देते हैं। वे हमारे मित्र हैं। 'दोस्त', 'प्यासी मैना', आदि कहानियों पर भी बात चली। ये कहानियाँ जल चक्र, पानी की आवश्यकता, जल संरक्षण पर चर्चा के अवसर देती हैं। *घर की खोज*, *घर और घर*, *भाग सनी भाग* और *बैम्बू हाउस* किताबों पर बातचीत से घर की आवश्यकता, घर के प्रकार, पक्षियों, जानवरों के घरों पर बातचीत हुई। बताया कि हाउसबोट, फ़्लैट, झोपड़ी, तम्बू, इग्लू, वृद्धाश्रम, अनाथालय, आदि सभी घर हैं। हमने घरों के मॉडल भी बनाए।

कहानी *अच्छा कौन* पर की गई बातचीत अच्छा-बुरा से आगे बढ़कर लिंगभेद तक गई। कक्षा 4 की खुशी ने बताया कि घर पर सब उसी को काम बताते हैं, पर भाई को नहीं। यह उसको अच्छा नहीं लगता। साक्षी ने बताया कि उसका भाई नहीं है तो बाबा और माँ दुःखी रहते हैं।

भाषा शिक्षण और रचनात्मक लेखन

मनीषा ने 'पढ़ने की घण्टी' में एक किताब *सारी दुनिया, प्यारी दुनिया* पढ़ी। इसे पढ़कर बोली, "मैम, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे ये लड़की मैं ही हूँ। जो वह कहती है न, वही मैं भी सोचती हूँ। मुझे भी बारिश पसन्द है, पर तूफ़ान नहीं। नदी पसन्द है, पर



चित्र 3 : विद्यार्थियों को पढ़ने के प्रयासों में मदद करती शिक्षिका

बाढ़ नहीं।" और इस तरह प्राकृतिक आपदाओं पर कक्षा 4 और 5 में बात हुई। कक्षा 1 की कनिष्का इस किताब के चित्रों को ध्यान से देख रही थी। मैंने कहा, "बताओ क्या-क्या देखा?" वो बोली, "लड़की, घर, मुर्गा, सूरज, पानी, कुआँ, पेड़, पत्ता, बारिश, नदी, पहाड़, बर्फ।" बहुत सारे शब्द उसने बता दिए। इस शब्द संसाधन के साथ भाषा की मुख्य दक्षताओं पर काम शुरू हो सकता था। फिर कक्षा 1 से इन सभी शब्दों को कॉपी पर लिखवाया और 'घर' शब्द पर चर्चा की।

कक्षा 2 के विद्यार्थियों से हर शब्द पर कॉन्सेप्ट मैप बनाने को कहा। घर का कॉन्सेप्ट मैप बनाते-बनाते बहुत सारे शब्द मिले। जैसे-घर, मकान, आँगन, कमरा, रसोई, चूल्हा, लकड़ी, फुकनी, चिमटा, तवा, चौका, पकाना, धोना, बेलन, चारपाई, बिस्तर, कुर्सी, मेज़, खिड़की, दरवाज़ा, दाल, तेल, कढ़ाई, भगोना, बिल्ली, बकरी, गोशाला, खेत, आदि। ये विद्यार्थियों के खुद के शब्द थे। शब्दों का एक पिटारा बन गया। इन्हीं शब्दों से कक्षा 2 और 3 में वाक्य बनाना, विलोम शब्द ढूँढ़ना, पर्यायवाची शब्द, शब्दों में सज़ा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण छाँटना जैसे अभ्यास कार्य करवाए। कक्षा 4 को इन्हीं में से अपनी पसन्द के किसान, बकरी, खेत, कुत्ता, घर जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहानी बनाने को कहा।

अगले दिन घर की खोज कहानी पर बातचीत की। कक्षा 4 के विद्यार्थियों को कहानी को अपने शब्दों में लिखने को कहा। कक्षा 5 को इसी कहानी के पात्रों से कोई नई कहानी लिखने को कहा। बरखा सीरीज़ की फूली रोटी, गोलगप्पे, मिली का गुब्बारा ऐसी कहानियाँ हैं जो शुरुआती लेखन में विद्यार्थियों के लिए काफ़ी उपयोगी हैं।

यदि विद्यार्थी कहानी लिखने लगे तो फिर वे समीक्षा करना, तुलना करना, पात्र बदलकर कहानी लिखना, कहानी के अन्त बदलना जैसी उच्च दक्षताओं का प्रयोग कर सकते हैं। यह काम पाठ्यक्रम में सहायक उपकरण (helping tool) के रूप में काम करता है। विद्यार्थी वायु किताब को बहुत ध्यान से देख रहे थे। उसमें एक बच्चा पंख लगाए उड़ रहा था। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों ने अनुमान लगाकर बताया कि ये लड़का अपनी माँ से बातें कर रहा है। वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता है। उसके कान के पास मच्छर भी आ रहे हैं। वहाँ कौवे भी हैं, और दादी

भी है। कहानी के चित्र इतने जीवन्त थे कि विद्यार्थियों को अपने परिवार के पात्र उनमें दिखाई दे रहे थे।

“ यदि शिक्षक को उद्देश्य की स्पष्टता है तब लक्ष्य प्राप्ति में उसे और विद्यार्थियों, दोनों को काफ़ी आनन्द आता है। ”

दादा-दादी, माँ, मक्खी, मेंढक, कौवा, मुर्गा, तितली, पानी, नाव, चाँद, तारे, आदि उनकी कल्पना में आने लगे। अनुमान लगाकर वे कहानी कहने लगे। इन्हीं शब्दों को बोर्ड पर लिखा, और विद्यार्थियों से कहा, "पढ़ो, और इन पर जो चित्र समझ आ रहा है, बनाओ।" विद्यार्थियों ने चित्रों के नाम हिन्दी में लिखे। मैंने इन्हें अँग्रेज़ी में भी लिख दिया। फिर कक्षा 2 और 3 को पक्षियों एवं जानवरों के नाम लिखवाए। अँग्रेज़ी पर काम करने के लिए अँग्रेज़ी शब्द भण्डार ज़रूरी है। जैसे-ग्रीट व्हेन यू मीट पढ़ाते हुए बोर्ड पर नए शब्द लिखते हुए बार-बार उन्हें पढ़वाया। फिर चित्रों पर बात करके अनुमान लगाने को कहा। कहानी को हिन्दी में भी सुनाया। पहले खुद रीडिंग की, फिर विद्यार्थियों से दोहराने को कहा। इस तरह बार-बार उच्चारित करवाया। यह काम धीरे-धीरे किया क्योंकि अँग्रेज़ी हमारे परिवेश की भाषा नहीं है। घर पर या परिवेश में अँग्रेज़ी का इस्तेमाल नहीं होता, इसलिए विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ अँग्रेज़ी पर ज़्यादा काम करने की आवश्यकता होती है।

पाठ्यपुस्तक पर काम करने से पहले जब अँग्रेज़ी बाल साहित्य पर काम करते हैं तब विद्यार्थियों को अधिक फ़ायदा होता है। कुछ किताबें जो मुझे अधिक उपयोगी लगती हैं उनमें डॉ. सिअस (Dr. Seuss) की किताबें मददगार हैं। कुछ अन्य किताबें हेल्पिंग हैण्डबुक, लिटिल सनशाइन, अप डाउन आदि हैं।

शिक्षक अवधारणा को समझाने के लिए बाल साहित्य जैसे उपयोगी संसाधनों को योजनाबद्ध तरीके से इस्तेमाल करें तब विद्यार्थियों का सीखना काफ़ी मज़ेदार हो जाता है। विद्यार्थियों के साथ सीखने के प्रतिफल एक दिन में अर्जित नहीं होते, इसके लिए धैर्य, रणनीति और योजना की ज़रूरत होती है। यदि शिक्षक को उद्देश्य की स्पष्टता है तब लक्ष्य प्राप्ति में उसे और विद्यार्थियों, दोनों को काफ़ी आनन्द आता है।



ताहिरा खान प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल, देहरादून, उत्तराखण्ड में शिक्षिका हैं। वे कक्षा में नवाचारों को लेकर हमेशा प्रयासरत रहती हैं। वे अपने नवाचारों के अनुभवों पर आधारित अपना रिसर्च पेपर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के सेमिनार में प्रस्तुत कर चुकी हैं।

सम्पर्क : tahirakhan14527@gmail.com

अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे? : तर्क और विज्ञान की यात्रा

अरविन्द कुमार सिंह

आनन्द विद्यार्थियों का एक स्वाभाविक गुण है। कहानी की सार्थकता आनन्द का स्रोत बनने में है। और, शिक्षा भी तभी सार्थक है जब वह आनन्द की अनुभूति का माध्यम बन सके। लेख में इन विचारों के तालमेल से कहानी का उपयोग करते हुए शिक्षण की ऐसी प्रक्रिया अपनाई गई है जिसमें विद्यार्थी आनन्द और रुचि के साथ सीखते हैं। इस दौरान वे सोचने-विचारने, तर्क करने, अनुमान लगाने और विज्ञान के सिद्धान्त को परखने के अवसर भी पाते हैं।

पिछले दिनों 'बस एक कहानी' गतिविधि के दौरान कक्षा में लेखक और चित्रकार इन्दु हरिकुमार की पुस्तक *अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?* पढ़ाने का अवसर मिला। मैं काफ़ी समय से कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को कहानी सुना रहा हूँ, लेकिन *पाठशाला भीतर और बाहर* के अंक 20 में दीपाली शुक्ला का लेख 'मैटी, बैठ जाओ! बैठ जाओ मैटी!' पढ़कर मेरी एक नई समझ विकसित हुई कि एक कहानी विद्यार्थियों को सीखने, समझने और सोचने के असीमित अवसर प्रदान करती है। *अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?* कहानी शिक्षण के दौरान कक्षा में की गई गतिविधि को हम आपके साथ साझा कर रहे हैं—

“

भाषा में शब्दकोश का कितना महत्व है, यह मुझे विद्यार्थियों के जवाब पढ़कर पता चल रहा है।

”

इस पुस्तक को पढ़ने से पहले मैंने विद्यार्थियों को इसका कवर पेज दिखाया जिस पर 'अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?' लिखा था। विद्यार्थियों से सवाल किया कि आपके विचार से यहाँ पर अप्पुकुट्टन क्या / कौन हो सकता है? चूँकि हम उत्तर भारत में रहते हैं, और अप्पुकुट्टन यहाँ पर आम चलन में आने वाला शब्द नहीं है इसलिए विद्यार्थी थोड़ी देर असमंजस में रहे। उन्हें फिर से शीर्षक पढ़ने को बोला। उन्हें समझाया कि आपको शीर्षक पढ़कर यह तो समझ आ रहा है न कि अप्पुकुट्टन कुछ तो ऐसा है जिसका हम वज़न कर सकते हैं, जिसे तौला जा सकता है। जिस प्रकार आप लोग किसी दुकान पर सामान लेने जाते हैं तब दुकानदार तराजू से तौलकर वस्तुएँ देता है। इसी तरीके से अप्पुकुट्टन भी ऐसा कुछ हो सकता है। विद्यार्थियों के जवाब कुछ इस तरह के थे—

देशराज : यह एक राजा होगा, नाम देखकर ऐसा ही लगता है।

आदर्श : आम होगा, हमने तो अपने मन से सोचकर लिखा है।

करिश्मा : तरबूज़ होगा क्योंकि उसे तौला जा सकता है।

सुनयना : कुट्टू का आटा (जो व्रत के दौरान खाया जाता है), अप्पुकुट्टन का नाम सुनकर मुझे ऐसा लगा।

मीनाक्षी : अप्पुकुट्टन एक आम होगा।

मानसी : अप्पुकुट्टन एक लड़का है।

कार्तिक : अप्पुकुट्टन एक सब्जी होगी जिसे तौला जा सकता है।

पल्लवी : अप्पुकुट्टन सन्तरा होगा क्योंकि वे तौले जा सकते हैं।

मालती : बन्दगोभी हो सकती है। अप्पुकुट्टन मुझे बन्दगोभी जैसा नाम लगा।

मिताक्षी : अप्पुकुट्टन हाथी होगा क्योंकि अप्पुकुट्टन का नाम हाथी के जैसा लगा।

भाषा में शब्दकोश का कितना महत्व है, यह मुझे विद्यार्थियों के जवाब पढ़कर पता चल रहा है। अप्पुकुट्टन दक्षिण भारत में प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। यह उत्तर भारत के विद्यार्थियों के लिए यह बिल्कुल नया शब्द है। विद्यार्थियों के जवाब अनुमान और तर्क पर आधारित हैं। एक विद्यार्थी ने अप्पुकुट्टन को कुट्टू का आटा बताया है जो व्रत के दौरान खाया जाता है। एक विद्यार्थी ने अप्पुकुट्टन शब्द की वर्ण संरचना के आधार पर यह अनुमान लगाया कि जैसे बन्दगोभी में बहुत सारी परतें होती हैं उसी प्रकार अप्पुकुट्टन भी कुछ ऐसी ही अजीब-सी चीज़ होगी। कुछ विद्यार्थियों के जवाब का आधार आम, सन्तरा, तरबूज़ जैसी



चित्र 1 : प्रयोग के माध्यम से हाथी को तौलने का तरीका समझते विद्यार्थी

वस्तुएँ थीं जो तौली जा सकती हैं। इसी प्रकार, एक विद्यार्थी ने थोड़ा और सोचकर यह अनुमान लगाया कि अप्पुकुट्टन एक हाथी होगा। यदि कहानी में अप्पुकुट्टन के स्थान पर शेरू, टॉमी, कालू, भूरा होता तो सम्भवतः सभी विद्यार्थी यह अनुमान लगाते कि यह एक कुत्ता होगा। यदि कहानी में अप्पुकुट्टन के स्थान पर सोहन, राजुल, देशराज, कार्तिक होता तो सभी विद्यार्थी अनुमान लगाते कि यह एक लड़का होगा। किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित शब्द किसी विद्यार्थी के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं, यहाँ स्पष्ट हो रहा था।

फिर मैंने विद्यार्थियों को कहानी का पहला हिस्सा सुनाया—

कहानी है यह एक खास राज्य की। एक खुशहाल और सम्पन्न राज्य की। जवाबों की दुनिया की...

जहाँ सवाल आया नहीं कि लोग जवाब ढूँढ़ने में जुट जाते थे। कोई भी सवाल छूट न पाता।

लेकिन एक दिन एक सवाल ऐसा आया कि उसने खलबली मचा दी।

लोग थमे, बाल नोचे। बहुत सिर खुजलाया। और सोचा, "अब इसे कैसे सुलझाएँ?"

हुआ यह कि सबसे छोटा राजकुमार अप्पुकुट्टन को नाश्ता करा रहा था।

उधर अप्पुकुट्टन लज़ीज़ नाश्ता गड़पने में लगे थे, इधर नन्हे राजकुमार के दिमाग में एक कीड़ा कुलबुलाया। उसका सवाल था बड़ा सरल। वह जानना चाहता था,

"अप्पुकुट्टन का वज़न कितना है?"

कहानी का इतना हिस्सा सुनाने के बाद विद्यार्थियों से सवाल किया, "तुम्हारे विचार से यहाँ पर अप्पुकुट्टन क्या/कौन हो सकता है?" इस बार नई जानकारी के आधार पर उनके जवाब थे—

देशराज : अप्पुकुट्टन हाथी होगा क्योंकि उसको खाना खिलाया जाता होगा।

आदर्श : वह गाँव का प्रधान हो सकता है। अपने मन से सोचकर लिख दिया।

करिश्मा : एक हाथी हो सकता है क्योंकि हाथी खाना खा सकता है।

सुनयना : कोई लड़का होगा। अप्पुकुट्टन के बारे में मैंने पहले ही सोच लिया था।

मानसी : अप्पुकुट्टन मुझे बिल्ली लगती है।

पल्लवी : अप्पुकुट्टन मोर होगा क्योंकि मोर खाना खा सकता है।

सुधांशु : अप्पुकुट्टन भैंस हो सकती है। भैंस का वज़न भी ज़्यादा होता है, और वह खाना भी खा लेती है।

प्रभा : अप्पुकुट्टन एक बिल्ली हो सकती है। नाम कुछ वैसा लग रहा है।



चित्र 2 : तौलने की गतिविधि के दौरान सोचते, सवाल पूछते विद्यार्थी

मालती : अप्पुकुट्टन एक कौवा हो सकता है क्योंकि कौवा खाना खाता है।

इस बार के अनुमान सूचना-आधारित थे। अप्पुकुट्टन उनके लिए बेशक नया शब्द था, लेकिन वे इस बार यह समझ पा रहे थे कि अप्पुकुट्टन कुछ ऐसा है जो खाना खा सकता है, और उसका वज़न भी है। इसी आधार पर वे अनुमान लगा रहे थे कि अप्पुकुट्टन पशु, पक्षी अथवा मनुष्य हो सकता है।

फिर विद्यार्थियों को कहानी का अगला भाग सुनाया गया—सवाल सुनकर नौकर-चाकरों का सिर चकराया। उन्होंने कहा,

"यह तो कोई आसान काम नहीं!"

जल्द ही यह सवाल राज दरबार से निकलकर घरों, सड़कों, खेतों और मैदानों में पहुँचा। देखते-ही-देखते लोगों के दिमाग में एक ही सवाल था, "अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?" "क्या तराजू नहीं थे उनके पास?"

"उन्होंने तौल मशीन पर खड़ा कर अप्पुकुट्टन का वज़न क्यों नहीं लिया?"

तराजू तो थे। बल्कि खास तराजू बनाए भी गए, पर...

कुछ अप्पू के लिए छोटे पड़ गए।

कुछ उसके पैर रखते ही टूट गए।

कहानी का अगला अंश सुनाने के बाद फिर से पूछा, "अब बताओ अप्पुकुट्टन क्या होगा?" इस बार विद्यार्थी नई जानकारी के आधार पर जवाब देने वाले थे—

देशराज : हाथी होगा।

आदर्श : हाथी राजा।

करिश्मा : एक हाथी होगा।

सुनयना : अप्पुकुट्टन कोई पत्थर होगा।

मीनाक्षी : अप्पुकुट्टन मुझे लगा कि एक भारी हाथी होगा।

मानसी : अप्पुकुट्टन एक हाथी होगा।

पल्लवी : अप्पुकुट्टन हाथी होगा।

सुधांशु : हाथी हो सकता है।

प्रभा : अप्पुकुट्टन एक भालू हो सकता है।

मालती : एक पत्थर होगा।

“**कहानी की मुख्य पात्र 'मीनू' कोई और नहीं, हमारी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी ही हैं जो अपनी समझ से उस सवाल का जवाब ढूँढ़ते हैं। बस, हमको उस राज्य के राजा की भाँति उन्हें सोचने, समझने और जवाब देने के पर्याप्त मौक़े देने होते हैं।**”

इस बार विद्यार्थियों को एक नई सूचना प्राप्त हुई थी कि अप्पुकुट्टन कुछ ऐसी चीज़ है जो बहुत भारी है, जिसके पैर रखते ही तराजू टूट गया। इस आधार पर विद्यार्थियों ने जो सबसे भारी जानवर आज तक देखा है, उन्होंने अपने जवाब के रूप में चुन लिया—हाथी। कुछ विद्यार्थियों ने पुरानी सूचना को, कि वह खाना खा लेता है, भुलाकर इस आधार पर, कि पैर रखते ही तराजू टूट गया, अपना नया जवाब पत्थर बताया। अब विद्यार्थियों को कहानी का अगला अंश सुनाया गया—

कुछ और को देखकर लोगों ने कहा, "अब अप्पुकुट्टन को कैसे तौलें?"

तुम समझ ही गए होंगे कि यहाँ बात एक हाथी की हो रही है। और हाथी भी कोई ऐसा-वैसा नहीं, एक सम्पन्न राज्य का शाही हाथी।

और इसी तरह शाही हाथी का वज़न शाही चिन्ता का विषय बन गया।

यहाँ मैंने विद्यार्थियों से पूछा, "तुम्हारे विचार से अप्पुकुट्टन को कैसे तौल सकते हैं?" सभी विद्यार्थियों ने एक-सा जवाब दिया, "तराजू या काँटे से तौल सकते हैं।" जैसा कि हम जानते हैं, विद्यार्थी दुकान से अपने घर का सामान लाते हैं, और उन्होंने वहाँ तराजू देखी है। इसके अलावा, वे कभी-कभी अपने माता-पिता के साथ अनाज बेचने जाते हैं जहाँ उन्होंने बड़े-बड़े काँटे देखे हैं। इन काँटों पर उनके अनाज की बुगियाँ तौली जाती हैं। इसलिए उन्होंने अपने अनुमान में केवल दो ही चीज़ बताई हैं—तराजू या काँटे से अप्पुकुट्टन को तौल सकते हैं।

विद्यार्थियों को कहानी का और आगे का हिस्सा सुनाया गया—

तब नन्ही मीनू को एक ख़्याल आया। "अरे, यह तो बड़ा आसान है," उसने सोचा और चल दी दरबार की ओर।

राजा ने सुना। सुना और सोचा। सोचा और कहा,

"इस बच्ची के आदेशों का पालन किया जाए। हाथी तुले न तुले, पर बच्ची की सूझ-बूझ, वाह भाई वाह!"

सभी चल दिए नदी की ओर—मीनू, दरबारी और अप्पुकुट्टन।

अप्पू को एक नाव में खड़ा किया गया।

देखते-देखते नाव डूबने लगी। और... और... और...।

जब नाव ठहरी तो मीनू ने वहाँ निशान लगा दिया जहाँ तक नाव नदी में डूबी हुई थी।

अप्पू को नाव से उतारा गया।

फिर नाव में ईंटें रखी गईं। ईंटें बढ़ती गईं और नाव फिर डूबने लगी, और... और... और...।

जब पानी नाव पर लगे निशान तक पहुँचा तो मीनू चिल्लाई, "बस, बस। अब और ईंटें न रखें।"

फिर ईंटें तौली गईं। बस, इस तरह पता लगा अप्पुकुट्टन का वज़न। पता है, कितना भारी था वह!

5,000 किलो...

पूरे 5,000 किलो!

कहानी के अन्तिम पड़ाव में आप देख पा रहे हैं कि हाथी को किस प्रकार से तौला गया? जब यह कहानी विद्यार्थियों को सुना दी तब उनसे जानना चाहा कि आप लोग समझ पा रहे हैं कि हाथी का वज़न नाव की मदद से कैसे पता किया गया होगा? तब विद्यार्थियों ने मेरी खुशी के लिए 'हाँ' में गर्दन हिला दी। शिक्षक होने के नाते मैं समझ पा रहा था कि कक्षा 3 के विद्यार्थी यह बात नहीं समझ पाए होंगे कि हाथी के वज़न को नाव की मदद से भी तौल सकते हैं। इसके लिए मुझे अपने बचपन में पढ़े हुए एक वैज्ञानिक आर्किमिडीज़ के सिद्धान्त की याद आई। उसके बाद मैंने उन्हें 'प्यासा कौवा' कहानी सुनाई। किस प्रकार प्यासा कौवा घड़े में पत्थर डालकर पानी के तल को ऊपर लाकर अपनी प्यास बुझाता है। इसके बाद उन्हें आर्किमिडीज़ के सिद्धान्त पर आधारित कुछ प्रयोग करके दिखाए। विद्यार्थियों ने कई सवाल किए। उन्हें यह बात समझ में आ गई कि किस प्रकार नाव की मदद से हाथी का वज़न तौला गया होगा।

इस पुस्तक के कवर पेज के मध्य में लिखा है—'अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?' और उसके चारों ओर व्यक्ति उस सवाल की ओर देख रहे हैं। वास्तव में, यदि देखा जाए तो हमारी कक्षाओं में भी ऐसा ही होता है। जब हम कोई सवाल पूछते हैं तो सभी विद्यार्थी सवाल पूछने वाले की ओर देखते हैं। यह पुस्तक किसी राज्य की कहानी न होकर हमारी कक्षाओं की कहानी—सी लगती है।

हमारी कक्षाओं में भी ऐसा ही होता है। जब कोई सवाल आता है तो सारे विद्यार्थी उस सवाल का जवाब ढूँढ़ने में लग जाते

हैं। अप्पुकुट्टन कोई हाथी नहीं, अपितु हर रोज़ आने वाला वह सवाल है जिसका जवाब अधिकांश विद्यार्थियों को नहीं पता होता। कहानी की मुख्य पात्र 'मीनू' कोई और नहीं, हमारी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी ही हैं जो अपनी समझ से उस सवाल का जवाब ढूँढ़ते हैं। बस, हमको उस राज्य के राजा की भाँति उन्हें सोचने, समझने और जवाब देने के पर्याप्त मौक़े देने होते हैं। *अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?* कहानी के बारे में सोचते हुए

विद्यार्थी शुरुआत से ही उससे खुशी के साथ जुड़े रहते हैं। हर हिस्से को सुनने के बाद उनकी रुचि कहानी में बढ़ती ही जाती है। आमतौर पर कक्षा शिक्षण में किसी कहानी को केवल विद्यार्थियों को आनन्द देने व उनमें रुचि जाग्रत करने के लिए ही पढ़ाया जाता है, लेकिन यह कहानी विद्यार्थियों को सीखने-सिखाने के बहुत सारे अवसर देती है, साथ ही उन्हें अनुमान, तर्क और विज्ञान की यात्रा पर ले जाती है।



अरविन्द कुमार सिंह प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश में 9 वर्षों से अध्यापन कर रहे हैं। उन्हें उत्कृष्ट शैक्षणिक नवाचारों के लिए 'राष्ट्रीय नवाचारी शिक्षा रत्न सम्मान 2023-24' से सम्मानित किया गया है। उनके सहयोग से विद्यार्थी तीन वर्षों से *उड़ान* दीवार पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं।

सम्पर्क : arv.kiet2011@gmail.com

इस बार दिसम्बर विशेषांक की थीम है

अंग्रेज़ी शिक्षण : चुनौतियाँ व प्रयास

विशेषांक के लिए शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों
के अनुभवों पर आधारित आलेख
आमंत्रित हैं।

लेख भेजने की अन्तिम तिथि है

30 अगस्त 2026

कृपया आलेख भेजें

pathshala@apu.edu.in

स्थानीय मान समझने का एक चरणबद्ध तरीका

अभय कुमार

स्थानीय मान संख्याओं को समझने की नींव है। इससे विद्यार्थी यह समझ पाते हैं कि किसी अंक का स्थान ही उसका मान तय करता है। प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थी स्थानीय मान को केवल प्रतीकों के रूप में नहीं, बल्कि संख्याओं को व्यवस्थित और अर्थपूर्ण मात्रा के रूप में देखने व समझने की क्षमता भी अर्जित करने लगते हैं। यह लेख स्थानीय मान सिखाने के क्रमबद्ध तरीकों को प्रस्तुत करता है।

विद्यार्थी 1 से 100 तक धाराप्रवाह गिनती तो कर सकते हैं, लेकिन अकसर वे यह नहीं समझ पाते कि संख्या 45 में, अंक 4 का मतलब 40 होता है, सिर्फ 4 नहीं। और इसकी शुरुआत कक्षा 2 से होती है। मैंने कक्षा 2 के विद्यार्थियों के साथ इस अवधारणा पर काम किया जिसमें मुख्य रूप से 2 अंकों की संख्याओं का उपयोग किया गया। इसे सिखाने में कुछ समय लग सकता है; लेकिन फिर भी यह ज़रूरी है क्योंकि यह गणितीय संक्रियाओं को समझने में बहुत मदद करता है।

इसके अतिरिक्त, यह विद्यार्थियों को संख्याओं को उनके स्थान (इकाई, दहाई, सैकड़ा) के अनुसार व्यवस्थित करने और हासिल लेने (carrying forward) या हासिल घटाने (carrying backwards) की प्रक्रियाओं को सही ढंग से करने में सक्षम बनाता है।

शुरुआत कैसे की ?

मैंने स्थानीय मान पढ़ाना तब शुरू किया जब सभी विद्यार्थी 20 तक गिनती सीख चुके थे। इस विषय को पढ़ाने के लिए दो अलग-अलग पाठ योजनाएँ बनाई क्योंकि कक्षा में तीन अलग-अलग स्तरों के विद्यार्थी थे : L1 (तेज़ गति से सीखने वाले), L2 (मध्यम गति से सीखने वाले), और L3 (जिन्हें सीखने के लिए ज़्यादा समय और ध्यान की ज़रूरत होती है)। पहले पाठ के अन्त तक, L1 और L2 के विद्यार्थियों ने 'इकाई' और 'दहाई' की अवधारणा को समझ लिया था; और जैसे ही सवाल में थोड़ा-बहुत बदलाव किया तो वे अन्दाज़ा लगाकर जवाब देने लगे।

शुरुआती चुनौतियाँ

इस प्रक्रिया को अमल में लाते समय, सीखने के अलग-अलग स्तरों वाले विद्यार्थियों से जुड़ी कई चुनौतियाँ सामने आईं। उदाहरण के लिए—

विद्यार्थियों को अंकों को उलटा लिखने में भ्रम होता था। जैसे— 54 और 45 जैसी संख्याओं में अंकों की अदला-बदली करना, 36 को 63 लिखना, 7 जैसे किसी एक अंक को शीशे में दिखने जैसा लिखना (mirror-writing)।

शून्य को एक स्थानधारक (placeholder) के तौर पर इस्तेमाल करने की अवधारणा लगभग सभी विद्यार्थियों को मुश्किल लगती

थी। खासकर, उन संख्याओं को समझने में जिनके अन्त में शून्य आता है, और जिनके इकाई के स्थान पर कोई मान नहीं होता।

- संख्याओं को पहचानने में भी स्पष्ट रूप से कुछ सीमाएँ थीं। कुछ विद्यार्थियों को 25 से आगे गिनने में कठिनाई हो रही थी (L3 के लिए), जबकि कुछ को 50 (L2 के लिए) या 70 (L1 के लिए) से आगे गिनने में परेशानी हो रही थी। इससे सीखने के स्तरों में विविधता साफ़ दिखाई दे रही थी।
- अनियमित उपस्थिति के कारण सीखने की प्रक्रिया में रुकावटें आईं, और विद्यार्थी पहले से सीखे गए कौशल भी भूल गए। उदाहरण के तौर पर, किसी समूहीकृत सेट से आगे की गिनती जारी रखना।
- जब शिक्षण अधिगम सामग्री में बदलाव किया जाता था तब विद्यार्थियों को उस नई सामग्री के साथ तालमेल बैठाने में भी मुश्किल होती थी। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता था कि वे कुछ विशेष प्रकार की सामग्रियों पर ही बहुत निर्भर रहते थे। मिसाल के तौर पर, वे मोतियों की माला जैसी सामग्री का उपयोग तो सहजता से कर लेते थे, लेकिन 'डाइन्स ब्लॉक्स' जैसे दूसरे विकल्पों का इस्तेमाल कम करते थे।
- जवाब देने की जल्दबाज़ी, किसी बात को लेकर भ्रम, और ठोस समझ से अमूर्त समझ की ओर बढ़ने में धीमी गति जैसी समस्याएँ भी सामने आईं।

कक्षा में आने वाली चुनौतियों का सामना

पढ़ाने के दौरान ELPS, यानी अनुभव (Experience), भाषा (Language), चित्र (Pictures) और प्रतीक (Symbols) के चरणों का प्रभावी ढंग से पालन किया गया। इसका मकसद यह था कि सीखने वाले हर स्तर के विद्यार्थी को मदद मिल सके। हालाँकि, कई बार ये तरीके एक साथ भी चलते थे। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को कक्षा में सिखाई जा रही चीज़ों को अच्छी तरह से समझने में मदद करने के लिए, कक्षा में की जा रही गतिविधियों के आधार पर ही उन्हें चित्रों के रूप में (जैसे वर्कशीट) होमवर्क दिया जाता था।

अनुभव

विद्यार्थियों को एक वर्कशीट दी जो पूरी तरह से बिन्दुओं (dots)

से भरी हुई थी। उनका काम यह था कि जितने हो सकें उतने समूह बनाएँ। उन्हें अलग-अलग संख्याओं के समूह बनाने थे, जैसे कि दो, पाँच, आठ, और अन्त में दस के समूह। समूह बनाने की प्रक्रिया में वे ऊँची आवाज़ में पढ़ते भी रहे, और गिनती भी करते रहे। इस अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया, और यह देखने को मिला कि वे अलग-अलग तरीकों से और अपने अनोखे ढंग से समूह बना रहे थे।



चित्र 1: वर्कशीट पर बिन्दुओं के समूह बनाता विद्यार्थी



चित्र 2: तीलियों की मदद से इकाई-दहाई की अवधारणा समझते विद्यार्थी

इसके बाद, हर विद्यार्थी को 10 से ज़्यादा तीलियाँ दीं, और उनसे कहा कि वे :

1. रबर बैंड का इस्तेमाल करके तीलियों के 10-10 के बण्डल बनाएँ।
2. बची हुई खुली तीलियों को अलग कर दें।
3. बण्डलों की संख्या (1, 2, आदि) लिखें और उसके ठीक बग़ल में खुली तीलियों की संख्या लिखें।

इस दौरान, मैंने इकाई और दहाई शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया। यह गतिविधि अलग-अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के साथ की गई, और इसमें प्रत्येक विद्यार्थी को अलग-अलग संख्या में तीलियाँ दी गईं। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी को 17 तीलियाँ, दूसरे को 34 और तीसरे विद्यार्थी को 67 तीलियाँ दी गईं। इन संख्याओं के आधार पर, विद्यार्थियों ने तीलियों को समूहों और खुली इकाइयों में बाँटकर उनसे जुड़ी संख्याएँ बनाईं। यह अभ्यास विद्यार्थियों को दी गई संख्या की वास्तविक मात्रा के बारे में एक ठोस समझ विकसित करने में मदद करता है। इस प्रकार समूहीकरण स्थानीय मान प्रणाली का सबसे बुनियादी सिद्धान्त है क्योंकि इससे बड़ी संख्याओं को समझना आसान हो जाता है—चाहे वे दो अंकों की संख्याएँ हों या तीन अंकों की।

फिर मैंने विद्यार्थियों से कहा कि वे 10 हरे और 10 गुलाबी मोतियों का इस्तेमाल करके बारी-बारी से 10-10 के समूह बनाएँ। पिछली गतिविधि का फ़ायदा यह हुआ कि विद्यार्थियों को हर मोती को अलग-अलग नहीं गिनना पड़ा। उदाहरण के लिए, यदि उन्हें 48 तक गिनना था तो वे हरे मोतियों का उपयोग करके 10 तक गिन सकते थे, और उसके बाद गुलाबी मोतियों का उपयोग करके फिर से 10 तक गिन सकते थे। अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल करने से यह प्रक्रिया आसान लगी—वे आसानी से 40 तक पहुँच सकते थे, और फिर उन्हें केवल बचे हुए 8 मोतियों को गिनना होता था। इस तरीके से यह पता लगाने में भी मदद मिली कि विद्यार्थियों में संख्याओं को पहचानने की क्षमता है या नहीं।



चित्र 3: रंगीन मोतियों के समूहों का इस्तेमाल करके गिनना सीखता विद्यार्थी

भाषा

अनुभव पर आधारित अधिगम से भाषा विकास की ओर बढ़ने के लिए, मैंने विद्यार्थियों को एक कविता सिखाई जिसे उन्होंने हाव-भाव और उँगलियों के इशारों के साथ सुनाया। वह कविता कुछ इस तरह थी :

इकाई करती 1 की बात,

दहाई बोले 10 की बात।

10 इकाई मिलकर बनती एक दहाई,

गिनती करना अब आया भाई

इस छोटी-सी कविता की मदद से विद्यार्थी समूह बनाने की प्रक्रिया को समझ पाए। इस कविता का सार यह था कि इकाई के बिना दहाई का कोई अस्तित्व नहीं है।

बँधी हुई और खुली तीलियों से बनी संख्याओं की सहायता से मैंने इकाई और दहाई शब्दों का इस्तेमाल शुरू किया। उसी गतिविधि को फिर से दोहराया, लेकिन इस बार दो कपों का उपयोग किया। एक कप पर इकाई और दूसरे पर दहाई का लेबल लगाया। फिर उसी गतिविधि को दोहराते हुए बँधी हुई तीलियों को दहाई वाले कप में और खुली हुई तीलियों को इकाई वाले कप में रखा। इस प्रक्रिया के दौरान, यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि स्थानीय मान प्रणाली की बारीकियों पर भी चर्चा की जाए। विशेष रूप से, ऐसे उदाहरणों पर ध्यान दिया जाए, जैसे—34 और 43, 22 और 55 (जिनमें कुछ विशिष्ट अंक हों), और 70 (जिन संख्याओं के अन्त में शून्य हो)। विद्यार्थी न केवल इन अवधारणाओं को समझ रहे थे, बल्कि कई तरह के सवाल भी पूछ रहे थे। एक सवाल यह था कि अगर हम इकाई वाले कप में 13 तीलियाँ डाल दें, तो क्या होगा। इस सवाल का जवाब देने के बजाय उन्हें वही गतिविधि फिर से करने के लिए कहा जो उन्होंने अभी-अभी खुद की थी। ऐसा करके उन्हें खुद ही उस सवाल का जवाब ढूँढ़ने में मदद मिली : "अगर 10 का एक समूह बन जाता है तो 3 तीलियाँ खुली रह जाएँगी।"

चित्र



चित्र 4 : स्थानीय मान की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए गोलों में रखे कंकड़
(एआई के सहयोग से बना चित्र)

इसी बीच, मैंने देखा कि L2 और L3 स्तर के विद्यार्थी अभी भी पिछड़ रहे हैं। वे समूह में तो सवालों के जवाब दे पा रहे थे, लेकिन अकेले नहीं। इसलिए मैंने उनके लिए एक गतिविधि तैयार की। मैंने ज़मीन पर एक बड़े गोले के अन्दर दूसरा थोड़ा छोटा गोला बनाया, यानी संकेन्द्री वृत्त बनाए (चित्र 4)। इन दो गोलों में से, अन्दर वाला गोला इकाई के अंक के लिए था और बाहर वाला दहाई के अंक के लिए था। अन्दर वाले गोले में जितने कंकड़ थे उनकी संख्या इकाई के स्थान पर लिखी जाती

थी, और बाहर वाले गोले में जितने कंकड़ थे उनकी संख्या दहाई के स्थान पर लिखी जाती थी। इस खेल को थोड़ा और मुश्किल बनाने के लिए, मैंने सभी विद्यार्थियों से कहा कि जब मैं अलग-अलग गोलों में अलग-अलग संख्या में कंकड़ रखूँ, तब वे उन संख्याओं को अपनी-अपनी नोटबुक में लिखें। इस गतिविधि के दौरान, कई सवाल पूछे गए जिनसे उनकी समझ और पुख्ता हुई। जैसे—

- अगर इकाई के स्थान वाला अंक दहाई के स्थान पर चला जाए और दहाई वाला अंक इकाई के स्थान पर चला जाए तो कौन-सी संख्या बनेगी? इन दोनों में से कौन-सी संख्या बड़ी होगी और कौन-सी छोटी?
- इस तरह से बनी संख्या में कितने समूह होंगे और कितनी खुली तीलियाँ होंगी?
- अगर अन्दर वाले घेरे में कोई कंकड़ न हो या दोनों घेरों में कंकड़ों की संख्या बराबर हो तो कौन-सी संख्या बनेगी?

इन गतिविधियों को पूरा करने के बाद, L1 और L2 के विद्यार्थियों की इस विषय पर एक मज़बूत अवधारणात्मक समझ बन गई थी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि इन अभ्यासों के साथ-साथ उन्होंने ऐसी वर्कशीट पर भी काम किया था जिनमें चित्रों का इस्तेमाल किया गया था। विशेष रूप से, डिब्बों के सेट से संख्याएँ बनाना, और इसके विपरीत, दिए गए अंकों को चित्रों के रूप में दिखाना। इस प्रक्रिया से वे समूहों और अलग-अलग खुले डिब्बे के बीच के अन्तर को स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम हुए। हालाँकि, मैंने L3 के विद्यार्थियों को इस गतिविधि में शामिल नहीं किया, क्योंकि वे अभी इसके लिए तैयार नहीं थे। इस दौरान, मैंने इसी गतिविधि के माध्यम से L2 और L3 के विद्यार्थियों को संख्याओं के विस्तारित रूप (expanded forms) से भी परिचित कराया। उदाहरण के लिए, 34 संख्या बनाने के लिए दहाई की 3 छड़ें और इकाई के 4 क्यूब (घनाकार टुकड़ों) का इस्तेमाल करना।

चिन्तन

ब्लैकबोर्ड पर 34 जैसी एक संख्या लिखकर शुरुआत की, और विद्यार्थियों से कहा कि वे इस संख्या को अपने पहले के सीखे हुए ज्ञान से जोड़कर देखें। इस गतिविधि को करने के लिए उन्हें दस-दस के समूह बनाने थे, और अलग-अलग तीलियों की पहचान करनी थी। इसके बाद, उन्हें संख्या को व्यवस्थित करके दो कॉलम (इकाई का कॉलम और दहाई का कॉलम) में दर्शाना था। अलग-अलग संख्याओं के साथ अभ्यास करके विद्यार्थी अपनी ठोस समझ और चित्रात्मक समझ को उसके अंकीय या प्रतीकात्मक रूप से जोड़ने में सक्षम हो पाए। इसके बाद, विद्यार्थियों को समझाया कि किसी अंक का स्थान ही उसका मान तय करता है। 34 और 43 जैसे उदाहरणों का इस्तेमाल करके उन्हें दिखाया कि कैसे एक ही अंक अपनी जगह के आधार पर अलग-अलग मान दिखा सकते हैं। उनकी अवधारणात्मक स्पष्टता को और भी अच्छे से विकसित करने

के लिए विद्यार्थियों को संख्याओं को इस तरह पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया—3 दहाई और 4 इकाई।

“

**यह ज़रूरी लगता है कि
गणितीय संक्रियाएँ सिखाते
समय भी स्थानीय मान की
अवधारणा पर लगातार जोर देते
रहें, इसे बार-बार दोहराते रहें,
और समय-समय पर इसका
उल्लेख करते रहें।**

”

इसके बाद, विद्यार्थियों को संख्या के 'विस्तारित रूप' से परिचित कराया। जैसे— $34 = 30 + 4$ । और एक बार फिर इसके अर्थ को पक्का करने के लिए इसे तीलियों के बण्डलों से जोड़ा। मैंने 40 और 70 जैसी संख्याओं को भी शामिल किया ताकि 'शून्य' की भूमिका को एक 'स्थानधारक' के रूप में समझाया जा सके। उनकी सीख को मज़बूत करने के लिए उन्हें छोटे-छोटे अभ्यास कार्य दिए जिनमें विद्यार्थियों ने दहाई और इकाई की पहचान की संख्याएँ बनाई, और उन्हें उनके विस्तारित रूप में लिखा।

आकलन

आकलन के लिए सिर्फ़ वर्कशीट ही नहीं, बल्कि दो अलग-अलग गतिविधियाँ भी तैयार कीं। एक में तय संख्याओं को 'स्थानीय मान बोर्ड' पर दिखाना था, और दूसरी में एक चार्ट पेपर का इस्तेमाल करना था जिस पर तारे और गोले बने थे। यहाँ तारे 'इकाई' को और गोले 'दहाई' को दर्शा रहे थे। इसे करने के लिए, दो अलग-अलग आकार के गोल छल्ले काटे गए ताकि बनने वाली संख्याओं में विविधता बनी रहे। एक छल्ले के अन्दर मौजूद तारों और गोलों की संख्या के आधार पर विद्यार्थियों ने इकाई और दहाई के अंकों को पहचानकर एक संख्या बनाई। अन्त में विद्यार्थी न सिर्फ़ संख्याएँ बना पा रहे थे, 'स्थानीय मान प्रणाली' की बारीकियों को भी समझने लगे थे। उनसे संख्याओं के पैटर्न को बदलने के बारे में भी सवाल पूछे। जैसे—

1. 4 दहाई और 5 इकाई, कितने बने दीदी?
2. 5 इकाई और 4 दहाई, कितने बने भाई?

'स्थानीय मान प्रणाली' उन शुरुआती अवधारणाओं में से एक है जिनमें विद्यार्थियों को बहुत गहराई से सोच-विचार करने की ज़रूरत पड़ती है। यह ज़रूरी लगता है कि गणितीय संक्रियाएँ सिखाते समय भी स्थानीय मान की अवधारणा पर लगातार जोर देते रहें, इसे बार-बार दोहराते रहें, और समय-समय पर इसका उल्लेख करते रहें।

अँज़ेजी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।



अभय कुमार अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर, राजस्थान में कार्यरत हैं। पिछले कुछ महीनों से वह राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, देशलानियों की ढाणी में दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों को गणित और आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान पढ़ा रहे हैं।

सम्पर्क : abhay.kumar@azimpremjifoundation.org

रीडिंग कॉर्नर के ज़रिए बोलने के कौशल को बेहतर करना

अंशिका शर्मा

जब विद्यार्थी कम उम्र में पढ़ना शुरू कर देते हैं तो उनके मन में जीवन भर के लिए सीखने का जुनून पैदा होता है। किताबें पढ़ने से उन्हें बेहतर तरीके से सोचने, अपनी कल्पना का उपयोग करने और तर्कशील क्षमताओं का विकास करने में भी मदद मिलती है। जब विद्यार्थियों के पास रीडिंग कॉर्नर होता है तब उनका बोलने, पढ़ने और समझने की ओर उनका सफ़र आसान होता है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया में चार परस्पर सम्बन्धित कौशल होते हैं : सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। रीडिंग कॉर्नर एक ऐसा मज़ेदार स्थान है जहाँ विद्यार्थी तरह-तरह की किताबों का आनन्द ले सकते हैं, जो उन्होंने पढ़ा है उसके बारे में बात कर सकते हैं, और अपने विचार साझा कर सकते हैं।

- जब मैं अपनी पहली कक्षा के सीखने के प्रतिफलों का आकलन कर रही थी, मुझे पता चला कि विद्यार्थियों के बोलने के कौशल पर ध्यान देना कितना ज़रूरी है। इन प्रतिफलों ने निम्नलिखित बातों के महत्त्व पर ज़ोर दिया :
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रभावी ढंग से संवाद करना। जैसे—कविताएँ पढ़ना, कहानियाँ सुनाना, व्यक्तिगत अनुभव साझा करना, आदि;
- विषयवस्तु से जुड़ने के लिए चर्चा में शामिल होना, अपनी राय देना और प्रश्न पूछना;
- चित्रों के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं के बारीक अवलोकन करना;
- किसी दिए गए सन्दर्भ में घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को समझना व उनकी सराहना करना; आदि।



चित्र 1 : मिल-जुलकर साथ पढ़ते और एक दूसरे से सीखते विद्यार्थी

बोलने के कौशल को विकसित करने के लिए, हमारी कक्षा की गतिविधियों में पहले से ही पोस्टर और कविताओं पर बातचीत करना शामिल था। लेकिन हमें लगा कि विद्यार्थियों को चित्रों और पाठ्य सामग्री के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता है। इसलिए हमने एक रीडिंग कॉर्नर बनाने का निर्णय लिया जहाँ विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें चुन सकें; अपने लिए प्रासंगिक विषयों की पहचान कर सकें; और चर्चाओं एवं बातचीत के माध्यम से अपने बोलने के कौशल को बेहतर बना सकें।

रीडिंग कॉर्नर स्थापित करने की प्रक्रिया

रीडिंग कॉर्नर बनाने के लिए मैंने अपनी योजना कक्षा शिक्षिका के साथ साझा की। साथ मिलकर हमने एक रचनात्मक समाधान निकाला। उन्होंने अपने घर से जूट के थैले लाकर दिए। समुदाय के एक सदस्य ने इन थैलों में पुस्तकें रखने के लिए छोटी जेबें बनाकर उन्हें एक अनोखा रूप दिया। हमने इसका नाम 'हमारा पुस्तकालय' रखा।

लगभग 20 दिनों में रीडिंग कॉर्नर तैयार हो गया, और तब मैंने ध्यान दिया कि थैले की डिज़ाइन की वजह से विद्यार्थी किताबों के कवर, यानी मुखपृष्ठ नहीं देख पा रहे थे। इसे सुधारने के लिए हमने किताबों के प्रदर्शन के लिए एक नया तरीका अपनाया। इस तरीके में हमने किताबों को दीवार पर लगे एक तार पर लटका दिया जिसके नीचे थोड़ा-सा सहारा दिया गया था। किताबों की प्रस्तुति के इस नए तरीके से पुस्तकालय में किताबें अच्छी तरह से नज़र आ रही थीं, और आकर्षक भी लग रही थीं। इस प्रकार 'करके सीखने' से कई फ़ायदे सामने आए :

- अब विद्यार्थी किताबों को आसानी से उलट-पलटकर देख सकते थे। इससे उनमें जिज्ञासा और उत्साह की भावना जागी।
- पहले मुखपृष्ठ छिपे हुए थे, लेकिन अब वे बड़े आकर्षक लग रहे थे।
- इस नए तरीके से विद्यार्थियों को किताबों के साथ जुड़ने में बहुत मदद मिली। इससे अब वे किताबों को पढ़ने और उन्हें समझने के लिए प्रोत्साहित हुए।



चित्र 2 : रीडिंग कॉर्नर में किताबों की नए तरीके से प्रस्तुति

किताबों के साथ विद्यार्थियों का जुड़ाव

पहली कक्षा के विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए मैंने रीडिंग कॉर्नर के लिए स्तर-1 की किताबें चुनीं। जैसे-*बारात*, *रेलगाड़ी चले छुक-छुक*, *घर और घर*, आदि। इन किताबों में एक-एक वाक्य और आकर्षक चित्र थे। विद्यार्थियों को इन चित्रों की मदद से व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़कर पूरी किताब पढ़ने का अवसर मिला।

पढ़ने की अवधि के दौरान एक बालिका दिव्यन्ती ने *बरखा* शृंखला से *कूदती जुराबें* पढ़ी और अपने अवलोकन साझा किए, "मैंने तालाब देखा, पानी था उसमें, मेंढक था, बहुत सारे पेड़ थे उसमें, मोज़े बिना पैर के भाग रहे थे।"

जब मैंने पूछा कि क्या उसने कभी मोज़ों को चलते हुए देखा है तो उसने एक पल के लिए कुछ सोचा और फिर जवाब दिया, "दीदी! मोज़े कभी-कभी हवा से उड़ जाते हैं। मैंने उन्हें हवा से उड़ते हुए देखा है।" उसकी इस रचनात्मक सोच से मुझे बहुत खुशी हुई।

बाद में, एक अन्य विद्यार्थी, महेश ने उसी शृंखला की किताब *जीत की पीपनी* पढ़ी। जब वह चित्रों से कहानी को पढ़ रहा था तब उससे कहानी का सारांश बताने को कहा। उसने जवाब दिया, "अभी आधी पढ़ी है और आधी ही बताऊंगा।" यह पल मेरे लिए खुशी से भरा हुआ था, क्योंकि मुझे यह महसूस हुआ कि विद्यार्थी मेरे साथ अपने विचार साझा करने में उतना ही सहज महसूस करते हैं, जितना वे अपने माता-पिता के साथ करते हैं।

अब मेरी नज़र एक ऐसी किताब पर पड़ी जिसमें एक बैग की तस्वीर थी, और उस बैग से कई चीज़ें गिर रही थीं। तब मैंने महेश से पूछा कि वह अपने बैग में क्या-क्या लाता है। उसने बताया, "स्लेट, सीस, बेर, कंचे, टॉफ़ी, टिफ़िन।" फिर उसने कहा, "इस किताब में तो विद्यार्थी विद्यालय में पंख भी लाते हैं।" इस बात ने मुझे भाषाविद स्टीवन पिंकर के शब्द याद दिला दिए, "भाषा कोई सांस्कृतिक कलाकृति नहीं है जिसे हम उसी तरह सीखते हों जैसे हम समय बताना सीखते हैं, या जिस तरह संघीय सरकार काम करती है। यह तो हमारे मस्तिष्क

की जैविक संरचना का एक विशेष हिस्सा है।" जन्मजात भाषा क्षमता और भाषा को ग्रहण करने के संज्ञानात्मक पहलुओं पर नोम चोम्स्की के सिद्धान्त भी दिमाग में आए जो विद्यार्थियों द्वारा भाषा को प्रोसेस करने और समझने के उल्लेखनीय तरीकों पर प्रकाश डालते हैं (भाषा सीखी नहीं जाती, पकड़ी जाती है)।

किताबों ने रचनात्मकता और कल्पना को जगाया

शुरु में तो मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को पढ़ने देना और भाषा विकास को बढ़ावा देना था। लेकिन समय के साथ मैंने देखा कि विद्यार्थियों ने किताबों का महत्त्व, सावधानी से उनकी साज-सँभाल करना, उन्हें वापस अपनी जगह पर रखना, ध्यानपूर्वक उनका प्रयोग करना, आदि समझना भी शुरू कर दिया है।

जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, मैंने उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति में उल्लेखनीय बदलाव देखा। पहले जब उनसे अपनी पसन्द की किसी चीज़ का चित्र बनाने के लिए कहा जाता था तो वे सिर्फ़ झण्डों (जो पहले उनके चित्रों का एक रूढ़ विषय हुआ करता था) के चित्र बनाते थे, लेकिन अब वे *बरखा* की किताबों में देखे हुए जीवन्त दृश्य बनाते हैं। इनमें मेंढक, मोज़े, कप, बर्तन, तोते, आदि के चित्र होते हैं। एक दिन दीपाली ने एक घर, एक पेड़ और एक लड़की का चित्र बनाया। जब मैंने उससे लड़की के बारे में पूछा तो उसने मुस्कुराते हुए कहा, "यह बबीता है।" बबीता हमारे रीडिंग कॉर्नर में रखी हुई एक किताब की पात्र थी। रहमान ने एक छोटे लड़के का चित्र बनाया और जब उससे लड़के का नाम पूछा, उसने कहा, "जमाल", जो रीडिंग कॉर्नर में रखी एक किताब का एक पात्र है।

इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि हालाँकि मेरा उद्देश्य विद्यार्थियों के बोलने का कौशल बढ़ाना था, लेकिन इसका प्रभाव इससे



चित्र 3 : किताब पढ़ते हुए दिव्यन्ती



चित्र 4 : दीपाली ने किताब की एक पात्र बबीता का चित्र बनाया

कहीं ज़्यादा हुआ था। रीडिंग कॉर्नर ने न केवल विद्यार्थियों की सोच, कल्पना और लेखन क्षमताओं को प्रभावित किया था, बल्कि यह कहानियों और विचारों की दुनिया के साथ मज़बूत जुड़ाव का ज़रिया भी बन गया था।

विद्यार्थियों ने किताबों के पात्रों और दृश्यों को अपनी कल्पना में शामिल करना शुरू कर दिया, कक्षा में उनका चित्रण किया, उन पर चर्चा की, और अपने बनाए हुए पात्रों को अपनी पढ़ी हुई कहानियों के पात्रों का नाम भी दिया। इससे न केवल उनकी कल्पनाशील और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिला, बल्कि ऐसे तरह-तरह के दृश्यों और दृष्टिकोणों के बारे में भी उनकी जानकारी बढ़ी जिनके बारे में उन्हें कोई अनुभव नहीं था।

“**रीडिंग कॉर्नर ने न केवल विद्यार्थियों की सोच, कल्पना और लेखन क्षमताओं को प्रभावित किया था, बल्कि यह कहानियों और विचारों की दुनिया के साथ मज़बूत जुड़ाव का ज़रिया भी बन गया था।**”

इसके अलावा, रीडिंग कॉर्नर ने विद्यार्थियों में यह समझ पैदा की कि किताबें उन्हें नई दुनिया में ले जा सकती हैं, और उन्हें किताबों के पन्नों से खोज करने व यात्रा करने का मौक़ा मिलता है। इससे पढ़ने में उनकी रुचि बढ़ी क्योंकि उन्होंने कहानियों से सीखने की खुशी का अनुभव किया।

इसका प्रभाव बहुत गहरा था। रीडिंग कॉर्नर की कहानियाँ पूरे विद्यालय में, अलग-अलग कक्षाओं में, और यहाँ तक कि हमारे विद्यार्थियों के घरों में भी गूँजने लगीं। ऐसा लगा जैसे किताबें जी उठी हों, और मैं खुद को यह कहने से नहीं रोक पाई कि “किताबें बोल उठीं, किताबें बोलने लगी हैं!”

अँज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।



अंशिका शर्मा मध्य प्रदेश के सागर ज़िले के राहतगढ़ ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ी हैं। उन्हें बाल साहित्य पढ़ना एवं उसके बारे में अपने विचार लिखना पसन्द है।

सम्पर्क : anshika.sharma@azimpremjifoundation.org

फ़ाउण्डेशनल स्टेज पर पढ़ना सिखाने की कुछ असरदार रणनीतियाँ

आकाश शांडिल्य

शिक्षकों के लिए यह जानना ज़रूरी है कि विद्यार्थी पढ़ना कैसे सीखते हैं। खासकर तब, जब उनका ध्यान 'बुनियादी साक्षरता' (Foundational Literacy) पर हो। इस लेख में (माध्यम भाषा) (R1i) और दूसरी भाषा (R2i) के विद्यार्थियों में पढ़ने की कुशलता विकसित करने के लिए कुछ प्रभावी रणनीतियों को पहचानने का प्रयास किया गया है। इस उद्देश्य के लिए लेखक ने दो शिक्षिकाओं की शिक्षण विधियों का विश्लेषण किया है—एक हिन्दी पढ़ाती हैं और दूसरी अँग्रेज़ी। ये दोनों शिक्षिकाएँ अपने विद्यार्थियों को बुनियादी स्तर पर पढ़ना सिखाने में कामयाब रही हैं।

लेख में दो खास शिक्षिकाओं द्वारा अपनाए गए तरीके बताए गए हैं, लेकिन इस तरह के प्रयास अन्य कक्षाओं में भी देखे जा सकते हैं जहाँ विद्यार्थी कम उम्र में ही पढ़ना और लिखना सीख जाते हैं। R1 और R2 में उनके द्वारा अपनाए गए तरीकों का प्रभाव, अलग-अलग भाषाओं पर काम कर रहे अन्य शिक्षकों के तरीकों के बीच समानता और अन्तर जानने से पता चलता है।

“ शिक्षिका विद्यार्थियों के पढ़ने के तरीकों पर बारीकी से ध्यान देती हैं। जहाँ विद्यार्थियों को परेशानी होती है, शिक्षिका उनकी सहायता करती हैं। वे उन्हें किताब और वर्कबुक में दिए गए छोटे-छोटे शब्द और वाक्यांशों का लेखन अभ्यास भी कराती हैं जिससे उनकी लेखन क्षमता का विकास होता है।

जिनका अभी नामांकन नहीं है, लेकिन रोज़ विद्यालय आते हैं और उन्होंने छोटे-छोटे गद्यांशों को पढ़ना सीख लिया है। जब मैंने इस बारे में शिक्षिका से बात की, और देखा कि उन्होंने इन विद्यार्थियों को पढ़ना कैसे सिखाया, तब कक्षा में कुछ खास तरीके और प्रक्रियाएँ देखने को मिलीं। शिक्षिका ने जो क़दम उठाए, उनसे कक्षा 1 के विद्यार्थियों को हिन्दी में छोटे-छोटे गद्यांश पढ़ने में मदद मिली।

मौखिक काम से शुरुआत

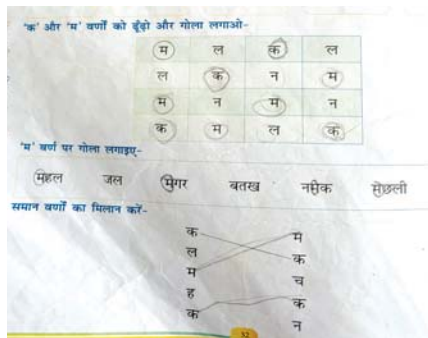
जब विद्यार्थी विद्यालय आना शुरू करते हैं तब पहले कुछ महीने शिक्षिका उनके साथ रोज़मर्रा के जीवन के बारे में हिन्दी में बातचीत करती हैं। इसके अलावा, वे उन्हें आसान कविताएँ और कहानियाँ सुनने-सुनाने में भी शामिल करती हैं। बोलचाल की भाषा में काम शुरू करने से विद्यार्थी हिन्दी भाषा के साथ सहज होने लगते हैं। एक महीने में, वे इन आसान कविताओं को याद कर सुनाने भी लग जाते हैं।

वर्णों से परिचय

लगभग एक महीने बाद, शिक्षिका विद्यार्थियों का परिचय वर्णमाला से कराती हैं। वे उनसे सभी वर्ण एक साथ लिखवाती व बुलवाती हैं, और उनका ध्यान कुछ खास वर्णों की ध्वनियों तथा आकृतियों पर भी दिलाती हैं। इसके लिए वे मुख्य रूप से पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यासों का इस्तेमाल करती हैं।

केस स्टडी 1 : R1 (हिन्दी) की पढ़ाई

इस विद्यालय की कक्षा 1 में 7 विद्यार्थी हैं। इनमें 5 विद्यार्थी पढ़ सकते हैं। इसके अलावा, 2 प्री-प्राइमरी के बच्चे भी हैं



चित्र 1: विशिष्ट अक्षरों और ध्वनियों पर आधारित अभ्यास

तप	डर	जग	कब	पल	अदरक	बरतन	तरकश
रख	गप	चढ़	जब	फल	थरमस	पनघट	बचपन
नल	तल	मन	अब	उस	जगमग	अनबन	खटपट
यज्ञ	घन	छल	दस	छत	डगमग	अड़चन	नटखट
डर	पढ़	खत	कप	एक	अनशन	जमघट	अमरस
बग	पर	बल	दल	तब	गरदन	दशरथ	उपवन

चित्र 2 : ध्वनियों को जोड़कर शब्द बनाने का अभ्यास करने के लिए लर्निंग किट

जब विद्यार्थी अक्षरों और उनसे जुड़ी ध्वनियों से अच्छी तरह से परिचित हो जाते हैं तब शिक्षिका उन्हें इन ध्वनियों को एक साथ मिलाने और आसान शब्दों को पढ़ने का अभ्यास कराती हैं। इसके लिए वे दीवार पर लगाई गई 'गतिविधि-आधारित अधिगम' किट में मौजूद सहायक सामग्री का उपयोग करती हैं। यह सामग्री विद्यार्थियों को दृश्य रूप से सीखने में मदद करती है। (चित्र 2)

वे विद्यार्थियों को टीएलएम का उपयोग करके मात्राओं से भी परिचित कराती हैं, और उनका ध्यान मात्राओं की बनावट तथा उनसे निकलने वाली ध्वनियों की तरफ आकर्षित करती हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि शिक्षिका 'आ' (I) की मात्रा के बारे में सिखा रही हैं तो वह उस विशेष मात्रा से जुड़े शब्दों का अभ्यास कराती हैं, और विद्यार्थियों को 'आ' की मात्रा की बनावट पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। वह उसी मात्रा से सम्बन्धित कई शब्दों का अभ्यास कराती हैं ताकि ध्वनि और प्रतीक के बीच के सम्बन्ध को और सघन बनाया जा सके।

इस अभ्यास के साथ ही, शिक्षिका विद्यार्थियों से बारी-बारी से पढ़ने के लिए भी कहती हैं ताकि वे ध्वनियों को प्रतीकों (मात्राओं) के साथ जोड़कर पढ़ने में माहिर हो जाएँ। वे उन मात्राओं या अक्षरों पर भी ध्यान देती रहती हैं जो बार-बार आते हैं। ऐसी मात्राओं की भी पहचान करती हैं जिन्हें पढ़ने में विद्यार्थियों को कठिनाई महसूस होती है।

पढ़ने का अभ्यास

जब विद्यार्थी अक्षरों, मात्राओं और उनसे बनने वाली ध्वनियों की अच्छी समझ विकसित कर लेते हैं और उन ध्वनियों को आपस में मिलाकर शब्दों को पढ़ने में सक्षम हो जाते हैं, तब उन्हें छोटे-छोटे गद्यांशों को खुद से पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता

है। शिक्षिका विद्यार्थियों के पढ़ने के तरीकों पर बारीकी से ध्यान देती हैं। जहाँ विद्यार्थियों को परेशानी होती है, शिक्षिका उनकी सहायता करती हैं। वे उन्हें किताब और वर्कबुक में दिए गए छोटे-छोटे शब्द और वाक्यांशों का लेखन अभ्यास भी कराती हैं जिससे उनकी लेखन क्षमता का विकास होता है। विद्यार्थियों को पढ़ने के स्तर के अनुसार किताबें चुनने और पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कुछ चयनित किताबें कक्षा में भी रखी जाती हैं ताकि विद्यार्थी उन्हें अपनी सुविधानुसार आसानी से पढ़ सकें।

- ये आवाजें किसकी? सही शब्द चुनकर लिखिए-
बादल, बिजली, बूँदें, मेंढक, कीचड़, चलते

1. गड़-गड़-गड़ : बादल गरते
2. कड़-कड़-कड़ : बिजलीकिड़के

चित्र 3 : पाठ्यपुस्तक में दिए गए लिखने के शुरुआती अभ्यास

केस स्टडी 2 : R2 (अंग्रेजी) की पढ़ाई

शिक्षिका ने अगस्त में अपना कार्यभार सँभाला था। उस समय कक्षा के कुछ ही विद्यार्थी वर्णमाला के कुछ अक्षरों की पहचान करने में सक्षम थे। उनमें से कोई भी अक्षरों और उनकी ध्वनियों को आपस में जोड़कर नहीं पढ़ पाता था। अगले सात महीनों

में शिक्षिका ने कुछ विशेष प्रक्रियाओं और विधियों का पालन किया जिनके परिणामस्वरूप विद्यार्थी धीरे-धीरे पढ़ना सीखने में सफल रहे। ये सभी प्रक्रियाएँ एक निश्चित क्रम की बजाय, ज़्यादातर एक साथ ही चल रही थीं। कक्षा में नियमित आने वाले 9 विद्यार्थियों में से 7 अब छोटे-छोटे व्यंजन-स्वर-व्यंजन (CVC) गद्यांश आसानी से पढ़ पा रहे हैं।

“ विद्यार्थियों के लिए पूरे पाठ को एक ही बार में पढ़ना और समझ पाना सम्भव नहीं था, इसलिए शुरुआत में पढ़ने की समझ विकसित करने के बदले, शिक्षिका ने कुछ विशेष शब्दों, वाक्यांशों और अक्षरों की ध्वनियों पर अधिक बल दिया। ”

थीम-आधारित योजना

शिक्षिका पाठ्यपुस्तक में मौजूद किसी एक विशेष विषय या थीम से सम्बन्धित कहानियों और कविताओं को समझाती हैं। इस प्रक्रिया में वे अंग्रेज़ी भाषा के कुछ विशेष शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग करती हैं, तथा सुनिश्चित करती हैं कि दिक्कत होने पर विद्यार्थी अपनी मातृभाषा का सहारा ले सकते हैं। वे हाव-भाव और इशारों का भी प्रयोग करती हैं जिनसे उन्हें विषय को समझने में और आसानी होती है। पाठ्यपुस्तक सामग्री के साथ-साथ, शिक्षिका ने कई अन्य गतिविधियों को भी शामिल किया है। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी के विशेष शब्दों और वाक्यांशों से परिचित कराना, उनकी समझ को विकसित करना, और इनका सही सन्दर्भ में उपयोग करना सिखाना है। उन्होंने धीरे-धीरे 'डिकोडिंग' के कौशल पर भी काम किया।

कविताओं, अभिवादनों और निर्देशों के माध्यम से मौखिक रूप से जानकारी देना

शुरुआती दौर में, शिक्षिका ने पाठ्यपुस्तक की किसी एक थीम पर आधारित शिक्षण योजना बनाई। उन्होंने थीम से जुड़ी बहुत सारी कविताओं, अभिवादनों और अंग्रेज़ी में दिए जाने वाले निर्देशों पर विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियों के लिए पूरे पाठ को एक ही बार में पढ़ना और समझ पाना सम्भव नहीं था, इसलिए

शुरुआत में पढ़ने की समझ विकसित करने के बदले, शिक्षिका ने कुछ विशेष शब्दों, वाक्यांशों और अक्षरों की ध्वनियों पर अधिक बल दिया। लक्ष्य था कि विद्यार्थी इन विशिष्ट शब्दों और वाक्यांशों को पढ़ना, लिखना, समझना और बोलना सीख जाएँ। इन विषयों से सम्बन्धित अंग्रेज़ी के बुनियादी शब्द, यानी क्रिया शब्द, शरीर के अंगों के नाम, दिनों के नाम, आदि, कक्षा की प्रतिदिन की बातचीत में नियमित रूप से इस्तेमाल किए जाते थे। इस अभ्यास से विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी में आवश्यक मौखिक शब्दावली विकसित करने में सहायता मिली।



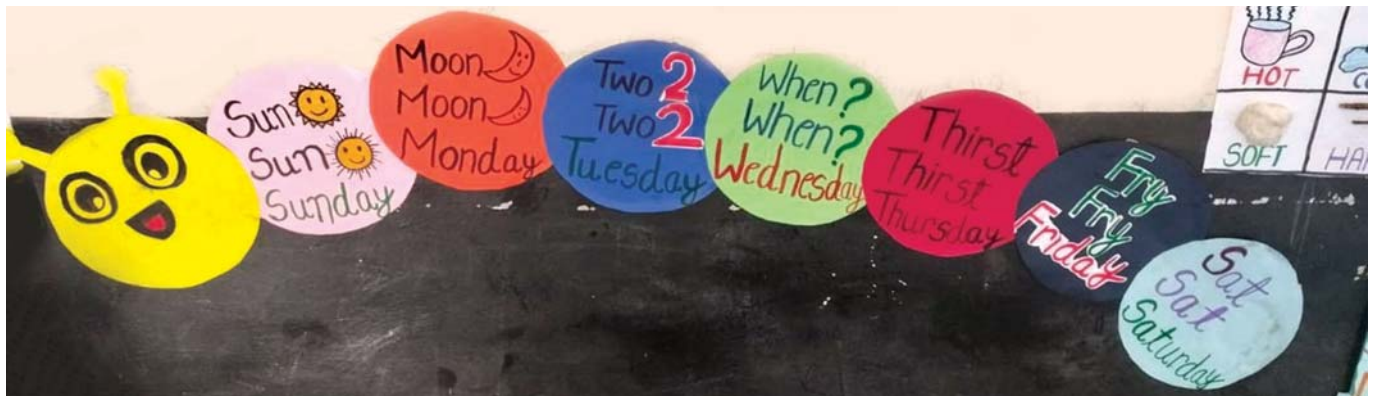
चित्र 4 : कक्षा में प्रदर्शित कुछ सामान्य निर्देश और अभिवादन

प्रिंट और दृश्य पठन

शिक्षिका ने कक्षा की दीवारों पर विद्यार्थियों के 'दृश्य पठन' (sight reading) के लिए सामान्य 'दृश्य शब्द' (sight words), नाम चार्ट, कक्षा की चीज़ों के लेबल और प्रश्नवाचक शब्दों वाला एक चार्ट भी प्रदर्शित किया। विद्यार्थियों को नियमित रूप से इन शब्दों / वाक्यांशों को पढ़ने और अपनी नोटबुक में उतारने / लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

अक्षर और उसकी ध्वनि के बीच का सम्बन्ध विकसित करना

हर हफ्ते तीन से चार अक्षर लिए जाते थे, और हर अक्षर के साथ कुछ बुनियादी शब्द (मसलन, b से bus, ball, bat और bag) सिखाए जाते थे। विद्यार्थियों का ध्यान अक्षरों की ध्वनि पर केन्द्रित करने के लिए विभिन्न तरीक़े अपनाए गए। इनमें पहली ध्वनि की पहचान करना, उस ध्वनि से शुरू होने वाले अन्य शब्दों की एक सूची बनाना, और पहले अक्षर पर विशेष



चित्र 5 : कक्षा में दृश्य शब्द



चित्र 6 : अक्षर-ध्वनि मेल और व्यंजन स्वर व्यंजन (CVC) शब्द समूहों का अभ्यास

रूप से ध्यान देना शामिल था। विद्यार्थियों ने उन दृश्य शब्दों के ज़रिए भी अक्षर और उसकी ध्वनि के बीच के सम्बन्ध को समझा जो उन्होंने सीखे थे। इनमें से कुछ शब्द उन कविताओं / कहानियों से भी लिए गए थे जो उन्हें सुनाई और समझाई गई थीं। शिक्षिका के अनुसार, कुछ अक्षरों की ध्वनि पर चर्चा करने के बाद, विद्यार्थी अक्सर दूसरे अक्षरों की ध्वनि खुद ही पहचान लेते थे। उदाहरण के लिए, वे अनुमान लगा सकते हैं कि अक्षर 't' की ध्वनि /t/ होती है।

शब्दावली कोना बनाना

जैसे-जैसे नए अक्षर सिखाए गए, जैसे-वैसे एक 'शब्दावली कोना' (vocabulary corner) भी बनाया गया। इसमें सभी अक्षरों से जुड़े शब्द शामिल थे। कक्षा में शब्दावली से सम्बन्धित अन्य लिखित सामग्री के अलावा, इस कोने ने विद्यार्थियों की उन शब्दों को दोहराने में मदद की जो उन्होंने सीखे थे। इसके अलावा, इससे शिक्षिका को भी यह अवसर मिला कि वे दीवार पर लिखे शब्दों

के उदाहरण देकर विद्यार्थियों का ध्यान किसी खास अक्षर और उसकी ध्वनि के सम्बन्ध की ओर आकर्षित कर सकें।

अक्षर लिखना

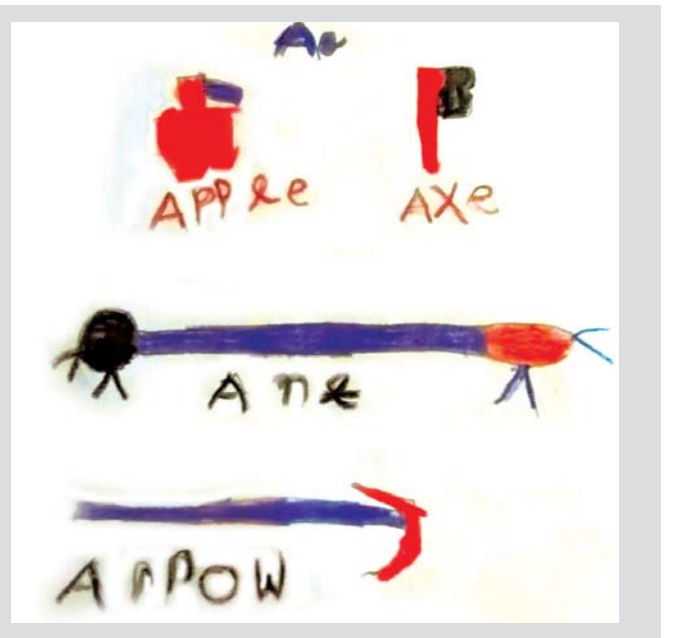
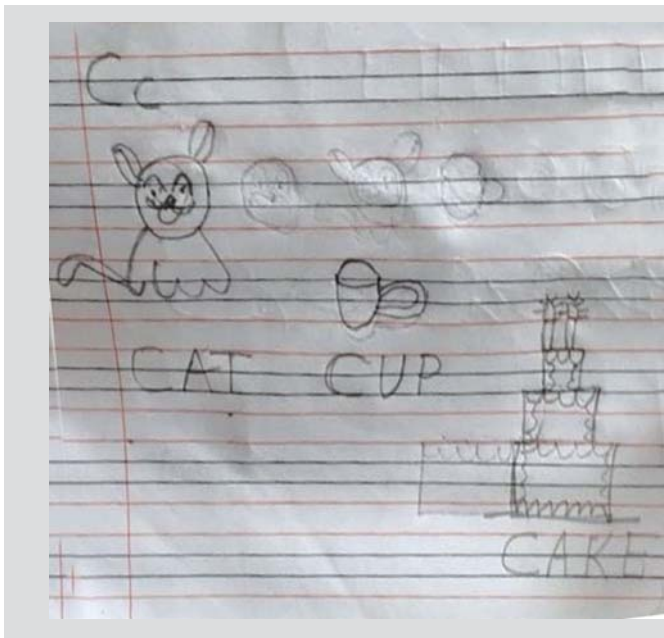
जैसे-जैसे विद्यार्थियों में किसी अक्षर और उससे जुड़ी ध्वनि की समझ विकसित हुई, जैसे-वैसे उन्हें उन्हीं अक्षरों को पत्थरों से, चाँक से, हवा में और अपनी नोटबुक में लिखने, ट्रेस करने या बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने अपनी नोटबुक में उन अक्षरों से बनने वाले शब्दों की वर्तनी भी उतारी, साथ ही उन शब्दों से जुड़ी चीज़ों के चित्र भी बनाए। इस बात पर खास ध्यान दिया गया कि वे अक्षरों को उनसे सम्बन्धित ध्वनियों के साथ पहचान सकें। अक्षरों को पहचानने की प्रक्रिया की ही तरह, उन्हें लिखने के दौरान भी अक्षर के दोनों रूपों (छोटे और बड़े [small and capital]) का अभ्यास करवाया गया।

आसान शब्दों के साथ पढ़ने का अभ्यास

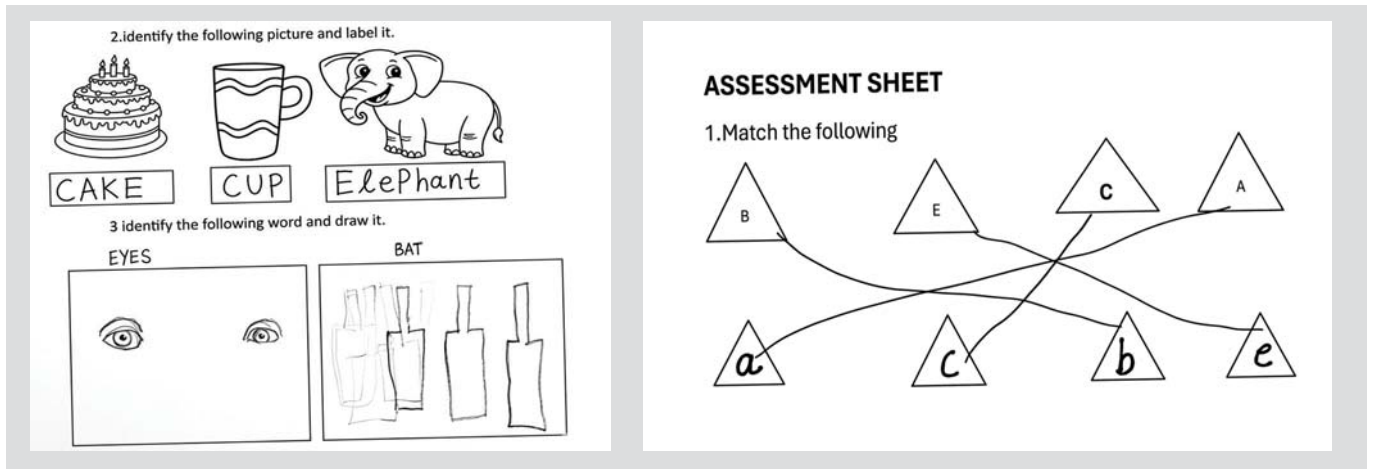
जब विद्यार्थियों को अक्षर-ध्वनि के मेल (व्यंजन और स्वर) की कुछ समझ हो गई तो उन्हें पाठ्यपुस्तक के पाठों, कक्षा के चार्ट और CVC शब्दों के अक्षरों से जुड़ी ध्वनियों को जोड़कर छोटे-छोटे शब्दों को खुद से पढ़ने के लिए बढ़ावा दिया गया। जब वे पढ़ने की कोशिश कर रहे थे तो शिक्षिका उनका ध्यान अक्षरों की ध्वनियों की ओर खींचती रहीं। इसके अलावा, विद्यार्थियों को आसान स्पेलिंग बनाने के लिए अक्षरों के फ्लैश कार्ड दिए गए।

आकलन

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, आकलन का काम लगातार जारी रहा। लगभग हर हफ्ते कक्षा में आकलन करने के लिए वर्कशीट दी जाती थीं ताकि यह देखा जा सके कि विद्यार्थी लक्षित अक्षर-ध्वनि के मेल और दृश्य शब्दावली को सीख पा रहे हैं या नहीं। वर्कशीट के माध्यम से हर विद्यार्थी के पढ़ने की क्षमता के बारे में जानकारी और फ़ीडबैक मिल जाता था।



चित्र 7 : 'C' और 'A' वर्णों से नए शब्द व उनके चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहन



चित्र 8 : चित्रों की पहचान व लेबलिंग के आकलन के लिए वर्कशीट के कुछ उदाहरण

वाक्यों में शब्दावली का अभ्यास

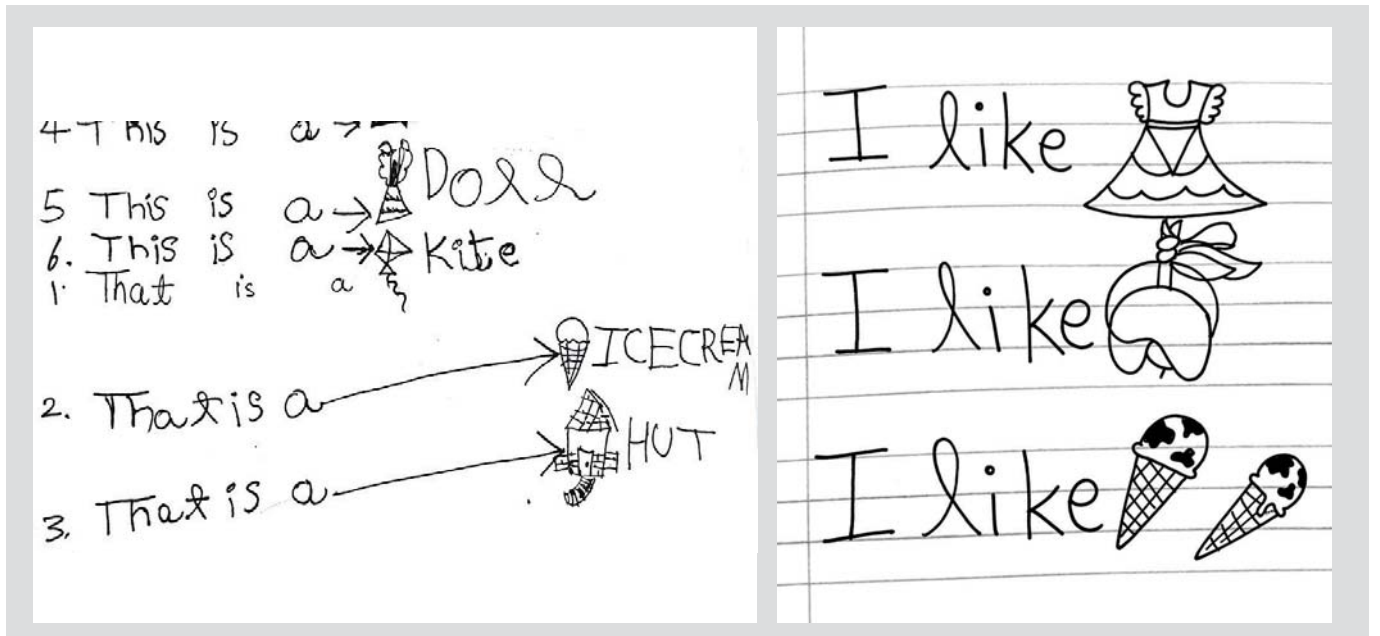
अक्षरों की ध्वनि पहचानने और साक्षरता पर जो काम किया जा रहा था, उसे बातचीत की कुशलता के साथ सही तरह से बनाए रखने के प्रयास किए गए। इसके लिए कक्षा में अंग्रेजी के मौखिक उपयोग का अभ्यास करवाने के साथ-साथ, शिक्षिका ने विद्यार्थियों को कुछ खास और सरल वाक्य संरचनाओं से भी परिचित करवाया—जैसे 'I am...', 'This is...', 'I can...'—ताकि वे सीखी हुई शब्दावली का उपयोग करके पूरे वाक्य बना सकें।

ज़रूरी बातें

1. दोनों भाषाओं में पठन कौशल विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि विद्यार्थियों को अक्षर और उनकी ध्वनियों के बीच के मेल की अच्छी समझ हो, और वे डिकोडिंग का अभ्यास करें। दोनों ही कक्षाओं में, शिक्षिका यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय दिया और प्रयास किया कि विद्यार्थी अक्षरों की

आकृति को पहचानें, और उनसे जुड़ी ध्वनियों को भली-भाँति समझें।

2. **अक्षर-ध्वनि मेल और पढ़ने का अभ्यास हमेशा सन्दर्भ-आधारित नहीं होता।** शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने के कौशल विकसित करने के लिए दोनों शिक्षकों ने अक्षर-ध्वनि मेल, डिकोडिंग और पढ़ने का अभ्यास कराने के लिए सन्दर्भ-आधारित शब्दों और पाठों से आगे बढ़कर प्रयास किया। उदाहरण के लिए, हिन्दी शिक्षिका ने शब्दों की ध्वनियों का अभ्यास कराने के लिए कुछ शब्दों में मात्राएँ जोड़ीं।
3. **R2 में मौखिक भाषा के विकास पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत होती है, क्योंकि इस भाषा के साथ सम्पर्क अपेक्षाकृत कम होता है।** हालाँकि, R1 और R2 में पढ़ने की कुशलता के लिए मौखिक समझ का एक निश्चित स्तर अनिवार्य है। इसके लिए हिन्दी शिक्षिका सुनिश्चित करती हैं कि विद्यार्थी पढ़ना शुरू करने से पहले, सरल हिन्दी कविताओं, कहानियों और



चित्र 9 : वाक्य संरचनाओं का अभ्यास

दैनिक बातचीत का उपयोग करने में सहज महसूस करें। वहीं अँग्रेजी शिक्षिका पाठ योजना में अँग्रेजी में मौखिक प्रवाह को बेहतर बनाने के लिए प्रासंगिक मुद्दों को शामिल करती हैं।

4. 'दृश्य शब्दावली' (साइट वोकेबुलरी) विद्यार्थियों को अँग्रेजी भाषा समझने और पढ़ने की क्षमता विकसित करने में सहायता करती है। अँग्रेजी भाषा में अक्षर-ध्वनि के मेल के सीधे-सादे नियमों से अलग, कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो बहुत ही बुनियादी शब्दों में भी पाए जाते हैं। जैसे—friend, great, daughter, आदि। ऐसे शब्दों को तेजी और आसानी से पढ़ना, पढ़ने की गति एवं प्रवाह को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है।
5. R2 स्तर पर पढ़ने की समझ (reading comprehension) का विकास थोड़ी देर से होता है। हालाँकि, डिकोडिंग की क्षमता और पहले से पढ़े हुए, जाने-पहचाने पाठों को पढ़ने में शुरुआती दौर में मिलने वाली सफलता, विद्यार्थियों को आगे चलकर पढ़ने की समझ विकसित करने में काफ़ी मददगार साबित होती है। अँग्रेजी की कक्षा में विद्यार्थी कुछ दृश्य शब्दों और अक्षर-ध्वनि के बीच के मेल की जानकारी के आधार पर पाठों को डिकोड करने में सक्षम हो जाते हैं। लेकिन वे

अपरिचित पाठों को प्रवाह के साथ डिकोड करने या उनका अर्थ समझने में पूरी तरह से सक्षम नहीं होते हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, फ़ाउण्डेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) R1 और R2 के विद्यार्थियों के लिए सीखने के विभिन्न स्तरों के लक्ष्यों को निर्धारित करती है। जहाँ R1 में विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे छोटे गद्यांशों को आसानी से और समझ के साथ पढ़ सकें, वहीं R2 में उनसे यह उम्मीद होती है कि वे कई अक्षरों वाले शब्दों को पढ़ सकें, तथा पढ़ने, लिखने और शब्द बनाने के लिए अक्षर-ध्वनि मेल और दृश्य शब्दावली का उपयोग कर सकें।

इन दोनों कक्षाओं में सीखने का आकलन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में हो रहा था। हिन्दी शिक्षिका प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से पढ़ने के लिए बुलाती थीं। वे ध्यान देती थीं कि वे कैसे पढ़ रहे हैं। इससे यह समझने में मदद मिलती थी कि किन विशेष अक्षरों, मात्राओं या संयुक्ताक्षरों को पढ़ने में मुश्किल हो रही है। दूसरी ओर, अँग्रेजी की शिक्षिका इस प्रकार के अवलोकन के साथ-साथ एक साप्ताहिक आकलन शीट का भी उपयोग करती थीं।

अँग्रेजी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

- i. एनसीएफ़-एसई के अनुसार, R1 वह भाषा है जिसका उपयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जाता है, और जिसमें सबसे पहले साक्षरता प्राप्त की जाती है (राजस्थान के सन्दर्भ में हिन्दी); और R2 कोई भी अन्य भाषा हो सकती है जिसे विद्यार्थी फ़ाउण्डेशनल स्टेज में सीखना शुरू करते हैं (राजस्थान के सन्दर्भ में अँग्रेजी)। (पेज 239 बॉक्स 2.4i)
- ii. CVC गद्यांश पढ़ने की छोटी-छोटी रचनाएँ होती हैं। इन्हें शुरुआती पाठकों के लिए बनाया गया है, और इनमें व्यंजन-स्वर-व्यंजन (Consonant-Vowel-Consonant—CVC) शब्दों का भरपूर इस्तेमाल होता है। इन गद्यांशों का उपयोग सरल और समझने में आसान शब्दों—जैसे कि cat, dog, map और sit—को मिलाकर सार्थक वाक्य बनाने, और उनके ज़रिए फीनिक्स, शब्दों को जोड़ने (blending) और पढ़ने के प्रवाह (fluency) का अभ्यास करने के लिए किया जाता है।



आकाश शांडिल्य, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, चित्तौड़गढ़, राजस्थान में कार्यरत हैं। वे विशेष रूप से अँग्रेजी भाषा में काम करते हैं, और विषय से सम्बन्धित सामग्री विकसित करने में सहयोग देते हैं।

सम्पर्क : akash.shandilya@azimpremjifoundation.org

शिक्षण अधिगम सामग्री : छोटे प्रयास, बड़ा प्रभाव

ए कविता

छोटे, खासतौर पर 3 से 6 साल के, बच्चों के लिए एक साधन सम्पन्न आँगनवाड़ी केन्द्र ही अपने-आप में उनके लिए आँगनवाड़ी वर्कर के रूप में कार्य करता है। उन्हें विभिन्न प्रकार की ऐसी रोचक और आकर्षक सामग्री की ज़रूरत होती है जो स्वतंत्र रूप से खोजबीन करने, सीखने, और अभ्यास करने के मौके उपलब्ध कराए। इस लेख में आप पढ़ेंगे कि यदि आँगनवाड़ी केन्द्र में ऐसी सामग्रियाँ हों तो बच्चे केन्द्र की गतिविधियों से सार्थक रूप से किस तरह जुड़े रहते हैं, और आँगनवाड़ी वर्करों के लिए उनके अधिगम में सहयोग देना कितना आसान हो जाता है।



चित्र 1: रोचक टीएलएम निर्माण करती आँगनवाड़ी वर्कर

2021 में जब मैंने सुपरवाइज़र के रूप में पहली बार आँगनवाड़ी केन्द्रों का दौरा करना शुरू किया तब स्थिति काफ़ी निराशाजनक थी। कक्षाएँ सप्ताह में कुछ ही दिन चलती थीं, और वह भी अमूमन केवल आधे दिन के लिए। बच्चे केन्द्रों में नियमित नहीं रहते थे, और आँगनवाड़ी वर्करों को बच्चों का मन लगाए रखने में मुश्किल हो रही थी। मैंने देखा कि आँगनवाड़ी केन्द्रों की दीवारें खाली थीं, बक्सों पर धूल जमी हुई थी, और वहाँ बच्चों के मतलब की सामग्री न के बराबर थी। आँगनवाड़ी वर्कर भी हतोत्साहित-से थे। उपलब्ध संसाधनों से साधारण सामग्री तैयार करना भी उन्हें मुश्किल लग रहा था।

शुरुआत में, मैंने आँगनवाड़ी वर्करों को समुदाय से योगदान लेने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन उनका जवाब था कि कोई भी मदद नहीं कर रहा है। लोगों से सम्पर्क करना बहुत मुश्किल है। इसलिए हमने एक योजना बनाई और कई नई पहल शुरू कीं।

टीएलएम मेले में आसानी से उपलब्ध सामग्री से सीखना

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सहयोग से हमने आँगनवाड़ी वर्करों के लिए टीएलएम (शिक्षण अधिगम सामग्री) मेलों का आयोजन करना शुरू किया। यह काफ़ी प्रभावशाली कार्यक्रम है, और साधारण प्रदर्शनी से कहीं बढ़कर है। मेले में आँगनवाड़ी वर्करों को आसानी से उपलब्ध होने वाली, कम लागत की, और रद्दी तथा अनुपयोगी सामग्री का उपयोग करके शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पहले आँगनवाड़ी वर्कर प्रत्येक स्टॉल में रखी हुई सामग्री का अवलोकन करते हैं, और फिर दिए गए समय में अपने-आप कोई सामग्री बनाते हैं। खुद सोच-विचार कर कुछ नया गढ़ पाने की इस प्रक्रिया से उनमें स्वामित्व की भावना पैदा होती है, और वे सामग्रियों के सार्थक उपयोग की गहरी समझ भी बना पाते हैं।

समय के साथ, इन टीएलएम मेलों ने निरन्तर सीखने की संस्कृति का निर्माण किया और सीखने-सिखाने के प्रभावी व नए उपकरणों के निर्माण में मदद की। जो आँगनवाड़ी वर्कर पहले हिचकिचाते थे, और सोचते थे कि उनमें रचनात्मकता की कमी है, वे अपने साथियों के काम को देखकर प्रेरित हुए। प्रदर्शनी के अवलोकन ने उन्हें दर्शाई गई सामग्रियों को अपने आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए भी बनाने, और अपनी ज़रूरत के अनुसार अनुकूलित करने के लिए उकसाया। यह मेला इन आँगनवाड़ी वर्करों के पेशेवर विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ क्योंकि इससे उन्हें अपने आइडिया साझा करने, प्रेरित होने और साझी प्रक्रियाओं को अपने आँगनवाड़ी केन्द्र में दोहराने का अवसर मिला।

लेकिन इस मेले की असली ताकत इस बात में निहित है कि मेले के बाद भी इन सामग्रियों को फिर से कैसे बनाया जाए, और उन्हें अपने बच्चों की ज़रूरत के अनुसार कैसे बदला जाए। कई आँगनवाड़ी वर्कर मेले से प्रोत्साहित हुए, और उन्होंने स्वयं सामग्रियाँ बनाना शुरू कर दिया। किन्तु समय के साथ, अन्य प्राथमिकताओं के कारण उनमें रुचि कम होती गई। गति को बनाए रखने के लिए हमने अलग-अलग रणनीतियाँ अपनाईं। जैसे—

- हमने कुछ ऐसे आँगनवाड़ी वर्करों की पहचान की जो स्वाभाविक रूप से ड्राइंग, पेंटिंग या क्राफ्ट में अच्छे थे। उनकी एक छोटी 'टीएलएम टीम' बनाई। उन्होंने अपनी आँगनवाड़ियों में सामग्री तैयार करके उसे व्हाट्सएप समूहों में साझा करना शुरू किया। इससे और अधिक आँगनवाड़ी वर्करों को सामग्री बनाने की प्रेरणा मिली। फिर आस-पास के गाँवों के आँगनवाड़ी वर्कर छोटे-छोटे समूहों में एकत्रित हुए, और सामूहिक रूप से सामग्री बनाई। इस तरह के अनौपचारिक माहौल ने उनके लिए सीखना आसान बना दिया।
- हमने आँगनवाड़ी वर्करों की मासिक कार्यशालाओं में 'अर्ली बर्ड एक्टिविटीज़' शुरू कीं जिनका संचालन अज़ीम प्रेमजी



चित्र 2 : सामग्री निर्माण सीखने और सिखाने का प्रभावी तरीका

फ़ाउण्डेशन के साथियों द्वारा किया गया। इसके लिए आँगनवाड़ी वर्करों से कहा कि वे एक घण्टे पहले आकर टीएलएम तैयार करें। ये टीएलएम उस महीने के पाठ्यक्रम से जुड़ी गतिविधियों के लिए उपयुक्त होने चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि थीम 'फल और सब्जियाँ' है तो वे किसी चयनित फल के चित्र को कई टुकड़ों में काटकर पज़ल कार्ड बना सकते थे, या फलों के प्रकार पर आधारित एक कहानी चार्ट या पोस्टर बना सकते थे। इन आँगनवाड़ी वर्करों ने निर्धारित समय में दो से तीन सामग्रियाँ बना लीं। इस प्रकार वे कार्यशाला से जानकारियों के नोट के साथ-साथ उपयोग के लिए तैयार सामग्री भी लेकर लौटे।

- 25 से 30 आँगनवाड़ियों वाले प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की सेक्टर बैठकों और कार्यशालाओं में हमने आँगनवाड़ी वर्करों को अपनी-अपनी शिक्षण सामग्री प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे उन्हें यह पहचानने में मदद मिली कि उनकी आँगनवाड़ियों में क्या कमी है। अब वे अपनी ज़रूरतों की बेहतर समझ के साथ वापस लौटे, और संसाधन तैयार करने में जुट गए।

खिलौना बैंक पहल

मासिक ईसीसीई दिवस पर आयोजित अभिभावक बैठक में आँगनवाड़ी वर्करों ने अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे अपने घरों से काम में न आने वाले खिलौने, कहानी की किताबें और अन्य खेल सामग्री आँगनवाड़ी में दे सकते हैं। शुरुआत में तो प्रतिक्रिया ठण्डी रही, लेकिन बार-बार अनुरोध करने और उद्देश्य समझाने के बाद कई अभिभावक मदद करने को तैयार हो गए। वे खिलौना कारें, गुड़ियाँ, पहेलियाँ और कहानी की किताबें लेकर आए। बच्चों को भी गर्व हुआ कि उनके घरों के खिलौने आँगनवाड़ी केन्द्र में रखे गए हैं, और उन्होंने खुशी-खुशी उन्हें दूसरे बच्चों के साथ साझा किया।

हर बैठक में आँगनवाड़ी वर्कर अभिभावकों के उदार योगदान की सराहना करते, और दूसरों के सामने उनको धन्यवाद देते।



चित्र 3 : सामग्री निर्माण के ज़रिए सीखने के प्रतिफलों पर चर्चा

उन्होंने आँगनवाड़ी केन्द्र में एक डिस्प्ले बोर्ड पर उन अभिभावकों के नाम भी लिखे ताकि सभी देख सकें। अभिभावकों को महसूस हुआ कि उन्हें आँगनवाड़ी केन्द्र में काफ़ी महत्व दिया जा रहा है तो कई और लोग भी सामग्री के रूप में मदद करने लगे। समय के साथ, अभिभावक और समुदाय के अन्य सदस्य जन्मदिन या सालगिरह जैसे विशेष अवसरों पर आँगनवाड़ी केन्द्र को नए खिलौने भी देने लगे। शुरुआत में, आँगनवाड़ी वर्कर, समुदाय के सदस्यों से मदद माँगने में हिचकिचाते थे, लेकिन समुदाय की सकारात्मक प्रतिक्रिया और बच्चों की खुशी को देखते हुए अब वे समुदाय से आँगनवाड़ी हेतु आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीके अपना रहे हैं।

कुछ यादगार कहानियाँ

चार आँगनवाड़ी केन्द्रों में आँगनवाड़ी वर्करों के पद रिक्त थे। वहाँ आँगनवाड़ी सहायिकाओं ने उसी गाँव के अन्य आँगनवाड़ी वर्करों के सहयोग से कुछ सामग्रियाँ तैयार कीं। इन सामग्रियों की सहायता से उन्होंने बच्चों को खेल और गीतों के अलावा कुछ अन्य सरल गतिविधियों में शामिल करना भी शुरू कर दिया है।

एक सहायिका ने मुझे बताया कि शिक्षण सामग्री तैयार करना सिर्फ आँगनवाड़ी वर्करों का काम नहीं है। बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के उन्होंने भी फलों एवं वाहनों के कट आउट बनाए थे, और कम लागत वाली सामग्री का उपयोग करके रंगीन कोलाज बनाए। उनके आँगनवाड़ी केन्द्र की दीवारें इन रचनाओं से जीवन्त हो उठीं।

एक बच्ची सुहानी, आँगनवाड़ी केन्द्र में कम ही बोलती थी, समूह में नहीं खेलती थी, और अपने-आप में ही खोई रहती थी। एक दिन हमने केन्द्र पर वर्णमाला का एक चार्ट प्रदर्शित किया जिसे घर पर ही बनाया गया था। सभी को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि सुहानी खड़ी हुई, अक्षरों की ओर इशारा किया, और उन्हें पहचानने लगी। वास्तव में, वह चार्ट उसकी माँ ने बनाया था, और आँगनवाड़ी केन्द्र को दिया था। दूसरे बच्चे भी उसके बोलने के बाद अक्षरों को दोहराने लगे। उस दिन से सुहानी ज़्यादा सक्रिय हो गई, और अकसर चार्ट का इस्तेमाल करके दूसरों को 'सिखाने' भी लगी। एक साधारण अधिगम सामग्री ने उसके आत्मविश्वास को जगा दिया था।

एक बच्चे के पिता ने एक खिलौना कार लाकर दी और कहा, "सिर्फ मेरा बच्चा घर पर अकेला इसके साथ खेले, इसकी बजाय आँगनवाड़ी में दूसरे बच्चे भी इसके साथ खेलें तो अच्छा होगा।" खिलौना कार पाकर बच्चों को जो खुशी हुई उसे बयान नहीं किया जा सकता।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, इन सभी छोटे-छोटे प्रयासों के सार्थक परिणाम सामने आने लगे।

- चार्ट और पोस्टरों से सजी हुई आँगनवाड़ियाँ जीवन्त हो गईं।
- अधिगम कोने (लर्निंग कॉर्नर) पहेलियों, खिलौनों और कहानी की किताबों से गुलज़ार हो गए।
- बच्चे आँगनवाड़ी केन्द्र में अधिक देर तक रुककर ज़्यादा व्यस्त और खुश रहने लगे।
- आँगनवाड़ी वर्करों ने अपनी रचनात्मकता को पहचाना और आत्मविश्वासी बने। सहायिकाओं ने भी फ़ख़ के साथ अपना योगदान दिया।
- अभिभावक अपने योगदान के ज़रिए बच्चों के सीखने और विकास में भागीदार बन गए।
- पूरे क्षेत्र की 25 आँगनवाड़ियों में अब सीखने का सुव्यवस्थित वातावरण है, और सहायिकाओं द्वारा संचालित आँगनवाड़ियाँ भी यह सुनिश्चित कर रही हैं कि बच्चे आवश्यक अधिगम से वंचित न रहें।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अब आँगनवाड़ी वर्करों के पास नए पाठ्यक्रम को आसानी से लागू करने के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त थीम-आधारित शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध है।

मेरा मानना है

ये बदलाव, जो हम देख रहे हैं, रातोंरात नहीं हुए; ये धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा करके हुए हैं। हमने साथ मिलकर आगे बढ़ने का रास्ता खोज लिया। जब मैं इस बारे में सोचती हूँ तो एहसास होता है कि यह यात्रा तो कभी भी किसी बड़े बजट या रेडीमेड किट के बारे में थी ही नहीं। यह तो आँगनवाड़ी वर्करों, सहायिकाओं, अभिभावकों और इस विश्वास के बारे में थी कि उनके छोटे-छोटे प्रयत्न भी मायने रखते हैं।

अंग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

आभार : इस लेख को लिखने में सहायता और मार्गदर्शन देने के लिए के वेंकट साई, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का आभार।



ए कविता तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के पटनचेरु प्रोजेक्ट की एक्सटेंशन अधिकारी (सुपरवाइज़र) हैं। उनका मुख्य लक्ष्य शिक्षकों को सशक्त बनाना, सहयोग को बढ़ावा देना, और वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए उच्च-गुणवत्ता वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करना है।

सम्पर्क : askekavitha14@gmail.com

‘भयमुक्त कक्षा’ बनाने में मददगार तरीके

राकेश शिवनाथ राजपूत

सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों के मन में भय बैठ जाना उनके भावनात्मक और मानसिक विकास को बाधित करता है। इससे उनका कक्षा की बातचीत में शामिल होना तथा अपने विचार व्यक्त करने का ज़रूरी काम नहीं हो पाता है, और विद्यार्थी धीरे-धीरे खुद को ‘न सीख पाने वाला’ मानने लगते हैं। इस लेख में, ऐसी ही चुनौतियों का सामना कर रहे डरे-सहमे विद्यार्थियों को सक्रिय सीखने वाला बनाने के सार्थक प्रयासों के अनुभव दर्ज हैं।

मैं कक्षा 6 का क्लास टीचर हूँ। मेरी कक्षा में 29 विद्यार्थी हैं। जब इस विद्यालय में काम शुरू किया तब प्रधानाध्यापक ने मुझे उन तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जिन्हें मैं पहले सफलतापूर्वक आजमा चुका हूँ। उनके भरोसे ने मुझे ऐसा माहौल बनाने में मदद की जहाँ विद्यार्थी बिना किसी डर या हिचक के सीख सकें।

विद्यार्थियों के साथ अपनी पहली बातचीत में उन्हें बताया कि हमारी कक्षा में किसी को कोई सज़ा नहीं दी जाएगी। यह सुनकर पूरी कक्षा एकदम शान्त रही। विद्यार्थियों के चेहरों पर अविश्वास साफ़ झलक रहा था। उनके लिए यह विचार नया और अनजाना-सा था। कई विद्यालयों में, अनुशासन और कक्षा को नियंत्रित करने के नाम पर आमतौर पर कोई-न-कोई दण्ड दिया जाता है। विद्यार्थी इसी सोच के साथ बड़े होते हैं कि डर सीखने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। यहीं से मैंने भयमुक्त कक्षा को लेकर काम शुरू कर दिया।

पहली चुनौती थी विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाना

विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान ही मैं समझ गया कि 29 में से 10-12 विद्यार्थी कक्षा की गतिविधियों में भाग नहीं ले रहे हैं। कारण जानने पर हिमांशु ने बताया कि उसे अंग्रेज़ी और कक्षा के अन्य कार्यों, जैसे श्रुतलेख या इमला (डिक्टेशन), सवाल-जवाब, पाठ्यपुस्तक के अभ्यास, वगैरह से डर लगता है। संजना और प्रिया ने बताया कि अगर वे कोई गलती करेंगे तो दूसरे विद्यार्थी उन पर हँसेंगे। तृप्ति ने बताया कि उसे कक्षा का माहौल पसन्द नहीं। अन्य विद्यार्थियों ने भी कुछ इसी तरह की बातें बताईं।

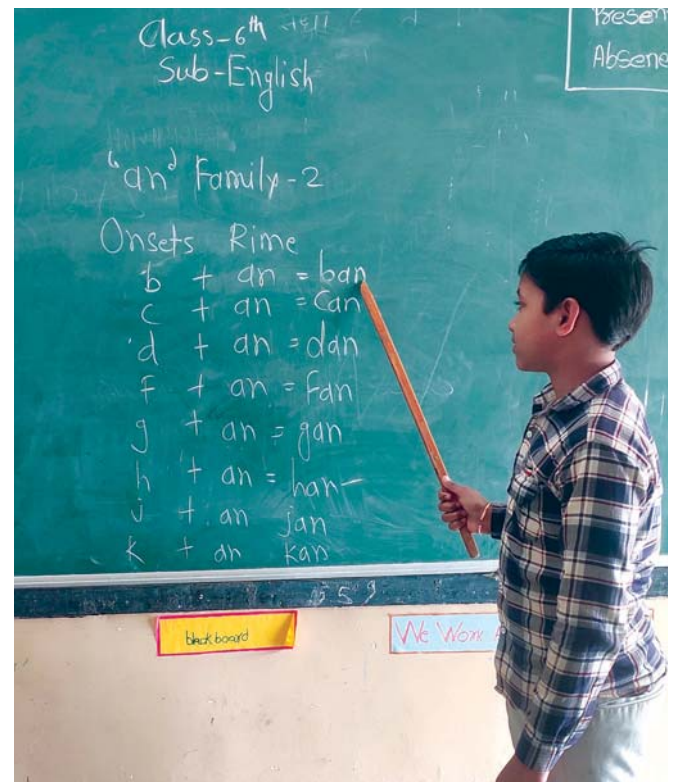
विद्यार्थियों की आशंकाओं को दूर कर उनमें आत्मविश्वास जगाना मेरे लिए काफ़ी चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि शुरू में उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। जब मैं उनसे नियमित रूप से बातचीत करने लगा तो वे खुलकर अपनी बातें साझा करने लगे। हर दिन पहले कालखण्ड में, मैं विद्यार्थियों के साथ 10 मिनट बातचीत करता, और उनकी पसन्द-नापसन्द के बारे में जानने की कोशिश करता।

विद्यार्थियों की रुचि के हिसाब से मैंने कुछ खास तरह की गतिविधियाँ तैयार कीं। मसलन, चित्रकारी से जुड़े हुए काम, क्योंकि उन्हें इसमें बहुत मज़ा आता था। सभी को अपनी

पसन्द की कोई भी चीज़ बनाकर दिखाने के लिए कहा। उनकी चित्रकारी की सराहना की।

कुछ दिनों बाद, मैंने उनके साथ ‘ऑनसेट’ और ‘राइम’ पर काम करना शुरू किया। उन्हें कई शब्द परिवारों से परिचित कराया। बताया कि शुरुआत, मध्य और अन्त की ध्वनियों का प्रयोग करके शब्द कैसे बनते हैं। जैसे—pat, bat, mat, pen, men, वगैरह। उन्होंने वर्कशीट भी हल कीं। वे उन सवालों को हल करने में सक्रियता दिखा रहे थे जिन्हें मैं बोर्ड पर लिख रहा था। इससे उनके पढ़ने व लिखने के कौशल में सुधार आने लगा, और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा।

समय बीतने के साथ विद्यार्थियों का विषयों और मेरे प्रति डर कम होने लगा। उन्हें कक्षा का माहौल भी अच्छा लगने लगा। बाद में, सुबह की सभा में उनसे नोटबुक में किया गया काम



चित्र 1: ऑनसेट्स राइम (Onsets Rime) पर काम करता विद्यार्थी

दिखाने के लिए कहा। उन्होंने बड़ी खुशी से सभी शिक्षकों व अन्य विद्यार्थियों साथ अपने 'ऑनसेट' और 'राइम' से जुड़े काम को साझा किया।

विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझना

मैंने विद्यार्थियों को बहुत ध्यान से देखा, उनके साथ लगातार बातचीत की, और उन्हें खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया। पता चला कि सभी 29 विद्यार्थी वंचित समुदायों से हैं। उनमें से अधिकतर अपने परिवार में विद्यालय आने वाले पहले बच्चे हैं। उनके माता-पिता दिहाड़ी मज़दूर के रूप में काम करते हैं, और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए काफ़ी संघर्ष करते हैं। दिन भर काम करने के चलते, माता-पिता के पास अपने बच्चों को पढ़ाई में मदद करने के लिए बहुत कम समय बचता था।

मुझे यह महसूस हुआ कि डर, सज़ा और दबाव के कारण ये विद्यार्थी पढ़ाई-लिखाई से और भी ज़्यादा दूर हो रहे थे। उन्हें जिन चीज़ों की ज़रूरत थी, वे थीं—मदद और प्रोत्साहन।

सुगमकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका

मैंने निश्चय किया कि मैं एक पारम्परिक शिक्षक नहीं, बल्कि सुगमकर्ता बनूँगा—सीखने में विद्यार्थियों की मदद करने वाला। अपने विद्यार्थियों को यह कहकर आश्वस्त किया कि मैं यहाँ कक्षा को नियंत्रित करने नहीं, सीखने में उनकी मदद करने के लिए आया हूँ। मैंने उनके लिए ऐसे मौक़े बनाए जहाँ वे सिर्फ़ सुनने की बजाय सक्रिय विद्यार्थियों के रूप में भूमिका निभाएँ। उन्हें बाल संसद, कक्षा की गतिविधियों, विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गतिविधियाँ और संसाधन

सबसे पहले, पढ़ाने के उन तरीकों को छोड़ा जो रटने, प्रतियोगिता पर आधारित थे। इनके स्थान पर सीखने के लिए गतिविधि-आधारित रणनीतियाँ अपनाईं जिनमें विद्यार्थी खुशी-खुशी, हिलते-डुलते, चर्चा करते हुए, और मज़ेदार खेलों के माध्यम से सीख सकें। उदाहरण के लिए, 'दृश्य शब्द' सिखाते समय मैंने एक आसान-सी गतिविधि करवाई। कक्षा में फ़र्श पर चॉक से कई गोले बनाए। कुछ गोलों में कूदना, झुकना, दौड़ना, चलना जैसे जाने-पहचाने क्रिया सम्बन्धी शब्द लिखे, वहीं कुछ में अन्दर और बाहर जैसे क्रिया सम्बन्धी निर्देश लिखे। फिर विद्यार्थियों से गोलों के चारों ओर खड़े होने को कहा।

जब मैं कोई शब्द बोलता तो विद्यार्थियों को तेज़ी से सही गोले में कूदना होता, और उस शब्द को ज़ोर से पढ़ना होता था। कभी-कभी उनसे छोटे-छोटे समूह बनाने को कहता, तथा अपने समूह के भीतर बारी-बारी से शब्दों को बोलने और इस गतिविधि में नए शब्द जोड़ने को कहता। इस गतिविधि से कक्षा में काफ़ी उत्साह पैदा हो गया। खेल के दौरान विद्यार्थी बार-बार शब्दों को



चित्र 2 : छोटे समूह में पठन-पाठन और चर्चा-परिचर्चा

पढ़ते थे। इससे उन्हें कई 'दृश्य शब्द' पहचानने में मदद मिली। मैंने सीखने को मज़ेदार बनाने के लिए भाषा से जुड़े कुछ खेल शुरू किए। विद्यार्थियों का सबसे पसन्दीदा खेल था—'साइमन सेज़' यानी 'साइमन कहता है'। सबसे पहले, उन्हें समझाया कि यह कैसे खेला जाता है। फिर कुछ निर्देश दिए। जैसे—साइमन कहता है, "चलो"; साइमन कहता है, "दौड़ो"; साइमन कहता है, "झुको"; और साइमन कहता है, "कूदो"।

धीरे-धीरे निर्देशों को और मुश्किल बनाना शुरू कर दिया। सबसे पहले उनसे एक घेरे में बैठने को कहा, और फिर एक-एक करके हर विद्यार्थी के लिए कुछ वाक्यांश और वाक्य इस्तेमाल किए। जैसे—साइमन कहता है, "कुछ क्रदम चलो"; "दरवाज़ा बन्द करो"; "नोटबुक ले आओ"; "पंखा बन्द करो"; वगैरह। इस खेल के ज़रिए, विद्यार्थियों ने ध्यान से सुनना, निर्देशों को समझना, उनका पालन करना और वाक्यों में क्रिया शब्दों का इस्तेमाल करना सीखा। बाद में उन्हें 'साइमन' की भूमिका निभाने और अपने साथियों को निर्देश देने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

मैंने देखा कि कक्षा में विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए एक भी किताब नहीं थी। हमने अलग-अलग जगहों से लगभग 100 किताबें इकट्ठी कीं, और कक्षा में छोटी-सी लाइब्रेरी बना दी। किताबें इस तरह रखीं कि विद्यार्थी आसानी से उन्हें ले सकें।

इसके अलावा, कक्षा में दरवाज़ा, खिड़की, कुर्सी, टेबल, ब्लैकबोर्ड और पंखे जैसी चीज़ों पर लेबलिंग की। विद्यार्थियों को इस काम में शामिल किया ताकि वे शब्दों को पढ़ और पहचान सकें। हम सबने मिलकर शब्द कार्ड, वाक्य पट्टियाँ और चित्र कार्ड जैसे टीएलएम भी बनाए।

विद्यार्थियों को इन सामग्रियों का इस्तेमाल करने की पूरी आज़ादी थी। उन्होंने खुद ही किताबों को व्यवस्थित किया और कक्षा की अन्य चीज़ों की साज-सँभाल की। जब भी उनका पढ़ने का मन होता, वे कोई भी किताब उठा लेते और पढ़ना शुरू कर देते। वे किताबों का इस्तेमाल सावधानी से करते और पढ़ने के बाद एक दूसरे को उन्हें ठीक से रखने के लिए कहते। विद्यार्थियों में अपनेपन और ज़िम्मेदारी की भावना पैदा हुई।

समय बीतने के साथ, विद्यार्थी खुद ही पूछने लगे, “सर, क्या आज हम कोई नई गतिविधि कर सकते हैं?” सीखने के प्रति उनकी जिज्ञासा और उत्साह बढ़ता गया। जो विद्यार्थी पहले चुप रहते थे, उन्होंने हाथ उठाकर अपने विचार व्यक्त करने शुरू कर दिए। शर्मीले विद्यार्थी भी समूह चर्चा और कक्षा गतिविधियों में भाग लेने लगे। शान्त माहौल और शिक्षक-निर्देशित कक्षा एक संवादात्मक, आनन्दमय और विद्यार्थी-केन्द्रित सीखने के माहौल में बदल गई।

सकारात्मक प्रोत्साहन

पारम्परिक कक्षाओं में जब विद्यार्थी गलती करते हैं तो उन्हें अकसर डाँटा-फटकारा जाता है। इससे वे अपमानित महसूस करते हैं, और उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है। मेरी कक्षा में गलतियों को सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है।

सजा देने की बजाय, हर विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देना शुरू किया, और उन्हें सकारात्मक प्रोत्साहन दिया। उदाहरण के लिए, हिमांशु 'b' ध्वनि पर काम करते समय 'd' लिख देता था। उसे उदाहरणों की मदद से दोनों ध्वनियों का अन्तर तब तक समझाया जब तक उसे दोनों के सही प्रयोग का पूरा विश्वास नहीं हो गया।

इसी तरह, 'A letter from Hingoli' वाले पाठ के दौरान प्रदीप ने "My deer friend" लिख दिया। उसे 'deer' और 'dear' के बीच का अन्तर समझाया, और उदाहरण देकर बताया कि उनका इस्तेमाल कहाँ और कैसे किया जाता है।

मैंने विद्यार्थियों को बिना डरे काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्हें भरोसा दिलाया कि गलतियाँ करना खराब बात नहीं है। सिर्फ सही जवाबों पर ध्यान देने की बजाय, उनके प्रयासों, प्रगति और प्रतिभाग करने की कोशिशों की सराहना की। उदाहरणार्थ, तृप्ति जैसी कुछ छात्राओं को शुरू में पढ़ने में दिक्कत होती थी। उन्हें प्यार से समझाया और लगातार उनका हौसला बढ़ाया। समूह गतिविधियाँ, आपसी सहयोग, सकारात्मक प्रोत्साहन और प्रतिभागिता के मौके, इन सभी बातों ने उन्हें ज़्यादा सक्रिय व आत्मविश्वासी बनने में मदद की।

“

मेरी कक्षा में गलतियों को सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है।

”

इन उपायों ने विद्यार्थियों को असफलता की परवाह किए बगैर सक्रिय प्रतिभागी बनने के लिए प्रेरित किया। हमने इस बात पर जोर दिया कि सीखना महत्वपूर्ण है। यह बिना तनाव या बोझ के ही सम्भव है।

मिलकर कक्षा के नियम बनाना

कक्षा में बेहतर माहौल बनाने में सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। 'बाल संसद' में, हमने अपनी कक्षा के नियमों पर बात की।

जैसे—हम कक्षा की देखभाल कैसे करेंगे; हमारे पढ़ने का समय क्या होगा; हमारी रोज़ की दिनचर्या कैसी होगी; आदि।

हमने कुछ और विषयों पर भी चर्चा की। मिसाल के तौर पर, हमें कक्षा में सभी का सम्मान करना चाहिए; अपनी कक्षा को साफ़ रखना चाहिए; आदि। इन विषयों पर चर्चा करते समय विद्यार्थियों को और गहराई से सोचने के लिए प्रेरित किया। उनसे पूछा कि हम इन बातों को कैसे अमल में ला सकते हैं। उन्होंने सुझाव देने शुरू किए जिन्हें मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखता गया। जैसे—हमें कोई प्रश्न पूछने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाना चाहिए; कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए; हमें अपने खेलों में सभी को शामिल करना चाहिए; आदि।

बोर्ड पर 15-20 नियम लिखने के बाद, हम समूहों में एक साथ बैठे और कागज़ की पट्टियों पर ये नियम लिख लिए। फिर उन्हें दीवारों पर चिपका दिया। चूँकि ये नियम विद्यार्थियों ने खुद बनाए थे, इसलिए उन्होंने इनका पालन भी ज़्यादा ईमानदारी से किया। कक्षा अब एक सुरक्षित जगह बन गई जहाँ विद्यार्थी बिना किसी हिचकिचाहट के सवाल पूछने, मदद माँगने और अपनी राय जाहिर करने में खुद को स्वतंत्र महसूस कर रहे थे। सामूहिक फ़ैसला लेने की इस प्रक्रिया ने विद्यार्थियों के साथ मेरे रिश्ते को और मज़बूत किया।



चित्र 3: बाल संसद में विद्यार्थियों ने खुद बनाए कक्षा के नियम

आकलन के तरीके

पारम्परिक तरह से किए जाने वाले आकलन, जिनमें विद्यार्थियों को सवालों के रटे हुए जवाब देने होते हैं, विद्यार्थियों को अकसर



चित्र 4 : ओपन-बुक टेस्ट में शामिल विद्यार्थी

“ औपचारिक साप्ताहिक परीक्षाओं के महत्त्व को कम किया, और आकलन के अलग तरीके अपनाए। इनमें स्व-आकलन, परस्पर-आकलन, समूह कार्य, चर्चाएँ, मौखिक जवाब, आदि शामिल थे। ”

नीरस लगते हैं, और उनमें भय भी जगाते हैं।

इस समस्या को सुलझाने के लिए, मैंने कुछ 'बाल-केन्द्रित आकलन उपकरण' (child-centric assessment tools) बनाए। इनमें से पहला था—'ओपन-बुक टेस्ट'। इसमें मैं किसी खास विषय या अवधारणा पर आधारित 'अनुमानात्मक प्रश्न' (inferential questions) पूछता, और विद्यार्थियों से कहता कि उनके उत्तर खुद ही ढूँढ़ें। उन्हें कक्षा की सामग्री और पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने की अनुमति होती थी। इस तरह विद्यार्थियों के मन से कम अंक आने या पास / फ़ेल होने का डर जाता रहा।

दूसरी बात, मैंने कुछ सरप्राइज़ टेस्ट लेने शुरू किए। इनका मक़सद विद्यार्थियों की समझ को परखना था, न कि उनकी रटने की क्षमता को। मैंने ब्लैकबोर्ड पर कहानियों या कविताओं पर आधारित कुछ सवाल लिखे, और विद्यार्थियों से कहा कि वे अपनी नोटबुक, कहानी की किताबें, शब्द कार्ड, वाक्य पट्टियाँ और फ़्लैश कार्ड देखकर उनके जवाब दें। उदाहरण के लिए, 'A letter from Hingoli' पाठ पढ़ने के बाद पारम्परिक टेस्ट लेने की बजाय, ब्लैकबोर्ड पर कुछ सवाल लिखे। जैसे—

रमन कहाँ रहता है;

गाँव में किस जगह के पास पुस्तकालय है;

रमन अपनी चिट्ठी में पुस्तकालय का ज़िक्र क्यों करता है; आदि।

विद्यार्थियों को अपनी नोटबुक, कहानी की किताबें, शब्द कार्ड और फ़्लैश कार्ड देखने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे अपने जवाब खुद ढूँढ़ सकें। कुछ विद्यार्थियों ने पाठ के क्रम को याद करने के लिए पाठ्यपुस्तक देखी।

उन्होंने अपने साथियों के साथ बातचीत की, सही शब्दों को खोजा, और तयशुदा जवाब रटने की बजाय खुद के जवाब तैयार किए। कक्षा का माहौल शान्त और खुशनुमा रहा। विद्यार्थियों ने किसी औपचारिक परीक्षा का दबाव भी महसूस नहीं किया, इसीलिए उन्होंने बहुत उत्साह के साथ इस आकलन में भाग लिया।

धीरे-धीरे औपचारिक साप्ताहिक परीक्षाओं के महत्त्व को कम किया, और आकलन के अलग तरीके अपनाए। इनमें स्व-आकलन, परस्पर-आकलन (peer assessment), समूह कार्य, चर्चाएँ, मौखिक जवाब, आदि शामिल थे।

अंग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।



राकेश शिवनाथ राजपूत स्व. प्रतापसिंह शं. उपाख्य बाळासाहेब देशमुख (जरुडकर) माध्यमिक विद्यालय, जरुड, अमरावती, महाराष्ट्र में शिक्षक हैं। इससे पहले आप अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े थे। आप टाटा ट्रस्ट-CSPC, गुजरात में एकेडमिक कोऑर्डिनेटर (FLN) भी रहे। आपने राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल में अंग्रेज़ी विषय के सलाहकार के रूप में भी कार्य किया है।

सम्पर्क : rakeshrajput3675@gmail.com

समय रेखा और इतिहास की समझ

हिमांशु खोले

शिक्षा का एक जाना-माना शिक्षण सूत्र है—ज्ञात से अज्ञात की ओर। इस सूत्र का बुनियादी विचार है—विद्यार्थी जो जानते हैं, जो उनके जीवन अनुभव हैं, उनसे कक्षा के ज्ञान को जोड़ा जाए। इस विचार को अमल में लाते हुए शिक्षक आसान और रोचक तरीके से इतिहास की एक महत्वपूर्ण अवधारणा और इससे जुड़ी समझ पर कार्य करते हैं। इससे पता ही नहीं चलता कि विद्यार्थी अपने और अपने गाँव के जीवन की घटनाओं की समय रेखा पर कार्य करते-करते कब हज़ारों साल पुरानी घटनाओं को समय रेखा पर उकेरने की पुख्ता समझ बना लेते हैं।

इतिहास को समझने में काल (Era) और तिथियों की समझ होने से बहुत मदद मिलती है। इतिहास पढ़ने-पढ़ाने का साध्य है—ऐतिहासिक घटनाओं के कारणों और प्रभावों को जोड़कर समझना, उनमें अन्तर और तुलना करना, तथा तार्किक चिन्तन और विश्लेषण करना। समय रेखा की समझ इन सभी को बेहतर समझने में मददगार होती है। लेकिन समय रेखा पर काम करने वाले शिक्षकों के लिए यह समझना भी ज़रूरी है कि यह इतिहास की समझ को विकसित करने का एक साधन मात्र है। सिर्फ़ इसे पढ़ पाना और बना पाना इतिहास की जटिल व व्यापक समझ नहीं है। यह उस समझ का एक छोटा-सा हिस्सा मात्र है।



संक्षेप तौर पर और सरल भाषा में कहा जाए तो इतिहास को समझने से आशय है समय के क्रम के साथ हुए बदलावों को, उनके कारणों और प्रभावों के साथ समझना।



पृष्ठभूमि

आमतौर पर अभी भी इतिहास विषय में तिथियों और काल (Era) का बहुत महत्व माना जाता है। परीक्षाओं में इनसे सम्बन्धित बहुत सारे सवाल पूछे जाते हैं। यही वजह है कि पाठ्यपुस्तकों, गाइडों और कुंजियों को भी इसी तरह से लिखा जाता रहा है। इससे पाठकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों में भी यह ग़लत मान्यता बन जाती है कि ऐतिहासिक व्यक्तियों या घटनाओं से जुड़ी तिथियों या कालों को याद करना, और क्रम से या बिना क्रम के सटीक बता पाना ही इतिहास बोध है, जबकि इतिहास बोध इससे कहीं अधिक व्यापक है।

हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि तिथियों और काल (Era) की सटीक समझ होने से इतिहास बोध को विकसित करने में बहुत मदद मिलती है। यह समझ ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम को समझने, कालों के अनुसार घटनाओं में अन्तर करने व उनमें सम्बन्ध बनाने तथा समाजों के विकास क्रम की तुलना करने, तर्क करने और विश्लेषण करने में मददगार होती है। संक्षेप में और सरल भाषा में कहा जाए तो इतिहास को समझने से आशय है समय के क्रम के साथ हुए बदलावों को, उनके कारणों और प्रभावों के साथ समझना। समय रेखा या काल रेखा इनको एक कहानी की तरह क्रम से समझने में मदद करती है। ऐतिहासिक घटनाओं के बीच एक बार क्रमिक समझ बनने के बाद इसकी मदद से घटनाओं के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण करना आसान हो जाता है। समय रेखा के इस्तेमाल को शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए आसान और रोचक कैसे बनाया जा सकता है, इसका अनुभव मुझे मध्य प्रदेश के सागर ज़िले के खुरई ब्लॉक की एकीकृत माध्यमिक शाला बांगची के कक्षा 6 से 8 के

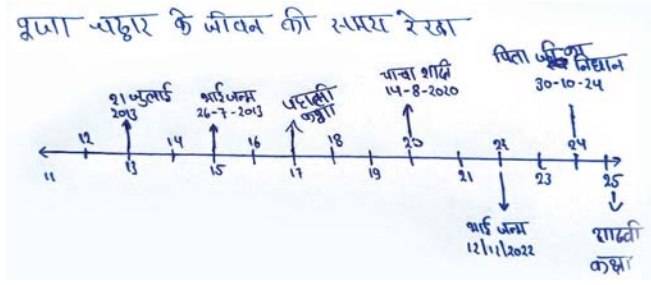


चित्र 1: बीते हुए समय को समय रेखा की मदद से महसूस करना

विद्यार्थियों के साथ इस पर काम करके मिला। इस लेख में मुख्य रूप से कक्षा 7 व 8 के साथ किए गए काम के अनुभव प्रस्तुत हैं।

अपने जीवन की समय रेखा से शुरुआत

जुलाई-2025 में सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों की एक कार्यशाला के दौरान बांगची शाला के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक ने मुझसे उनके साथ मिलकर समय रेखा पर काम करने की बात की। यह काम कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के साथ करना था। मैंने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। हम दोनों ने मिलकर टीएलएम (टीचिंग-लर्निंग मटेरियल) पर तैयारी की, और तब विद्यार्थियों के साथ काम किया।



चित्र 2 : अपने खुद के अनुभव को स्केल पर दर्ज करना

सबसे पहली गतिविधि कक्षा 6, 7 और 8 के विद्यार्थियों के साथ की गई। ये सभी विद्यार्थी एक साथ बैठे थे। बातचीत की शुरुआत में हमने विद्यार्थियों से पूछा, "अभी कौन-सा साल चल रहा है?" विद्यार्थियों का जवाब था, "2025।" तब मैंने एक-एक कर सभी विद्यार्थियों से पूछा कि आप किस साल पैदा हुए थे। सभी ने अपने-अपने जन्म के साल बताए। ज्यादातर विद्यार्थियों का जन्म सन् 2010 के बाद का था। मैंने बोर्ड पर सन् 2010 से 2030 तक की एक समय रेखा बनाई। फिर समय रेखा पर एक विद्यार्थी के जन्म का साल, उसके कक्षा पहली और पाँचवीं में आने का साल, और इस बीच उसके परिवार व समुदाय में जो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, उनको लिखा। अन्त में, सबसे ऊपर उस विद्यार्थी के नाम की समय रेखा लिख दिया। इस उदाहरण को लेते हुए हमने बातचीत की कि इस समय रेखा को पढ़ने से हम पूजा के जीवन की कुछ खास घटनाओं के बारे में जान सकते हैं (देखें चित्र 2)। इसके बाद सभी विद्यार्थियों को उनकी कॉपियों में उनके जीवन की समय रेखा बनाने के लिए कहा। इस काम के लिए विद्यार्थियों को 20 मिनट का समय दिया। उन्होंने स्केल से रेखा बनाई, और हर एक सेंटीमीटर को एक साल मानकर एक समय रेखा तैयार की। दिए गए समय में लगभग उन सभी विद्यार्थियों ने, जिन्हें लिखना आता था, अपने जीवन की समय रेखाएँ बना ली थीं। कुछ ने साल के साथ ही तारीख और महीने भी लिख दिए थे। कॉपी में बनाई गई समय रेखा पर जगह कम होने की वजह से उन्होंने सालों को संक्षेप में दर्शाया था। मसलन, सामान्य संवत् (ईसवी) 2012 न लिखकर सिर्फ 12 लिख दिया था।

आगे चर्चा हुई कि आपके जन्म से पहले भी आपके परिवार और समुदाय में कई घटनाएँ घटी हैं। इसी तरह साल 2025 के आगे आने वाले सालों में भी आपके परिवार और समुदाय में कई

महत्वपूर्ण घटनाएँ घटेंगी। अतीत और भविष्य में घटी इन सभी घटनाओं को दर्ज करने के लिए समय रेखा को दोनों दिशाओं में आगे बढ़ाया जा सकता है। सभी विद्यार्थियों को उनके परिवार और समुदाय के सदस्यों से चर्चा करके उनकी समय रेखाओं को आगे बढ़ाने के लिए कहा गया। कक्षा 8 के विद्यार्थी अगले दिन इस गृहकार्य को करके लाए भी।

गाँव की समय रेखा

दूसरी गतिविधि कक्षा 8 के विद्यार्थियों के साथ की गई। कक्षा में चर्चा हुई कि गाँव में कब, कौन-सी महत्वपूर्ण घटना घटी, इसको भी समय रेखा पर दर्ज किया जा सकता है। विद्यार्थियों को गाँव की समय रेखा तैयार करने के लिए कहा गया। इसके लिए उन्हें गाँव के लोगों से बातचीत करनी थी। बातचीत के लिए कुछ प्रश्न भी हमने बनाए। ये प्रश्न इस प्रकार थे :

1. गाँव का पहला कुआँ किस साल खोदा गया?
2. गाँव में पहला बिजली कनेक्शन किस साल लगा?
3. गाँव में पहला ट्रैक्टर किस साल आया?
4. गाँव में पहली पक्की सड़क किस साल बनी?
5. गाँव में पहला विद्यालय किस साल शुरू हुआ?
6. गाँव में पहला आँगनवाड़ी केन्द्र किस साल शुरू हुआ?
7. गाँव की पहली महिला सरपंच किस साल और कौन बनीं?
8. गाँव का पहला सामुदायिक भवन किस साल बना?
9. गाँव का पहला बोरवेल किस साल खुदा?

विद्यार्थियों ने समुदाय के वयस्कों और बुजुर्गों से इन प्रश्नों पर चर्चा की। सभी प्रश्नों पर बातचीत करने और अपेक्षित जानकारी इकट्ठी करने में उन्हें तीन दिन का समय लगा। विद्यार्थियों ने बताया कि बुजुर्गों को इन घटनाओं के सटीक साल याद नहीं हैं। कुछ लोग अनुमान लगाकर साल बता रहे थे। कुछ प्रश्नों के उत्तरों में अलग-अलग लोग अलग-अलग साल बता रहे थे। वे अपने या समुदाय के जीवन की घटनाओं के पहले या बाद के आधार पर उनका अनुमान लगाकर बताते थे। जैसे-मैं जब 10वीं में था तब वे सरपंच बने थे। इसके लिए अन्य लोगों से भी इसकी पुष्टि की गई। लेकिन लिखित दस्तावेज़ न होने की वजह से ये सभी उत्तर अनुमानित ही थे।

विद्यार्थियों द्वारा पता किए गए सभी प्रश्नों के उत्तरों को अलग-अलग पर्चियों पर लिख लिया गया। इसके बाद विद्यार्थियों ने ड्राइंग शीट पर ईसवी सन् 1900 से ईसवी सन् 2050 तक की वार्षिक समय रेखा बनाई। एक ही ड्राइंग शीट पर इसे पूरा बनाने के लिए समय रेखा को सर्पिलाकार बनाया गया। समय रेखा का इस्तेमाल बार-बार किया जा सके, इसके लिए उपरोक्त प्रश्नों के उत्तरों को इस पर न लिखकर अलग से पर्चियों पर लिखा गया। उत्तरों की पर्चियों को पहले क्रम से जमाया। इसे देखकर विद्यार्थी

समझ पा रहे थे कि गाँव में कौन-सा बदलाव पहले आया और कौन-सा बाद में। जैसे-गाँव का पहला कुआँ खुदने के 83 साल बाद गाँव में पहला बिजली कनेक्शन आया। विद्यार्थियों से चर्चा में लोगों ने बताया कि गाँव में बिजली कनेक्शन आने के बाद पाँच सालों में ही आर्थिक रूप से सक्षम कई ग्रामीणों ने बोरवेल करवाए, और मोटर लगाकर बिजली की मदद से सिंचाई करने लगे। विद्यार्थी अब बिना क्रम के किसी भी पर्ची को पढ़कर उसे समय रेखा पर सही साल के साथ मिलाकर लगाने लगे थे।

पाठ्यपुस्तकें और समय रेखा

कुछ इसी तरह का काम कक्षा 7 के साथ किया गया। इस कक्षा में हमने एनसीईआरटी की पुरानी पाठ्यपुस्तक (हमारे अतीत भाग 2 व 3) के अनुसार भारतीय मध्यकाल की समय रेखा पर काम किया। मध्यकाल का दायरा 1000 साल का होने की वजह से हमने 10-10 सालों के अन्तर वाली दशकीय समय रेखा तैयार की। विद्यार्थियों को स्केल की मदद से एक-एक इंच के अन्तर पर ड्राइंग शीट की पट्टियों पर पेंसिल से निशान लगाकर इनमें स्केच पेन से साल लिखने का तरीका बताया। (चित्र 3) फिर विद्यार्थियों और शिक्षक ने मिलकर इसको ईसवी सन् 750 से ईसवी सन् 1750 तक बनाया। बातचीत हुई कि यह समय रेखा ईसा के जन्म के 750 साल बाद से लेकर 1750 साल बाद तक की है। माने इसमें दर्शाए गए सभी वर्ष ईसवी, यानी सामान्य संवत् ही हैं। समय रेखा बनकर तैयार होने के बाद विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तकों में तिथियों के साथ दिए गए महत्वपूर्ण तथ्यों, जैसे-किसी राजा का शासनकाल, युद्ध का साल, किसी ऐतिहासिक इमारत के निर्माण का काल, आदि की पर्चियाँ तैयार करके दिखाई। उदाहरण के लिए-

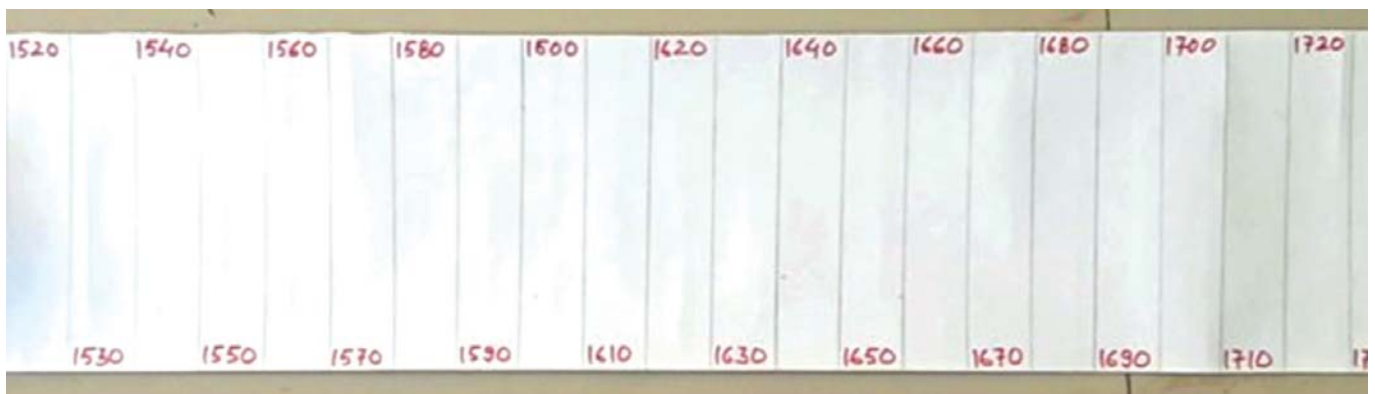
1. पृथ्वीराज चौहान का शासनकाल ईसवी सन् 1175 से ईसवी सन् 1192 तक रहा।
2. पानीपत का पहला युद्ध सामान्य संवत् 1526 में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच हुआ।
3. आगरा के ताजमहल का निर्माण 1643 ईसवी सन् में पूरा हुआ।

गृहकार्य में विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के अलग-अलग अध्यायों को पढ़ने और पर्चियाँ बनाकर लाने के लिए निर्देश दिए गए।

अगले दिन जब विद्यार्थी पर्चियाँ बनाकर लाए तो शिक्षक ने पर्चियों के बण्डल में से कुछ पर्चियों को बिना क्रम के निकालकर, पढ़कर और उनमें दिए गए सालों के अनुसार उन्हें समय रेखा पर जमाकर दिखाया। इसके बाद प्रत्येक विद्यार्थी को बारी-बारी से बण्डल में से एक पर्ची को बिना क्रम के निकालने, पढ़ने और समय रेखा पर जमाने के लिए कहा गया। शुरुआत में दशकीय समय रेखा पर उन्हें सही जगह खोजने में कुछ दिक्कतें आ रही थीं। जैसे-1536 को 1530 वाले हिस्से में रखा जाए या 1540 वाले हिस्से में। उन्हें बताया गया कि 1536 का साल 1530 के बाद आता है इसलिए इसे 1530 वाले खाने में रखना है तो वे इसे समझने लगे और समझकर रखने लगे।

ईसा पूर्व और ईसवी

इन सभी गतिविधियों के दौरान ईसा पूर्व और ईसवी की अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए भी विद्यार्थियों से बातचीत होती रही। यह बातचीत थी कि आज से 2025 साल पहले एक व्यक्ति हुए थे, जिनको ईसा नाम से जाना जाता है। विद्यार्थियों को ईसा का एक रेखाचित्र दिखाकर बताया गया कि इनके जन्म से आज तक दुनिया भर में सालों को गिना जा रहा है। उनके जन्म के साल को पहला साल मानकर जो साल गिने जा रहे हैं उन्हें ईसवी या सामान्य संवत् कहा जाता है। उनके जन्म के पहले भी हमारी पृथ्वी पर कई घटनाएँ घटी हैं। उन घटनाओं के समय को बताने के लिए उनके समय या सालों को ईसा पूर्व कहा जाता है। ईसा पूर्व के सालों को ही सामान्य संवत् पूर्व भी कहा जाता है। इतिहास पढ़ते समय यह समझना ज़रूरी होता है कि जिस घटना के बारे में बात की जा रही है वह ईसा के जन्म के पहले के समय की है या ईसा के जन्म के बाद के समय की। कक्षा 8 के विद्यार्थी इस बात को अच्छी तरह समझ गए थे। वे बता पा रहे थे कि अभी ईसवी 2025 चल रहा है। भीमबेटका गुफाओं के चित्र, हड़प्पा सभ्यता, जनपद काल, मौर्य साम्राज्य, आदि ईसा के जन्म के पहले के सालों में थे। इसी तरह, खजुराहो के प्राचीन मन्दिर, ताजमहल, राष्ट्रपति भवन, आदि ईसा के जन्म के बाद में बने हैं। समय रेखा पर उपरोक्त



चित्र 3 : महत्वपूर्ण घटनाओं के अंकन के लिए विद्यार्थियों ने बनाई दशकीय समय रेखा

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के दौरान बुनियादी साक्षरता पर काम

कल्पना बिष्ट

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनमें बुनियादी साक्षरता से सम्बन्धित अपेक्षित दक्षताएँ कमजोर होती हैं। ऐसे विद्यार्थियों के साथ यदि बुनियादी साक्षरता पर कार्य न किया जाए तो उनका कक्षा में बने रहना चुनौती बन जाता है। ऐसे विद्यार्थियों के साथ विषय शिक्षण के दौरान बुनियादी साक्षरता पर काम करने के अनुभव इस लेख में साझा किए गए हैं।



चित्र 1: महाद्वीपों पर बात करते हुए नई शब्दावली से परिचय (एआई के सहयोग से बना चित्र)

सामाजिक विज्ञान के कालखण्ड में एक अलग तरह की चुप्पी होती है। यह डर या अनुशासन से उपजी चुप्पी नहीं, बल्कि वह चुप्पी होती है जिसमें विद्यार्थी नए विषय को समझने की कोशिश कर रहे होते हैं। मेरी कक्षा 6 में एक नए विद्यार्थी का आना हुआ। शुरुआती परिचय और कक्षा में उसके प्रतिभाग को कुछ दिन देखने के बाद समझ आया कि उसको पढ़ने-लिखने में समस्या हो रही है। इस नए विद्यार्थी को मिलाकर मेरी कक्षा में कुल 14 विद्यार्थी हो गए हैं। इनमें से 2 को पढ़ने-लिखने में दिक्कतें हैं। मैंने पाठ्यक्रम में आगे बढ़ते हुए दूसरा अध्याय 'महासागर एवं महाद्वीप' पढ़ाना शुरू किया। उस समय यह बात मुझे स्पष्ट थी कि यदि केवल पाठ्यपुस्तक के सहारे आगे बढ़ी तो ये दोनों विद्यार्थी धीरे-धीरे कक्षा से बाहर हो जाएँगे। इसलिए कोशिश की कि अध्याय और शिक्षण सामग्री

सबके लिए एक ही रहे, पर उसके आधार पर विद्यार्थियों के स्तर को समझने, और उनके साथ काम करने के रास्ते अलग-अलग बनाए जाएँ।

कक्षा की शुरुआत पुस्तक खोलने से पहले की। मैंने बोर्ड पर एक बड़ा-सा गोला बनाया, और विद्यार्थियों से पूछा, "अगर यह पृथ्वी है तो इसमें हम क्या-क्या दिखाएँगे?" वे तुरन्त रंगों की बात करने लगे—नीला, भूरा, हरा। यहीं से बातचीत आगे बढ़ी। मैंने कुछ विद्यार्थियों को पृथ्वी के गोले में नीला रंग भरने को कहा और कुछ को भूरा। बुनियादी साक्षरता में कमजोर विद्यार्थियों को पास बुलाकर धीरे से कहा, "यह पानी है... यह ज़मीन है... तुम दिखाओ कहाँ पानी है?" वे उँगली से इशारा करते, फिर उसी को दोहराते। वहीं दूसरी ओर, बाक़ी विद्यार्थियों से पूछा, "अगर नीला हिस्सा ज़्यादा है तो इसका क्या मतलब हुआ?" धीरे-धीरे

वे इस निष्कर्ष तक पहुँचे कि पृथ्वी पर पानी अधिक है। एक ही सामग्री व गतिविधि में कुछ विद्यार्थी रंग और शब्द से जुड़ रहे थे, वहीं कुछ उसी से तर्क गढ़ रहे थे।

जब हमने 'महासागर' और 'महाद्वीप' शब्दों पर काम शुरू किया, तब जल्दबाजी में उनके अर्थ नहीं बताए। मैंने विद्यार्थियों से कहा कि वे पुस्तक में ये शब्द ढूँढ़ें। बुनियादी साक्षरता स्तर से नीचे के विद्यार्थी पहले पन्ने पलटते रहे, और थोड़ा असमंजस में दिखे। फिर मैं उनके पास बैठी, और एक बार 'महासागर' शब्द पर उँगली रखकर कहा, "यह 'महासागर' है, इसे पहचानो!" इसके बाद उन्हें वही शब्द पूरे अध्याय में ढूँढ़ने और जहाँ-जहाँ मिले, वहाँ पेंसिल से नीचे रेखांकित करने को कहा। धीरे-धीरे वे अक्षरों और शब्द की बनावट से उसे पहचानने लगे, और हर बार मिलने पर उसे चिह्नित करते गए।

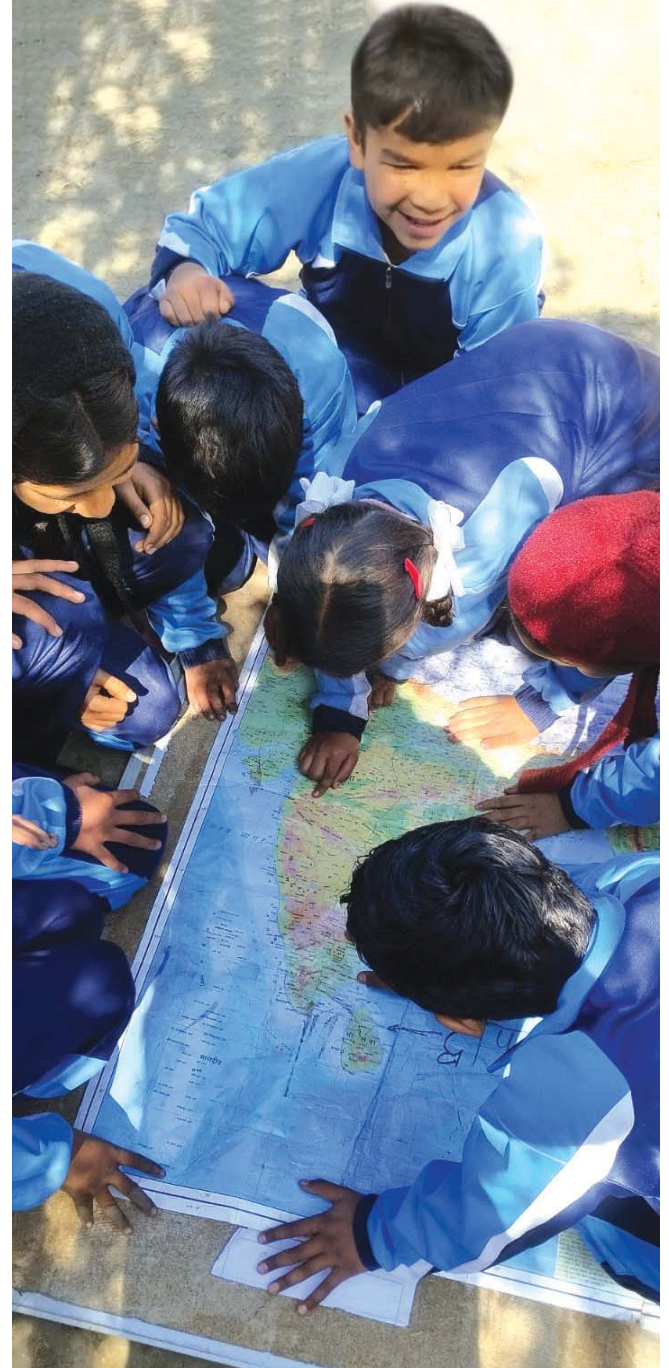
जब वे 'महासागर' पहचान में थोड़ा सहज हुए, उनके काम को छोटा-सा विस्तार दिया। उनसे कहा, "जो शब्द 'म' से शुरू होते हैं, उन्हें भी ढूँढ़ो!" अब वे केवल 'महासागर' तक सीमित नहीं रहे, बल्कि 'महाद्वीप', 'मानचित्र' जैसे अन्य शब्द भी देखने लगे। इससे उनके लिए अक्षरों की पहचान और शब्दों के पैटर्न को समझना एक खेल जैसा बन गया।

उसी समय, कक्षा के बाक्री विद्यार्थियों से पूछा, "महासागर और महाद्वीप में क्या अन्तर हो सकता है?" कुछ विद्यार्थियों ने अपने अनुभव से कहा, "समुद्र पानी होता है"; "महाद्वीप ज़मीन है।" इस तरह एक ही गतिविधि में बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थी शब्दों को खोजने, पहचानने और चिह्नित करने की प्रक्रिया से गुज़र रहे थे, जबकि अन्य उसी सामग्री के आधार पर शब्दों के अर्थ और अन्तर समझने की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। इसी तरह, अगले अध्याय पर बढ़ते हुए हमने पिछले अध्याय की तरह तालिका में 'शब्दों की दीवार' बनाई। यह प्रक्रिया प्रत्येक अध्याय के साथ आगे बढ़ती है जिसमें अध्याय में आए या सीखे गए नए शब्दों को विद्यार्थी तालिका में इस तरह आगे बढ़ाते हैं—

शब्द	अर्थ	वाक्य
महासागर	पृथ्वी की सतह पर विस्तृत जलाशयों को महासागर कहा जाता है।	महासागर तरह-तरह के जीव-जन्तुओं का घर है।
महाद्वीप		

मानचित्र के साथ काम करते समय यह भी स्पष्ट हुआ कि पढ़ना केवल अक्षरों या शब्दों को पढ़ना नहीं है। मैंने फ़र्श पर एक साधारण मानचित्र बनाया, और विद्यार्थियों को उसके चारों ओर बैठाया। बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थियों से कहा, "नीला ढूँढ़ो... यह क्या है?" वे 'पानी' कहते हुए उसे छूते। फिर उन्हें 'भारत' शब्द दिखाया और उन्हें ढूँढ़ने को कहा। वे धीरे-धीरे अक्षरों को पहचानते हुए उस शब्द तक पहुँचे। वहीं दूसरी ओर, अन्य विद्यार्थियों से पूछा, "कौन-सा महासागर सबसे बड़ा है, यह कैसे पता चलेगा?" वे मानचित्र को देखकर तुलना करने लगे, कुछ ने पुस्तक से मिलान किया, कुछ ने अपने तर्क दिए।

कक्षा में बातचीत धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी थी। जब हमने 'महासागर और जीवन' पर चर्चा की तब विद्यार्थियों से सीधा सवाल नहीं पूछा। केवल इतना कहा, "अगर कल से बारिश बन्द हो जाए तो क्या होगा?" कुछ विद्यार्थी तुरन्त बोलने लगे, "पानी खत्म हो जाएगा, खेती नहीं होगी।" बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थी पहले चुप रहे। फिर जब उनसे पूछा, "पानी होगा या नहीं?" तब उन्होंने धीरे से कहा, "नहीं होगा।" मैंने उसी जवाब को पकड़कर बातचीत को आगे बढ़ाया। बाक्री विद्यार्थियों से कारण और परिणाम बताने को कहा, जबकि बुनियादी साक्षरता वाले विद्यार्थियों को संक्षेप में अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित किया।



चित्र 2 : मानचित्र में नीले को ढूँढ़ते हुए महासागर की पहचान करते विद्यार्थी



“ यदि हम कक्षा को इस तरह रचें कि हर विद्यार्थी को सोचने, बोलने और लिखने का समय व अवसर मिले, तब कोई भी अध्याय धीरे-धीरे सभी विद्यार्थियों के लिए अर्थपूर्ण बन जाता है। ”

चित्र 3 : नई शब्दावलियों के परिचय से समझ का विस्तार करते विद्यार्थी

लेखन के समय भी यह ध्यान रखा कि सभी से एक जैसा काम न लिया जाए। जब विद्यार्थियों से कहा गया कि वे महासागर के बारे में लिखें तब कुछ विद्यार्थियों ने 3-4 वाक्य लिखे, जबकि बुनियादी साक्षरता पर काम करने वाले विद्यार्थियों को मैंने पुस्तक से एक पंक्ति ढूँढ़कर लिखने, या चित्र बनाकर उसके नीचे एक शब्द लिखने को कहा। वे धीरे-धीरे अक्षर जोड़ते, शब्द बनाते, और लिखने का प्रयास करते। यह लेखन भले छोटा था, पर उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि यह उनके अपने प्रयास से आया था।

पूरे अध्याय के दौरान महसूस किया कि सीखना तब गहराता है जब विद्यार्थियों को समय दिया जाता है—किसी शब्द पर रुकने का, उसे पहचानने, बोलने, और फिर उसे समझने का। एक ही विषय पर काम करते हुए बार-बार लौटना, किसी शब्द को अलग सन्दर्भ में देखना, किसी विचार को अलग तरीके से समझना, यही वह प्रक्रिया थी जिसने बुनियादी साक्षरता से जुड़े विद्यार्थियों को भी कक्षा में बनाए रखा।

अब वे दोनों विद्यार्थी, जो शुरुआत में केवल चुप रहते थे, कभी-कभी खुद से शब्द ढूँढ़ लेते हैं, किसी चित्र को देखकर कुछ कह देते हैं, या एक छोटा-सा वाक्य लिखने का प्रयास करते हैं। यह बदलाव बहुत बड़ा नहीं दिखता, लेकिन कक्षा के भीतर यह एक महत्वपूर्ण क्रम है। यदि हम कक्षा को इस तरह रचें कि हर विद्यार्थी को सोचने, बोलने और लिखने का समय व अवसर मिले, तब कोई भी अध्याय धीरे-धीरे सभी विद्यार्थियों के लिए अर्थपूर्ण बन जाता है। सामाजिक विज्ञान यदि केवल प्रश्नोत्तर और रटन्त तथ्यों तक सीमित रह जाए तो बुनियादी साक्षरता की प्रक्रिया वहीं ठहर जाती है। लेकिन यदि इसे अनुभव, कल्पना और चिन्तन से जोड़ा जाए तो वही विषय विद्यार्थियों की बुनियादी क्षमताओं को गहराई देता है। सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों को समाज से जोड़ता है, और बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान उन्हें उस समाज को समझने और अभिव्यक्त करने की क्षमता देता है। एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें इस दृष्टि से अपार सम्भावनाएँ समेटे हुए हैं।



कल्पना बिष्ट विगत 7 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रही हैं। वे उत्तराखण्ड में चमोली के कर्णप्रयाग ब्लॉक में कार्यरत हैं, और मुख्यतः सामाजिक विज्ञान विषय में काम करती हैं।

सम्पर्क : kalpana.bisht@azimpremjifoundation.org



शार्वरी सीखने लगी है

पवित्रा संतोष



बिखरे हुए, बिना कंघी किए बाल, चेहरा बस धुला हुआ-सा लग रहा था। मैली यूनिफ़ॉर्म में 8 साल की वह बच्ची कक्षा के दरवाजे पर आकर बोली, "मे आई कम इन मैम?"

सिर झुकाकर कुछ लिख रही शिक्षिका के पास इतना भी समय नहीं था कि उसे अन्दर बुलाएँ। उन्होंने बस "हूँ" कह दिया। वह आखिरी कतार के कोने में बैठ गई। उसकी आवाज़ से ही शिक्षिका जान गई थी कि वह कौन है। उनके मन में उस बच्ची के प्रति थोड़ा अनदेखी का भाव था और उसकी अस्वच्छता को लेकर झुंझलाहट भी। वह 'शार्वरी' थी...।

शार्वरी रोज़ाना जल्दी कक्षा में आती थी, उसके देरी से आने के उदाहरण बहुत कम थे। उस दिन उसके देरी से आने पर शिक्षिका को आश्चर्य तो हुआ, लेकिन उसके मेले कपड़ों और बिखरे बालों को लेकर नाराज़गी भी थी। उन्होंने देखा कि आज शार्वरी के चेहरे पर थोड़ी उदासी और घबराहट थी, उन्होंने उसे पुकारा—"शार्वरी..."

विद्यालय और शिक्षकों से गहरा लगाव रखने वाली शार्वरी, एक ही कदम में आखिरी कतार से कूदकर पहली कतार में आ खड़ी हुई। उसकी आँखों में अजीब-सी चमक थी! शिक्षिका ने उसके सिर पर स्नेह से एक धौल जमाते हुए कहा, "इतनी बार कहने पर भी तुम नहीं बदलती...। क्या तुम्हें ठीक से आने में कोई समस्या है? खैर... आज तुम साफ़-सुथरी आई हो।" फिर उन्होंने झिड़कते हुए पूछा, "बताओ देरी क्यों हुई?"

गदगद स्वर में शार्वरी रुक-रुककर उत्तर देने लगी :

"मिस... घर में मुझे विद्यालय के लिए तैयार करने वाला कोई नहीं है। माँ नहीं हैं मिस! बस पापा हैं। वे सुबह 6 बजे काम पर जाते हैं तो रात 9 बजे लौटते हैं। ऑटो चलाते समय कभी-कभी तो घर भी नहीं आते। मैं और छोटा भाई, हम दोनों अकेले ही रहते हैं। आज पड़ोस वाली आंटी के पास बाल बनवाने गई थी, इसलिए थोड़ी देर हो गई, सॉरी मिस", उसने कहा।

शिक्षिका कुछ पल मौन रही, और एक लम्बी आह भरते हुए बोली, "ओह... अच्छा, मुझे पता नहीं था, मुझे माफ़ कर दो बिटिया!"

"एक काम करो। तुम अपने पापा से कहकर अपने बाल थोड़े छोटे करवा लो। तुम्हें बाल सँवारना मैं सिखा दूँगी। फिर तुम हर दिन खुद तैयार हो सकोगी", वे मुस्कुराईं।

वहाँ से उन दोनों के बीच एक नया रिश्ता शुरू हुआ। अगले दिन शार्वरी साफ़ कपड़े पहनकर और अच्छे से तैयार होकर आई थी। उस दिन उसके पिता ने ही उसे तैयार किया था, क्योंकि पिछले ही दिन शिक्षिका ने उसके पिता को फ़ोन किया था।

शिक्षिका ने शार्वरी को पास बुलाया, और उसकी पीठ थपथपाई। अब तक कभी उसके बहुत करीब न आने वाली शिक्षिका ने जब उसके सिर पर हाथ फिराया तो उसकी खुशी दोगुनी हो गई। उसने बड़े उत्साह से कहा, "मिस, मेरा होमवर्क देखिए!"

शिक्षिका ने होमवर्क चेक किया और बस इतना कहा, "अच्छा, क्या तुम इसे एक बार पढ़ोगी?" उसके मन का आत्मविश्वास जाग उठा। वह एक ही लय में पढ़ने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे उसे अक्षरों की पहचान तो थी, लेकिन स्पष्ट पढ़ने में वह थोड़ी हिचकिचा रही थी। घर का माहौल पढ़ाई के अनुकूल नहीं था, और विद्यालय में डर की एक ऊँची दीवार खड़ी हो गई थी। शिक्षिका को साफ़ समझ आ गया कि अगर पढ़ाई में उसकी थोड़ी मदद की जाए तो वह एक बेहतरीन विद्यार्थी बन सकती है।

शिक्षिका ने उसके बैग की जाँच की। उसमें कोई नोटबुक नहीं मिली। शिक्षिका ने विद्यालय के पुस्तकालय में ज़रूरतमन्द विद्यार्थियों के लिए एक छोटी-सी दुकान बनाई थी जहाँ नोटबुक, पेंसिल, रबर, आदि मिलते थे। वे उन विद्यार्थियों को यह चीज़ें देती थीं जिन्हें

इनकी ज़रूरत होती थी। उन्होंने वहाँ से नोटबुक निकालकर शार्वरी के बैग में रख दी, और कहा कि अगर वह अक्षरों को सुन्दर लिखेगी तो उसे उपहार मिलेगा। शिक्षिका का उसे इतना समय देना, और इतनी आत्मीयता से पेश आना शार्वरी के जीवन में एक बड़ा बदलाव लेकर आया। शिक्षिका के इस साथ से शार्वरी ने पढ़ाई में रुचि दिखाई और लगन के साथ पढ़ना-लिखना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसकी लिखावट में सुधार दिखने लगा, और शिक्षिका उसे प्रोत्साहन देने लगीं।

एक दिन शाम को जब शार्वरी घर जा रही थी तब शिक्षिका ने कहा, "रुको, मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर आती हूँ।" उसे आश्चर्य हुआ और थोड़ी हिचक भी हुई! रास्ते भर शिक्षिका ने उसे शिक्षा का महत्त्व समझाया, और उन महिला-पुरुषों की कहानियाँ सुनाई जिन्होंने कठिनाइयों में भी सफलता पाई। घर पहुँचकर उन्होंने उसके पिता से बात की, और उन्हें बेटी को समय देने को कहा। उन्होंने बच्ची के साथ मिलकर उसके पढ़ने के कोने में विभिन्न चार्ट व्यवस्थित करके लगाए। शार्वरी से कहा कि उसे हर दिन यहीं बैठकर पढ़ना और लिखना है। समय के साथ शार्वरी की पढ़ाई में रुचि बढ़ती गई। शिक्षिका हैरान थीं कि बहुत कम समय में उसने स्पष्ट रूप से पढ़ना और लिखना सीख लिया। उसकी रुचि और बढ़ाने के लिए उन्होंने पुस्तकालय से छोटी कहानियों की किताबें उसे दीं, और कहा कि जब भी घर में मन न लगे तो इन्हें पढ़ा करे। उस दिन से किताबें उसकी सबसे अच्छी दोस्त बन गईं।

शार्वरी गणित में भी आगे थी। पहले, सवाल सही करने के बावजूद शिक्षकों के डर से वह कभी कॉपी दिखाने नहीं जाती थी। लेकिन अब वह सबसे पहले सवाल हल करके दौड़कर आने लगी। इस तरह वह हफ्ते में दो बार क्लास लीडर भी बनी।

विद्यालय में हर महीने अभिभावक सभा (Parent Meeting) होती थी, लेकिन शार्वरी के पिता कभी नहीं आए थे। इस बार शिक्षिका ने खुद फ़ोन करके उसके पिता को अनिवार्य रूप से आने को कहा। इसका एक कारण था। हर महीने की सभा में क्रम से एक-एक विद्यार्थी को 'स्टार ऑफ़ द मंथ' मिलता था। इस बार शार्वरी की बारी थी। स्टार पाने के बाद उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उस दिन से उसकी शिक्षा की गति और तेज़ हो गई। वह पाठ्येतर गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेने लगी। वह पढ़ाई में पीछे रहने वाले विद्यार्थियों की भी खुले मन से मदद करने लगी।

अब तक उसके मैले कपड़ों और उलझे बालों के कारण यह मान लेना कि "इसे कुछ नहीं आता" की वजह से उसकी अनदेखी करना और कभी न बुलाने की बात याद कर शिक्षिका ने दुःख से सिर झुका लिया।

अपनी गलती का एहसास होने पर उन्होंने शार्वरी से गम्भीरता से माफ़ी माँगी। वे पछताते हुए बोलीं, "ओह, मैंने कितनी बड़ी गलती कर दी! सिर्फ़ उसका बाहरी रूप देखकर फ़ैसला कर लिया कि उसे कुछ नहीं आता।"

शिक्षिका का उदास चेहरा देखकर शार्वरी चहकते हुए बोली, "मिस, मिस, मुझे गाना भी आता है!"

"अच्छा! गाकर सुनाओ।" शिक्षिका ने कहा।

शिक्षिका के कहते ही शार्वरी ने बहुत सुरीली आवाज़ में एक गीत गाया। गाना सुनकर शिक्षिका की उदासी छूट गई, और वह मन्द-मन्द मुस्कुराने लगीं।

उन्होंने मन-ही-मन तय किया कि अब वे साथी शिक्षकों के साथ मिलकर बाहरी चेहरा, वेशभूषा, रहन-सहन, पारिवारिक पृष्ठभूमि को किनारे रख सभी विद्यार्थियों के प्रति समान और मानवीय व्यवहार की विद्यालयी संस्कृति को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगी।

पवित्रा संतोष, शिक्षिका, सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय हेल्बगोडी, अनेकल तालुक, बेंगलूर दक्षिण, कर्नाटक

विद्यार्थियों द्वारा धाराप्रवाह पढ़ने से बढ़ने लगा नामांकन

विजय निराला



रीडिंग कॉर्नर कोई कोना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की किताबों से दोस्ती का मंच है। किताबें विद्यार्थियों के लिए दुनिया को देखने की खिड़कियाँ खोलती हैं। इसी विचार से प्रेरित होकर मैंने विद्यालय में अपनी सहयोगी के सामने इस तरह की पहल का प्रस्ताव रखा। हमारा उद्देश्य स्पष्ट था—विद्यार्थी अपने भाषाई कौशल यहाँ आजमाएँ, और नए कौशल विकसित कर पाएँ। खासकर, वे खुद से पढ़ने की आदत विकसित कर सकें। हम दोनों को यह काम उत्साह देने वाला लगा। पहले धीरे-धीरे काम शुरू हुआ, और फिर गति पकड़ गया।

आज हमारे विद्यालय में बाल साहित्य की 450 किताबें हैं। इनमें गढ़वाली लोक कथाएँ, *बरखा सीरीज़* के हिन्दी और गढ़वाली संस्करण, *बिल्ली के बच्चे*, *बस पाँच मिनट*, *लालू और पीलू*, *भालू ने खेले फुटबॉल*, *गणित की पहेलियाँ*, और चित्र पुस्तकें आदि शामिल हैं। जैसे-जैसे हम काम करते गए, पुस्तकालय सीखने-सिखाने का केन्द्र बनता गया। विद्यार्थियों में पढ़ने की होड़-सी पैदा हो गई। जब यह नियमित हो गया तब इसके संचालन की ज़िम्मेदारी भी विद्यार्थियों को दी गई। समय-समय पर अलग-अलग विद्यार्थी पुस्तकालय प्रभारी होते हैं। यह ज़िम्मेदारी वे बखूबी निभा रहे हैं। जब कोई किताब फट जाती है, या उसे मरम्मत की ज़रूरत होती है तब उसे किताबों के अस्पताल भेजा जाता है। यानी विद्यार्थी उसको ठीक करते हैं। जो किताब उन्हें अधिक पसन्द होती है, या जो किताब बार-बार इशू हो रही है, उसको दुरुस्त करने के लिए वे अधिक तत्परता दिखाते हैं। *चिटकू*, *मुँहपटक* और *धरपटक*, *अम्मा सबकी प्यारी अम्मा*, आदि ऐसी ही कुछ किताबें हैं। कक्षा 5 के विद्यार्थी अमूमन विद्यालय आने के बाद ये काम करते हुए मिल ही जाएँगे। इसी के साथ वे छोटे विद्यार्थियों के साथ मिलकर भी ये काम करते हैं। छोटे विद्यार्थियों में इस तरह से ज़िम्मेदारी का भाव भी जाग रहा है।

हमने हर दिन चौथा कालखण्ड पढ़ने की घण्टी के लिए सुनिश्चित किया है। यानी इस कालखण्ड में खुले मन से पढ़ना है। यह काम किसी और कालखण्ड या ख़ाली समय पर नहीं छोड़ा जाता। यहाँ विद्यार्थी जिस तन्मयता से पढ़ने लगे, हमें भी उनके साथ काम करते हुए मज़ा आने लगा। यह देखना बहुत सुखद था कि पढ़ना सीख गए विद्यार्थी, पढ़ना सीख रहे विद्यार्थियों की मदद कर रहे थे। किताबें विद्यार्थियों की पहुँच में थीं, और बैठने की अच्छी व्यवस्था की गई थी। वे अपनी पसन्द की किताब चुनते, और पढ़ने के लिए बैठ जाते। इस सबसे विद्यालय का माहौल ही बदल गया। हमारे लिए भी काम करने का माहौल बन गया। अब हम गुणवत्ता के लिए काम कर रहे हैं। यानी विद्यार्थी समझ के साथ पढ़ना तो करें ही, लिखने के लिए भी उत्साह दिखाएँ।

हालाँकि, हमारे लिए भी यह प्रयोग नया था, लेकिन हममें भी सीखने का उत्साह ही उत्साह था, जितना विद्यार्थियों में। विद्यार्थियों से उनकी पसन्द की किताबों पर बात की जाती। उनकी राय को धैर्य के साथ सुना जाता। कोई विद्यार्थी किताब पर टिप्पणी करना चाहता तो उसे प्रोत्साहित किया जाता। मसलन, अनीता ने बताया कि उसे *राजा की मुँछें* किताब इसलिए मज़ेदार लगी क्योंकि इसमें खुद की तारीफ़ करने वाले घमण्डी राजा की हरकतों से कई हास्यास्पद घटनाएँ घटती हैं। इसी के साथ विद्यार्थियों का कहानी में आए नए शब्दों व उनके अर्थ से परिचय करवाया जाता। अब वे धैर्य, आत्ममुग्धता, सहानुभूति जैसे शब्दों के अर्थ समझने लगे हैं। साथ ही विद्यार्थियों की नए शब्दों को लिखने की आदत बन गई। सीधे अर्थ बताने की बजाय उनसे अनुमान लगाने को कहा जाता। उदाहरण के लिए, कहानी पढ़ते हुए किसी पेज की आखिरी लाइन पढ़ने के बाद विद्यार्थियों से अनुमान लगाने को कहना कि अगले पेज पर इस कहानी की अगली पंक्ति क्या होगी। उनकी राय से ही किताबों की लेबलिंग की गई। चित्रों पर ज़रूर बात होती। कई बार चित्र पर बातचीत का सिलसिला ही काफ़ी लम्बा हो जाता। यह बातचीत महज़ चित्रों में दिखने वाली चीज़ों और घटनाओं के बारे में नहीं होती, बल्कि इससे विद्यार्थी अपने परिवेश व जीवन सन्दर्भ को नए नज़रिए से देख-सोच पाते। रीडिंग कॉर्नर में चित्र बनवाने का काम भी हो रहा था। कुछ शब्दों में कहानी कहना, कहानी को छोटा करके लिखना, शब्दों से कहानी बनाने का अभ्यास, सुनने की आदत का विकास, आदि काम किए गए। रोल प्ले करने के लिए विद्यार्थियों के साथ मिलकर मुखौटे, वेशभूषा, आदि सामग्रियाँ बनाई गईं।

विद्यार्थी सुबह की सभा, प्रतिभा दिवस, आदि मौकों पर अपनी पढ़ी गई कहानी को प्रस्तुत करने लगे। इससे उनमें कहने का हुनर विकसित हुआ, और मंच पर प्रस्तुति का आत्मविश्वास आया। हम भी यह कोशिश करते कि विद्यार्थियों के साथ बातचीत में उनकी पढ़ी गई किताबों के सन्दर्भ आ सकें।

विद्यार्थी किताबें इशू कराके अपने साथ घर भी ले जाने लगे। इससे अभिभावकों में भी विद्यालय की एक अच्छी छवि बनी। इसका प्रभाव आस-पास के बच्चों और अभिभावकों पर भी पड़ा। हमारे विद्यालय को 'पढ़ने वाला विद्यालय' की पहचान मिली, और अभिभावक अपने बच्चों का दाखिला यहाँ कराने के लिए पूछताछ करने लगे।

तीन साल पहले हमारे विद्यालय में 16 विद्यार्थी थे। विद्यालय की बदलती छवि के बाद यह संख्या 42 तक पहुँच गई। बाल साहित्य का इस्तेमाल विद्यार्थियों के अलावा समुदाय भी कर सके, इसके लिए भी प्रयास किए हैं। अब प्रतिदिन 5-7 लोग विद्यालय से किताबें इशू करवाते हैं। उनकी पसन्द की किताबों में *पंचतंत्र की कहानियाँ* और गढ़वाली लोक कथाएँ शामिल हैं। वार्ड मेम्बर को भी हमने इस पहल से जोड़ा है। एक स्थानीय दवा विक्रेता ने भी हमारे विद्यालय को बाल साहित्य की किताबें दान में दी हैं। यदि सीखने के प्रतिफलों की बात करूँ तो कक्षा 5 के 11 विद्यार्थियों में से 10 धाराप्रवाह पढ़ लेते हैं, और अपने पढ़े हुए को समझा लेते हैं। कक्षा 4 के 11 में से 8 विद्यार्थी समझ के साथ पढ़ लेते हैं, जबकि अन्य कक्षाओं के विद्यार्थी भी बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। मैं नियमित तौर पर उनके सीखने की प्रगति का आकलन करता हूँ। यह सन्तोष का विषय है कि विद्यार्थी कुशल पाठक तो बन ही रहे हैं, वे कहानियों से जीवन मूल्य भी ग्रहण कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, बिना सोचे-समझे किसी का अनुसरण न करें, मुसीबत में साहस व धैर्य से काम लें, आदि। अब वे खुद से कहानी बनाने लगे हैं। पढ़ने की घण्टी के समय वे खुद की लिखी कहानी एक दूसरे को पढ़वाते हैं। उनमें अवलोकन करने, सराहने और अपनी तरफ़ से टिप्पणी करने की चाह बढ़ी है।

विजय निराला, शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय रविग्राम, चमोली, उत्तराखण्ड

हर बच्चा सीख सकता है, आवश्यक है सही आकलन

प्रियंका चोपड़ा



विद्यालयों में कुछ ऐसे विद्यार्थी होते हैं, जिनके बारे में यह मान लिया जाता है कि वे सीख नहीं सकते। मसलन, ऐसे विद्यार्थी हमेशा शैतानी करते हैं, ध्यान से सुनते-पढ़ते नहीं हैं, कक्षा में व्यवधान पैदा करते हैं, आदि। इस पर मेरे मन में कुछ सवाल आते हैं। जैसे—क्या विद्यार्थियों के बारे में इस तरह की पूर्वधारणाएँ बना लेना सही है; क्या उनके इस तरह के व्यवहार के पीछे के कारणों का पता लगाना, और धैर्य के साथ उनका समाधान करना शिक्षक की ज़िम्मेदारी नहीं है; विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर को उनकी सामाजिक पहचान से जोड़कर कहीं हम उन्हें और अधिक पीछे तो नहीं धकेल रहे; आदि।

अपने विद्यालय में इसी तरह के एक विद्यार्थी रघुवीर से मेरी मुलाकात हुई। वह अभी 11 साल का है, और कक्षा 5 में पढ़ रहा है। विद्यालय नियमित आता है। शुरुआत में दूसरे शिक्षकों और उसके सहपाठियों को यह लगता था कि रघुवीर सीखने में कमज़ोर है। यहाँ तक कि उसे खुद को भी यही लगने लगा था। कक्षा में जब कभी कोई प्रश्न पूछा जाता तो बताने की कोशिश नहीं करता, बल्कि वह दूसरे विद्यार्थियों के उत्तर आने का इन्तज़ार करता। अभ्यास पुस्तिका में प्रश्न हल करते समय वह अन्य विद्यार्थियों के उत्तर देखने का प्रयास करता, और बिना सोचे-समझे उनको सीधा ही लिख लेता। उसने अपनी यह आदत तब तक नहीं बदली जब तक उसे यह विश्वास नहीं दिला दिया गया कि अन्य विद्यार्थियों का उत्तर भी ग़लत हो सकता है और उसका सही।

हालाँकि, शुरुआती दिनों में मुझे भी यही लगा था कि अन्य विद्यार्थियों की तुलना में उसकी सोचने-समझने की क्षमता कम है, लेकिन क्या उसे मन्दबुद्धि या पढ़ने में कमज़ोर कहना उचित है? कुछ प्रशिक्षणों से जुड़कर यह समझ आया कि विद्यार्थियों को लेबल किया जाना ठीक नहीं होता है। नकारात्मक लेबल किए जाने से विद्यार्थी कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं, और उनकी आन्तरिक प्रेरणा ख़त्म होने लगती है।

मैंने रघुवीर के क्रियाकलापों का ध्यान से अवलोकन करना शुरू किया, और पाया कि अपनी बात को रखने का उसका अपना एक अलग तरीका है। ध्यान दिया कि वह अपनी बात तब तक व्यक्त नहीं करता जब तक वह आश्वस्त नहीं हो जाता कि उसे सुना जा रहा है। दरअसल उसके आस-पास होने वाली बातचीत, "रघुवीर तो धीरे-धीरे सीखता है"; "दिमाग़ से थोड़ा कमज़ोर है"; ने उसके मन को उदास कर दिया था। वह अपने विचार रखने का आत्मविश्वास खो चुका था।

उसकी मनःस्थिति को समझने के लिए मैंने पढ़ाई के अलावा दूसरे बिन्दुओं पर भी उससे मध्याह्न भोजन के दौरान बातचीत करनी शुरू की। जैसे—विद्यालय से जाने के बाद वह घर पर क्या करता है; कहाँ घूमने जाता है; उसे क्या पसन्द है; आदि। धीरे-धीरे उसकी हिचक कम होने लगी, और वह मुझसे थोड़ी-थोड़ी बात करने लगा। वह बताता कि उसे इलेक्ट्रॉनिक चीज़ों से खेलना बहुत पसन्द है। वह इंजीनियर बनना चाहता है। जब उसे पढ़ाई में परेशानी आती है, उसका दोस्त प्रवीण उसकी मदद करता है। जब वह मुझसे बात करने में सहज हुआ तब कक्षा में उसकी सक्रियता भी बढ़ने लगी। मैंने उसे यह कहकर प्रोत्साहित किया कि तुमको जैसा आता है, तुम अपनी बात रखो। साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रखा कि कक्षा का कोई विद्यार्थी रघुवीर के बारे में कोई नकारात्मक टिप्पणी न करे। थोड़ा समय लगा लेकिन धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास लौटने लगा, और अन्य विद्यार्थियों की तरह वह भी प्रश्न पूछने लगा और अपने अनुभव प्रकट करने लगा। सत्र पूरा होते-होते वह प्रार्थना सभा के दौरान कविताएँ, पहेलियाँ, कहानियाँ, आदि सुनाने के लिए स्वतः ही आगे आने लगा। इससे शिक्षक व अन्य विद्यार्थियों का उसके प्रति नज़रिया बदलने लगा।

कक्षा शिक्षण के दौरान कई ऐसी घटनाएँ हुईं जिनसे मेरा यह विश्वास पक्का हुआ कि रघुवीर बाकी विद्यार्थियों की तरह ही सामान्य बुद्धि का बालक है।

एक दिन मैं गणित में परिमाप व क्षेत्रफल का अध्याय पढ़ा रही थी। बोर्ड पर एक बड़े आयत की आकृति में छोटे-छोटे वर्ग बनाकर क्षेत्रफल समझाने की कोशिश कर रही थी। इस दौरान अन्तिम पंक्ति में बने वर्ग, आयत जैसे बन गए। इनमें इतना सूक्ष्म अन्तर था कि अन्य विद्यार्थियों की तरह मेरा ध्यान भी उस तरफ़ नहीं गया। जब अन्तिम पंक्ति में बने आयत को मैंने वर्ग के रूप में गिना तो रघुवीर ने कहा, "मैम, ये वर्ग नहीं आयत हैं।" मैंने उन्हें ग़ौर से देखा तब समझ आया कि मुझसे क्या ग़लती हो रही है। रघुवीर ने बहुत सूक्ष्म निरीक्षण किया था।

शुरुआत में रघुवीर प्रार्थना सभा में कहानी-कविता सुनाने में हिचकता था। एक दिन प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी की कविताएँ हाव-भाव के साथ सुनाने का अवसर दिया गया। इस पर वह धीरे से खड़ा हुआ, और सबके सामने आकर उसने हाव-भाव के साथ कविता गाई। हालाँकि वह बीच में थोड़ा अटका भी, लेकिन मैंने उसकी मदद की और उसने पूरी कविता सुना दी। इस पर बाकी विद्यार्थियों ने उसके लिए तालियाँ बजाईं। स्टाफ़ के शिक्षकों ने भी रघुवीर की तारीफ़ की।

रघुवीर के व्यवहार और अपेक्षित रूप से नहीं सीख पाने के पीछे के कारणों पता चलने लगा। जैसे—कक्षा के बाकी विद्यार्थियों और उसके बीच सीखने का अन्तर। इससे पढ़ाई जाने वाली नई चीज़ें उसके लिए ज़्यादा चुनौतीपूर्ण हो गईं। वह कक्षा में सिखाई जा रही विषयवस्तु के साथ जुड़ नहीं पाता था।

कालान्तर में शिक्षकों के सहयोगपूर्ण रवैए से उसके व्यवहार में बदलाव आया। कक्षा में अब वह सक्रियता से भाग लेता है, समस्या समाधान का प्रयास करता है, तथा विद्यालय में होने वाली सामूहिक गतिविधियों में भी शामिल होता है।

प्रियंका चोपड़ा, शिक्षिका, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मारखेड़ा, टोंक, राजस्थान

विद्यार्थियों पर विश्वास जताने से आया बदलाव

सत्यवती



जब मैंने शासकीय प्राथमिक शाला गोढ़ी की कक्षा 4 का कार्य सँभाला, कक्षा में कुल 9 विद्यार्थी नामांकित थे। बाहर से देखने पर कक्षा सामान्य लगती थी, पर भीतर एक अजीब-सा ख़ालीपन और चुप्पी थी। विद्यार्थियों की आँखों में जिज्ञासा कम और संकोच अधिक दिखाई देता था। सत्यपाल, सुनयना और कुसुमकला ऐसे विद्यार्थी थे जो नियमित रूप से विद्यालय नहीं आते थे। कभी-कभी जब वे आते भी तो कक्षा की किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेते थे। चुपचाप बैठे रहते। न किताब खोलते, न लिखते, और न ही किसी से बात करते। उस समय मुझे यह स्पष्ट दिख रहा था कि समस्या विद्यार्थियों में नहीं, बल्कि उस वातावरण में है जिसमें वे स्वयं को असुरक्षित और अस्वीकृत महसूस कर रहे हैं।

पिछले साल मैंने शिक्षक-अभिभावक संघ की बैठक में पठन-पाठन से जुड़ा एक खुला कोना बनाने का विचार साझा किया था। इसमें माताएँ भी शामिल थीं। इस कोने में विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार चित्र बनाते, कविता लिखते, छोटी-छोटी कहानियाँ गढ़ते, और समूह में मिलकर गतिविधियाँ करते थे। उस अनुभव से मुझे यह समझ में आया कि जब विद्यार्थियों को स्वतंत्रता और भरोसा मिलता है तो वे स्वयं सीखने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। उसी अनुभव के आधार पर मैंने कक्षा 4 में भी बदलाव करने का निर्णय लिया।

शुरुआत में यह तय किया कि इन विद्यार्थियों को बदलने से पहले उन्हें समझना ज़रूरी है। मैंने खुद से कहा कि यदि मैं उन्हें बार-बार रोकूँ-टोकूँ या ज़बरदस्ती पढ़ाने का प्रयास करूँ तो सम्भव है वे और दूर हो जाएँ। इसलिए मैंने उन्हें स्वतंत्र छोड़ने का निर्णय लिया। मैंने उनसे यह अपेक्षा नहीं रखी कि वे तुरन्त पढ़ाई में लग जाएँ। मेरा उद्देश्य एक ऐसी कक्षा बनाना था, जहाँ विद्यार्थी बिना डर के आ सकें, बैठ सकें, और स्वयं को स्वीकार्य महसूस कर सकें।

मैं रोज़ कक्षा में जाती और विद्यार्थियों के पास बैठ जाती। कभी उनसे हल्की-सी बात करती, कभी बस मुस्कुरा देती। यदि कोई विद्यार्थी पूरे समय शान्त बैठा रहता तो उसे टोकती नहीं थी। धीरे-धीरे मैंने उनकी रुचियों को समझना शुरू किया। कोई विद्यार्थी केवल दूसरों को देखना चाहता था, कोई चित्र बनाना पसन्द करता था, तो कोई दोस्तों के साथ बातें करना। मैंने इन सभी व्यवहारों को स्वाभाविक मानकर स्वीकार किया, क्योंकि मेरा लक्ष्य पढ़ाई थोपना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को विद्यालय से जोड़ना था।

कक्षा में मैंने समूह कार्य को बढ़ावा दिया ताकि विद्यार्थी एक दूसरे से सीख सकें। जब विद्यार्थी एक दूसरे के साथ काम करते हैं तो वे अधिक सहज होते हैं, और अपनी बात कहने का साहस जुटा पाते हैं। मैंने यह भी देखा कि जब विद्यार्थियों को विषय-आधारित कॉपी कार्य में तुरन्त नहीं बाँधा गया तो उनमें रचनात्मकता उभरने लगी। वे विषय के प्रश्नों के उत्तर रटने की बजाय अपने शब्दों में सोचने और अभिव्यक्त करने लगे।

यह प्रक्रिया आसान नहीं थी। कई अवसर ऐसे भी आए जब कोई विशेष बदलाव दिखाई नहीं देता था, पर मैंने धैर्य और विद्यार्थियों के प्रति अपना प्रेम और सहयोग लगातार बनाए रखा। कुछ समय बाद देखा कि सत्यपाल, सुनयना और कुसुमकला अब पहले की तुलना में अधिक नियमित रूप से विद्यालय आने लगे हैं। जो विद्यार्थी पहले कक्षा में चुपचाप बैठे रहते थे, अब आस-पास हो रही गतिविधियों को देखने, समझने और उनमें शामिल होने लगे थे। यह बदलाव था तो छोटा, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण था।

धीरे-धीरे विद्यार्थियों में ज़िम्मेदारी का भाव आने लगा। वे अब केवल उपस्थित नहीं रहते थे, बल्कि अपने कार्य को स्वयं करने का प्रयास करने लगे थे। एक दिन उनसे कहा कि वे अपनी इच्छा से कुछ भी लिख सकते हैं—कोई अनुभव, कोई घटना या कोई कहानी। मैंने स्पष्ट कर दिया कि इसमें सही-गलत का कोई डर नहीं है। यह सुनकर छत्रपाल ने स्वयं आगे बढ़कर कॉपी खोली, और लिखना शुरू कर दिया। यह वही विद्यार्थी था जो पहले लिखने से भी बचता था।

छत्रपाल ने मकर संक्रांति पर आधारित एक कहानी लिखी। उसने लिखा कि त्योहार के दिन घर में कैसा माहौल था; कैसे सुबह से ही उत्साह था; और फिर वह अपने दोस्तों के साथ घूमने गया। उसने बताया कि वे सब साथ में घूमते-घूमते दुकानों तक पहुँचे जहाँ उन्हें चॉकलेट भी मिली। उसने आगे लिखा कि त्योहार के अवसर पर पिकनिक रखी गई थी जिसमें सभी दोस्तों ने दाल, चावल और स्थानीय भाजी मिलकर खाई। उसकी कहानी में यह बात साफ़ थी कि भोजन से अधिक उसे दोस्तों के साथ होने का आनन्द याद था।

जब उसने अपनी कहानी पूरी की तो वह स्वयं चलकर मेरे पास आया, और अपनी कॉपी दिखाई। उस क्षण मुझे महसूस हुआ कि जिस विद्यार्थी को कभी विद्यालय आने में भी रुचि नहीं थी, वही अब अपने अनुभवों को शब्दों में ढाल पा रहा है। यह परिवर्तन किसी एक दिन में नहीं आया था, बल्कि निरन्तर प्रेम, स्वतंत्रता, समूह कार्य और विश्वास से विद्यार्थियों का साथ देने का परिणाम था।

इस पूरे कार्य के दौरान मैं स्वयं भी लगातार पढ़ती और सीखती रही। विशेष रूप से लेखक ए एस नील की लिखी पुस्तक *समरहिल* ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। इस पुस्तक को बार-बार पढ़ना और समझना मेरे लिए विद्यार्थियों को पढ़ाने से पहले अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ।

आज जब अपनी कक्षा को देखती हूँ तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि जब शिक्षक स्वयं सीखता रहता है, और विद्यार्थियों के साथ प्रेम व विश्वास के रिश्ते में जुड़ा रहता है तो उनमें व्यावहारिक ही नहीं, बल्कि शैक्षणिक परिवर्तन भी स्वाभाविक रूप से दिखाई देने लगता है। यह अनुभव मेरे लिए यह विश्वास और मज़बूत करता है कि एक बेहतर कक्षा अनुशासन से नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, समझ और निरन्तर प्रेम से बनती है।

सत्यवती, शिक्षिका, प्राथमिक शाला गोढ़ी, रायगढ़, छत्तीसगढ़



कहानी शिक्षण और प्रिंट रिच कक्षा से भाषा शिक्षण में आया बदलाव : सुषमा खाखा

गुरु प्रसाद



सुषमा खाखा

झारखण्ड के गुमला ज़िले के जंगल क्षेत्र में एक विद्यालय है—नव प्राथमिक विद्यालय, सरनाटोली। इस गाँव में 21 घर हैं जिनमें कुड्डुख जनजाति के लोग रहते हैं। गाँव में रोज़गार के बहुत कम साधन हैं, इस वजह से लोगों को अकसर पलायन करना पड़ता है। शिक्षिका सुषमा खाखा सरनाटोली विद्यालय में पढ़ाती

हैं। उन्होंने कविता-कहानी शिक्षण और प्रिंट रिच कक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के भाषाई कौशलों के विकास पर अच्छा कार्य किया है। इसका विद्यार्थियों के पढ़ने-लिखने पर सकारात्मक असर पड़ा है। उनके काम और काम करने के तरीके को लेकर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी गुरु प्रसाद ने उनसे बातचीत की। प्रस्तुत हैं कुछ अंश :

गुरु प्रसाद : सुषमाजी, अपने और अपने विद्यालय बारे में कुछ बताइए।

सुषमा : सरनाटोली विद्यालय की स्थापना 2003 में हुई थी, तभी से यहाँ बतौर शिक्षिका कार्यरत हूँ। मैं इसी क्षेत्र की रहने वाली हूँ। मेरी पढ़ाई भी गुमला में हुई है। हमारे विद्यालय में पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई होती है। शुरुआत में, मैं यहाँ एकमात्र शिक्षिका थी। जंगल और दूरी होने के कारण इस गाँव के दो-चार विद्यार्थी ही बगल के गाँव में पढ़ने जाते थे। अब हमारे विद्यालय में 28 विद्यार्थी हैं। नए नामांकन लगातार जारी हैं, पिछले साल निजी विद्यालय से 7 विद्यार्थियों ने हमारे विद्यालय में प्रवेश लिया है।

गुरु प्रसाद : आपके शिक्षण कार्य की यात्रा कैसी रही है?

सुषमा : शुरुआत में बहुत ही कम संसाधन में पढ़ाना होता था। अब तो गाँव में लोग कुछ-न-कुछ पढ़े-लिखे हैं। वे घर और गाँव में कुड्डुख और नागपुरी में ही बात करते हैं। मैं अपने कक्षा शिक्षण में विद्यार्थियों द्वारा बोली जाने वाली मातृभाषा का खुलकर उपयोग करती हूँ, लेकिन विद्यार्थियों को हिन्दी का अनुभव विद्यालय में ही मिलता है। पहले, मेरी पूरी कोशिश के बावजूद, कक्षा 4 और 5 के कुछ ही विद्यार्थी होते थे जो हिन्दी में किसी तरह बात कर पाते थे। मैं सन्तुष्ट नहीं हो पा रही थी।

अभी आप देख सकते हैं कि सभी कक्षाओं के विद्यार्थी पढ़-लिख पाते हैं। पूर्व प्राथमिक में बच्चे भी सरल शब्दों को पहचान लेते हैं।

गुरु प्रसाद : यह कैसे सम्भव हुआ है, अब ऐसा क्या किया जो पहले नहीं होता था?

सुषमा : पहले मैं पुराने तरीके से पढ़ना-लिखना सिखाती थी। जैसे-पहले वर्ण और मात्रा सिखाना, फिर बिना मात्रा के छोटे शब्द पढ़ना-लिखना सिखाना, आदि। मैं पाठ्यपुस्तक की कहानी या कविता को एक बार पढ़ा देती थी, और विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के सवाल-जवाब करा देती थी। मैं समझती थी कि विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना आ जाएगा तो वे भाषा सीख जाएंगे। इसलिए उनके मौखिक भाषा विकास पर ध्यान नहीं देती थी। साथ ही, मेरा ध्यान उन्हीं विद्यार्थियों पर रहता था जो जवाब देते थे। पाठ्यपुस्तक के पाठों को पूरा करना ही मेरे लिए पढ़ाना था।

किन्तु 2023 में 'प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण' विषय पर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सहयोग से एक कार्यशाला आयोजित हुई थी। वहाँ मेरी समझ बनी कि कैसे सभी विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने और बोलने में सक्षम बनाया जा सकता है। यह आइडिया मिला कि विद्यार्थियों की मातृभाषा और कविता व कहानियों को हिन्दी भाषा सीखने का माध्यम बनाना ज़रूरी है, क्योंकि विद्यार्थी कहानी सुनना-सुनाना और कविता गाना पसन्द करते हैं। साथ ही, वे मातृभाषा में अपनापन महसूस करते हैं। बस, मैंने अपने पढ़ाने के तरीकों में बदलाव किया।

गुरु प्रसाद : थोड़ा विस्तार से बताइए कहानियों को शिक्षण का आधार कैसे बनाया?

सुषमा : विद्यार्थियों में बोलने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से मैंने कक्षा के अतिरिक्त सुबह की सभा में बोलने के अवसर बनाए। इसके लिए पिछले दिनों पढ़ी कहानी को आधार बनाया। सोचा कि विद्यार्थी क्यों न अपनी घर की भाषा और हिन्दी को मिलाकर कहानी-कविता सुनाएँ, अपनी बातें कहें। उद्देश्य था, उन्हें बोलने के ज़्यादा-से-ज़्यादा मौक़े देना।

एक उदाहरण देकर बताती हूँ। कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक की कहानी 'नटखट बन्दर' और चंपक पत्रिका की कहानी 'किसान और तीन बेटे' हैं। यह कहानियाँ विद्यार्थियों ने पढ़ी हैं, और उन

पर चर्चा भी हुई है। अब विद्यार्थियों को सुबह की सभा में भी बोलना होता है। यह निर्धारित होता है कि किस दिन कौन-से विद्यार्थी यह कहानी सुनाएँगे।

विद्यार्थियों से कहानी की घटनाओं, पात्रों, आदि पर चर्चा कराती हूँ। उसके बाद चर्चा या पाठ में आए शब्दों पर काम कराती हूँ। मिसाल के तौर पर, कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक में 'मैं भी' कहानी है। उसमें 'चूजा' शब्द आया है। 'नटखट बन्दर' में 'नटखट' शब्द है। ऐसे शब्दों को विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाती हूँ, या खुद लिख देती हूँ। अब इन शब्दों की पहली ध्वनि से मिलते-जुलते शब्दों को सोचकर बोलने को कहती हूँ। मसलन, चूजा में प्रथम ध्वनि 'चू' है और नटखट में 'न'। विद्यार्थी 'चू' से चूना, चूहा, चूरन, आदि शब्द बोलते हैं। इन शब्दों को बोर्ड पर लिखने का अभ्यास करवाती हूँ। देखा कि विद्यार्थी इसमें रुचि लेने लगे हैं। इन शब्दों को चार्ट पेपर पर लिखकर दीवार पर लगाने लगी हूँ।

गुरु प्रसाद : सुषमाजी, इस प्रक्रिया को क्या कोई योजना बनाकर करती हैं?

सुषमा : जी, पहला चरण होता है-कहानी के चित्रों, पात्रों, घटनाओं, आदि पर चर्चा करना; चित्रों, शीर्षक तथा कहानी की घटनाओं पर सवाल (जैसे-बन्दर पेड़ से कूदकर कहाँ जाएगा) के ज़रिए अनुमान लगवाना; कहानी पढ़कर सुनाना; आदि। फिर विद्यार्थियों को अपने अनुभव या सुनी अथवा पढ़ी कहानी को सुबह की सभा में सुनाने को कहती हूँ।

दूसरे चरण में कहानी को एक या दो बार हाव-भाव के साथ पढ़कर सुनाती हूँ। विद्यार्थी मेरे साथ अपनी-अपनी पाठ्यपुस्तक की कहानी की पंक्तियों पर उँगली रखकर पढ़ते जाते हैं। इस काम में वे एक दूसरे की मदद करते हैं। जब वे अपरिचित या कठिन शब्दों को नहीं समझ पाते हैं तब उन्हें उदाहरण के साथ अर्थ समझाती हूँ। उनसे कहानी का सार पूछती हूँ। साथ में मनपसन्द पात्रों के चित्र बनाने का काम होता है।

तीसरे चरण में कहानी में आए नए शब्दों पर काम कराती हूँ। उन्हें बोर्ड पर लिखती हूँ। विद्यार्थियों से बोलती हूँ कि ये शब्द पाठ में कहाँ-कहाँ हैं, खोजो। कभी-कभी पुस्तकों और दीवार पर लिखे शब्दों में भी समान ध्वनि वाले शब्दों को ढूँढ़वाती हूँ। जैसे-बालू भालू आलू / लकड़ी मकड़ी ककड़ी, आदि। इस खेल में वे खूब मज़ा लेते हैं। विद्यार्थियों के साथ मिलकर कई कहानियों के पोस्टर भी बनाए हैं।

गुरु प्रसाद : मगर बिना वर्ण-मात्रा सिखाए विद्यार्थी पढ़ना कैसे सीख जाते हैं?

सुषमा : चर्चा से उभरी बात तो वाक्य में ही होती है। जब वाक्य का अर्थ एक स्तर पर समझने लगते हैं तब वाक्य से मुश्किल अर्थ वाले शब्द छॉटती हूँ, और उन पर काम कराती हूँ। इस तरह मैं वर्णों को जोड़-जोड़कर सिखाने की जगह सीधे शब्दों को सिखाती हूँ। शब्दों में आई ध्वनि को अलग कराती हूँ; जैसे-चर्चा में आए 'नदी' शब्द से न और दी अलग कराती हूँ। फिर न से और दी से नए शब्द बनवाती हूँ। विद्यार्थी कुछ इस तरह से शब्द बनाते हैं-न से ननकु, नकुल और दी से दीदी, दीवार, आदि। इस तरह वे धीरे-धीरे मात्राओं को सीख जाते हैं। वर्णों और मात्राओं को जोड़-जोड़कर पढ़ने के बजाय शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों को समग्र से रूप से पढ़ने को कहती हूँ। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थी कुछ शब्दों को अर्थ के अनुमान से भी पहचान लेते हैं। मैं शब्दों को कहानी और उस पर हुई चर्चा से ही लेती हूँ। वे शब्द विद्यार्थियों के लिए अनजान नहीं होते हैं।

जब विद्यार्थी बहुत सारे शब्द समझकर पढ़ने लगते हैं, वे दो से तीन सरल शब्दों वाले वाक्य भी पढ़ने लगते हैं। पहली कक्षा में एक पाठ है-'तीन साथी'। यह कहानी हाथी, बकरी और चिड़िया के आपसी सहयोग पर आधारित है। इसका पहला वाक्य है-"एक था हाथी"। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को 'हाथी' शब्द सिखाना है, मगर वे बोल और पढ़ तो रहे हैं पूरा वाक्य। इस तरह से वे अर्थ के अनुमान से वाक्य को बोलना और पढ़ना



चित्र 1 : कक्षा के प्रिंट रिच वातावरण में खुशी से सीखते, बातें करते बच्चे

सीखते हैं। आगे चलकर वे वाक्य के सभी शब्द पहचानने और पढ़ने-लिखने लगते हैं।

गुरु प्रसाद : आप पाठ्यपुस्तक के पाठों में दी गई कहानियों के अलावा कहानियों को कैसे चुनती हैं?

सुषमा : विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप कहानियों का चुनाव करती हूँ। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों के लिए अधिक चित्र और कम टेक्स्ट या शब्दों व वाक्यों के दोहराव वाली कहानियों का चुनाव करती हूँ। जैसे-‘चूहे को मिली पेंसिल’, ‘प्यासी मैना’, ‘रूपा हाथी’, आदि। कक्षा 3 और 4 के लिए ‘चिटकू’, ‘सपू के दोस्त’, आदि जैसी थोड़ी बड़ी कहानियाँ चुनती हूँ।

गुरु प्रसाद : सुषमाजी, कुछ लोग कहते हैं कि पाठ्यपुस्तक के पाठों को ही पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता है तो आप ऐसा कैसे कर पाती हैं?

सुषमा : पहले मैं भी ऐसा ही सोचती थी, मगर अब नहीं। विद्यार्थियों को भाषा सीखने के जितने ज़्यादा मौक़े और पठन सामग्री मिलेगी, वे उतनी ही अच्छी तरह से सीखते हैं। रोज़ाना दिन में 2 से 3 बजे तक कहानी पढ़ने का समय निर्धारित है। पढ़ी-सुनी कहानियों को नाटक के रूप में ढालकर उनका मंचन भी कराती हूँ। ‘ऊँट और सियार’, ‘नटखट बन्दर’ तथा ‘चटपट और पेंसिल’ कहानी पर विद्यार्थियों ने खुशी-खुशी नाटक किया था। इसके पीछे उद्देश्य है कि विद्यार्थी कहानी से संवाद बनाना सीखें। संवाद में कई तरह के वाक्य बनाने और बोलने होते हैं। मंच पर सबके सामने पात्रों के अनुरूप अभिनय करना भी उनके अभिव्यक्ति कौशल के लिए उपयुक्त है। और ये सारे भाषाई कौशल पाठ्यपुस्तकों के साथ विद्यार्थियों को आसानी से जोड़ते हैं, इसीलिए पाठ्यपुस्तकों के लिए समय की कोई कमी मुझे महसूस नहीं होती। बस, ठीक तरह से रणनीति बनाने की ज़रूरत होती है।

गुरु प्रसाद : यह कैसे जान पाती हैं कि किस विद्यार्थी को क्या-क्या सीखने की ज़रूरत है?

सुषमा : कक्षा 1 से 4 में कक्षावार विद्यार्थियों की संख्या अधिकतम 7 से 8 ही रहती है। इसलिए एक-एक विद्यार्थी की स्थिति पता रहती है। जब उनसे बातचीत हो रही होती है तब देखती हूँ कि कौन-कौन विद्यार्थी चर्चा में भाग ले रहा है; किस तरह के शब्द और वाक्य बोल रहा है; कैसे बोल रहा है; क्या हिन्दी में बोल पा रहा है; बोलने में प्रवाह है या नहीं; इत्यादि। जब पढ़ने का अभ्यास कराती हूँ तब कौन प्रवाह से; कौन रुक-रुककर पढ़ता है; कौन पढ़कर समझ पा रहा है; किसको अभी मात्राओं की दिक्कत हो रही है; आदि। इसी तरह

शब्द, वाक्य लिखते समय पता चल जाता है कि कौन लिखने के किस स्तर पर है। ये अवलोकन सीखने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। विशेषकर आगे पढ़ाने के तरीक़े, शिक्षण में उपयोग किए जा रहे टीएलएम या चर्चा के विषय के बारे में फ़ीडबैक मिल जाता है कि वह कितना उपयोगी रहा है; क्या सुधार करना है; आदि।

मैं यह तो नहीं कहती हूँ कि हमारे विद्यालय के सभी विद्यार्थी धाराप्रवाह पढ़ना-लिखना सीख गए हैं, लेकिन इतना ज़रूर कह सकती हूँ कि ज़्यादातर विद्यार्थी स्तर अनुसार शब्द, वाक्य और अनुच्छेद पढ़-लिख पा रहे हैं, और सबके सामने बोल पा रहे हैं।

गुरु प्रसाद : यह जो कक्षा में प्रिंट दिख रहा है, उसे आपने कैसे तैयार किया है; उसका क्या उपयोग है?

सुषमा : ये सभी पढ़ाने के समय ही बनते हैं। यहाँ छोटे-छोटे पेज पर भी विद्यार्थियों की हैंडराइटिंग में कहानी और कविताएँ लगी हुई हैं। हमारे सहयोग से यह सब विद्यार्थी स्वयं करते हैं। वे इन लिखी-छपी रचनाओं को पढ़ते हैं तब उन्हें अच्छा लगता है। वे एक दूसरे को पढ़ने में मदद करते हैं। हम लोग भी पढ़ने के अभ्यास के रूप में इस प्रिंट का उपयोग करते हैं।

गुरु प्रसाद : काम में कुछ चुनौतियाँ भी आती होंगी, उनका समाधान कैसे करती हैं?

सुषमा : पहली चुनौती तो यह कि कभी-कभी विद्यार्थी अनुपस्थित हो जाते हैं, इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। हम ऐसे विद्यार्थियों के घर जाते हैं, या अभिभावकों से सम्पर्क करते हैं। मगर खेती-बाड़ी, शादी-ब्याह या पर्व-त्योहार के समय उन्हें विद्यालय लाना मुश्किल हो जाता है।

चूँकि मैं प्रभारी प्रधानाध्यापिका हूँ, इसलिए दूसरी चुनौती है पढ़ाई के साथ समय पर कई विभागीय कार्य पूरे करना। ज़रूरत पड़ने पर पुस्तकालय, शिक्षण सामग्री व विद्यार्थियों के सहयोग से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया जारी रखती हूँ। मेरे सहयोगी शिक्षक भी शिक्षण की प्रक्रिया में मदद करते रहते हैं। तीसरी चुनौती भवन को मरम्मत की आवश्यकता है। छत से पानी टपकता है। विद्यार्थियों को बैठाने की समस्या आ जाती है। पढ़ाई-लिखाई भी बाधित हो जाती है। गाँव के लोग गरीब हैं, वे सहयोग नहीं कर पाते, बस सरकारी मदद की आस रहती है।

गुरु प्रसाद : पढ़ाने के इन तरीक़ों से आपकी क्या समझ बनी?

सुषमा : मैंने बहुत कुछ सीखा है, और सीख रही हूँ। मातृभाषा, कहानी और कविता की मदद से हिन्दी भाषा शिक्षण करने से विद्यार्थी न सिर्फ़ बेहतर ढंग से सीखते हैं, बल्कि हम शिक्षकों को भी फ़ायदा हो रहा है।



गुरु प्रसाद 30 वर्षों से विद्यालयी शिक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रमों से जुड़कर पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण और शिक्षकों-प्रशिक्षकों के क्षमता विकास के लिए कार्य करते रहे हैं। 13 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। वर्तमान में राँची, झारखण्ड में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : guru.sharma@azimpremjifoundation.org



बचपन में संविधान : बच्चों के लिए लोकतंत्र की पहली पाठशाला

समीक्षा : प्रिया

बच्चों को संविधान पढ़ाना क्यों ज़रूरी है? अकसर यह सवाल सुनते ही लोग चौंक जाते हैं। संविधान को हम एक गम्भीर और भारी-भरकम किताब मानते हैं जिसे वयस्कों या क़ानून पढ़ने वालों के लिए ही ज़रूरी समझा जाता है। लेकिन क्या लोकतंत्र की असली बुनियाद की समझ बच्चों को छुटपन से ही नहीं मिलनी चाहिए? क्या उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि बन्धुता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और मानवीय गरिमा जैसी बातें केवल किताबों में लिखी नहीं, बल्कि ये जिए जाने वाले मूल्य हैं।

इसी दिशा में एक प्रयास है सचिन कुमार जैन की किताब *बचपन में संविधान*। यह किताब बच्चों को संविधान के नज़दीक लाने की कोशिश करती है, ताकि वे इसे बोझ न मानें, बल्कि अपने अनुभवों और संवेदनाओं से जोड़कर समझ सकें।

किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि इसमें संविधान के जटिल विषयों को कहानियों और छोटे प्रसंगों में ढालकर बच्चों की दुनिया से जोड़ा गया है। किताब में लोकतंत्र, एकता, धर्मनिरपेक्षता या बन्धुता जैसे विषय भाषणों की तरह नहीं आते, बल्कि रोज़मर्रा के क्रिस्सों में उतरते हैं। भाषा सहज है, और कठिन क़ानूनी शब्दों से परे।

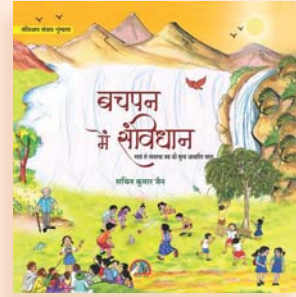
पढ़ते हुए सबसे अच्छा हिस्सा लगता है 'आत्मचिन्तन की व्यवस्था'। हर अध्याय के अन्त में तालिकाएँ और सवाल हैं जो बच्चों को सोचने पर मजबूर करते हैं—वे खुद से पूछें कि उन्होंने क्या सीखा, उन्हें क्या महसूस हुआ, और वे अपने जीवन में कौन-से बदलाव ला सकते हैं? 'मुझे महसूस हुआ!', 'बदलाव खुद से', 'मेरा साहस' और 'सुनने की कला' जैसे अध्याय बच्चों में मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता और आत्मविश्वास जगाने की कोशिश करते हैं। यह स्पष्ट झलकता है कि लेखक चाहता है कि संविधान केवल पढ़ाई का हिस्सा न रहे, बल्कि विद्यार्थियों के अनुभव और व्यवहार का हिस्सा बने।

किताब का महत्त्व इस बात में भी है कि यह सिर्फ़ विद्यार्थियों के लिए नहीं, बल्कि शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी एक मार्गदर्शक बन सकती है। किताब उन्हें यह सोचने की दिशा देती है कि संविधान जैसे गम्भीर विषयों को बच्चों तक किस तरह पहुँचाया जा सकता है।

हाँ, पढ़ते समय कुछ बातें ध्यान में रखने लायक भी हैं। जैसे—कभी-कभी यह साफ़ नहीं होता कि किताब सीधे बच्चों के लिए है या वयस्कों के लिए। आत्मचिन्तन तालिकाओं में पहले से तय उत्तर बच्चों की स्वतंत्र सोच को कुछ हद तक सीमित कर सकते हैं। कुछ क्रिस्से क्षेत्र विशेष से जुड़े हैं जिन्हें हर बच्चा तुरन्त नहीं समझ पाएगा। साथ ही, प्रूफ़रीडिंग की छोटी त्रुटियाँ और मौलिक अधिकारों पर कम चर्चा भी खटक सकती है।

लेकिन इन बातों को आलोचना की जगह पाठक के लिए सावधानियाँ मानना बेहतर होगा। यदि शिक्षक या अभिभावक बच्चों के साथ बैठकर इसे पढ़ाएँ, तालिकाओं पर चर्चा करें, और क्रिस्से-कहानियों को उनकी दुनिया से जोड़ें तो यह किताब बेहद असरदार साबित हो सकती है।

पुस्तक को पढ़ने के बाद जब कक्षा 5 के बच्चों के साथ 'लोकतंत्र' पर चर्चा की, तब अनुभव बेहद रोचक रहा। शुरुआत में 'लोकतंत्र' और 'संविधान' जैसे शब्द बच्चों के लिए कुछ धुँधले थे, लेकिन जब बात घर, विद्यालय व दोस्तों के बीच निर्णय और भागीदारी की आई तो उनके चेहरों पर समझ की चमक दिखी। बच्चों ने साझा निर्णय, सुनने की आदत और सबको मौक़ा देने जैसे कई नए पहलू



लेखक : सचिन कुमार जैन

पृष्ठ संख्या : 172

आयु वर्ग : 8 वर्ष से ऊपर

भाषा : हिन्दी

प्रकाशक : विकास संवाद समिति, भोपाल

रखे। इस अनुभव से महसूस हुआ कि जब बच्चों को सही सन्दर्भ और अवसर दिए जाएँ, तो वे लोकतंत्र को केवल शब्द नहीं, व्यवहार के रूप में समझने लगते हैं—और यही इस किताब की सबसे बड़ी खूबी है कि यह संवाद को जन्म देती है।

कुल मिलाकर, *बचपन में संविधान* बच्चों के लिए लोकतंत्र की पहली पाठशाला बन सकती है। किताब हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि संविधान सिर्फ वयस्कों के लिए नहीं, बल्कि बच्चों की जिन्दगी का भी हिस्सा होना चाहिए। यह बताती है कि संविधान को हम क्रिस्सों-कहानियों, सवालों और आत्मचिन्तन के ज़रिए बच्चों तक पहुँचा सकते हैं। यही बात इसे पढ़ने और सहेजने लायक बनाती है।

प्रिया उत्तरप्रदेश के नोएडा क्षेत्र में स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में शिक्षण से जुड़ी हैं। वे बच्चों की भाषा, कल्पना एवं सृजनात्मकता के विकास के लिए कार्य करती हैं।

यह रंग मेरा है!

समीक्षा : शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता

यह रंग मेरा है! नाम की यह किताब प्री-स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए बहुत आकर्षक ढंग से डिज़ाइन की गई है जिसमें रंग-बिरंगे चित्र हैं। चित्रों पर आधारित यह किताब मुख्य रूप से अवधारणाओं पर केन्द्रित है और उन बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है जिन्होंने अभी तक खुद से पढ़ना-लिखना शुरू नहीं किया है। किताब बच्चों को चित्रों के ज़रिए उनके आस-पास की दुनिया से परिचित कराती है। ऐसी दुनिया जिसमें वे नए शब्द, विचार और अवधारणाएँ सीखते हैं। जैसे—रंग, आकृति, संख्याएँ, समानार्थी शब्द, विलोम शब्द, आदि। इस किताब में वास्तविक दुनिया की तस्वीरें और जानकारियाँ दी गई हैं। ये जानकारियाँ उन बच्चों के मन में, जो अभी खुद से पढ़ नहीं सकते, इस बात का उत्साह जगाती हैं कि वे उन चीज़ों को पहचानें जिन्हें उन्होंने पहले देखा है, या जिनसे वे जुड़े रहे हैं। यह किताब बच्चों के पास पहले से मौजूद ज्ञान को और भी मज़बूत बनाती तथा उसकी पुष्टि करती है।

बच्चे अपने आस-पास के माहौल से जानी-पहचानी चीज़ों और जीवों (जैसे—तोता, टमाटर, गाजर, जलेबी, बैंगन, कुत्ता, गाय, आदि) के रंगों के नाम सीखते हैं, और उन्हें रंगों के आधार पर समूह में बाँटने का तरीका भी समझते हैं। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि चीज़ों और जीवों को कई तरीकों, जैसे—सजीव और निर्जीव; फल और सब्ज़ियाँ, वगैरह—से अलग-अलग श्रेणियों में बाँटा जा सकता है जिनमें उनका रंग भी शामिल है। इस तरह, रंगों की दुनिया की खोज शुरू होती है। हर पन्ना एक नए रंग के साथ खुलता है। जब बच्चे किन्हीं खास रंग की चीज़ों और जीवों के चित्रों को देखते हैं तो उन्हें उसी रंग की और भी चीज़ें जोड़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जो उन्हें अपने आस-पास दिखाई देती हैं। इससे रंगों को पहचानने की उनकी क्षमता और भी ज़्यादा मज़बूत होगी।

बच्चों के लिए लिखी गई अन्य अच्छी किताबों की तरह यह किताब भी बच्चों को जानी-पहचानी चीज़ों से अनजान चीज़ों की ओर बहुत आसानी से ले जाती है। हो सकता है कि उन्होंने अभी तक व्हेल के बारे में न सुना हो, लेकिन जब उनसे किताब के पन्ने पर बनी छोटी मछली को देखने, और उसकी तुलना में व्हेल की कल्पना एक बहुत बड़ी मछली के रूप में करने के लिए कहा जाता है तब वे आसानी से ऐसा कर पाते हैं।



लेखिका और चित्रकार : नैसी राज

अनुवाद : सुषमा रोशन

पृष्ठ संख्या : 20

आयु वर्ग : 2-5 साल

भाषा : हिन्दी, कन्नड़ और 7 अन्य भाषाएँ

प्रकाशक : तूलिका बुक्स

उनसे यह पूछना कि क्या उन्होंने कभी किसी इल्ली (caterpillar) को चलते हुए देखा है, और फिर उन्हें चित्र में उसका मुड़ा हुआ शरीर दिखाना; ऐसा करने से हो सकता है कि कुछ बच्चे उसे एक ऐसे कीड़े के रूप में पहचान लें जिसे उन्होंने पहले देखा है। इस तरह बारीकियों पर ध्यान देने की यह आदत उन्हें धीरे-धीरे अपने आस-पास की चीजों को और भी बारीकी से देखना सिखा देगी। हो सकता है कि बच्चे अपनी घरेलू भाषा में इल्ली को सूँडी, डिम्ब या लार्वा जैसे किसी और नाम से जानते हों; ऐसे में, वे उस चीज़ और नाम के बीच सम्बन्ध जोड़ पाएँगे, और इस तरह नए शब्द सीख पाएँगे।

बच्चों को बोलने और कहानी से जोड़ने का एक और तरीका यह है कि कोई-सा भी पत्रा खोलकर उनसे किसी चीज़ को पहचानने के लिए कहा जाए। क्या इस पत्रे पर कोई फिरकी (pinwheel) है? हो सकता है कि शुरु में वे 'नहीं' में जवाब दें। लेकिन जब वे ध्यान से देखेंगे तब उन्हें पता चलेगा कि पौधे पर खिले फूल असल में फिरकियाँ ही तो हैं! ज़रा सोचो, अगर पौधों पर फिरकियाँ उगतीं तो कैसा होता? तुम क्या करते? जब बच्चे फिरकियों को तोड़कर, उन्हें तेज़ी से घूमते देखने के लिए उनके साथ दौड़ने के बारे में सोचते हैं तब उनके सामने कल्पनाओं का संसार खुल जाता है। लड़के के अलावा, ऐसी कौन-सी एक चीज़ है जो हर पत्रे पर सूरज का हाव-भाव अलग होता है; वह हैरानी से लेकर नाराज़गी, फिर गुस्सा और आखिर में मज़ाकिया अन्दाज़ में बदलता रहता है। तुमको कब हैरानी / उदासी / गुस्सा / मज़ा आता है? इस तरह के सवाल पूछने से बच्चे अपनी भावनाओं के बारे में बात करना सीखते हैं, और यह भी समझते हैं कि ऐसा करना बिल्कुल ठीक है। सूरज के बारे में इससे जुड़े कई और विषयों पर भी चर्चा की जा सकती है। जैसे-दिन का उदय कैसे होता है, और रात कैसे ढलती है; सूरज कैसे दुनिया को रोशनी से भर देता है, और उसकी गैर-मौजूदगी हमें अँधेरे में कैसे डुबो देती है; आदि।

प्री-स्कूल के बच्चे इस किताब की ओर खिंचे चले आएँगे। वे बार-बार इसके चित्रों को देखेंगे, उन्हें पढ़कर सुनाई गई बातों को दोहराएँगे, और हो सकता है कि आखिर में वे अपनी खुद की कहानियाँ भी गढ़ने लगें। हर बार पत्रे पलटते समय उन्हें कुछ-न-कुछ नया देखने को मिलेगा। यानी, एक ऐसी गाजर जिसने समुद्री डाकू जैसी आँखों पर पट्टी (आई पैच) लगाई हुई है; जलेबियों से भरा एक स्कूल बैग; या फिर एक ऐसा पौधा जिस पर आइसक्रीम के कोन उग रहे हैं।

इसके चित्र इतने मज़ेदार और अनोखे हैं कि वे बच्चों को इस किताब से जोड़े रखने में ज़रूर कामयाब होंगे। ज़रा सोचिए, एक करेला सोफ़े पर आलस से पसरा हुआ है, या फिर एक व्हेल स्ट्रॉ से 'मछली' वाला शरबत पी रही है।

इस किताब को 'टोका बॉक्स टॉप साउथ एशियन बुक' का पुरस्कार मिला है, और इसे 'वैली ऑफ़ वड्स' पुरस्कार के लिए बनाई गई सूची में भी शामिल किया गया था।

अंग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

शोफ़ाली त्रिपाठी मेहता अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु की कम्युनिकेशन और पब्लिकेशन टीम की सदस्य, तथा पाठशाला भीतर और बाहर की सह सम्पादक हैं।



गतिविधि 1 : राइमिंग रश



चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

यह गतिविधि प्री-स्कूल के बच्चों के लिए उपयोगी है। इसके ज़रिए सुनने की कुशलता और आवाज़ पहचानने की क्षमता बेहतर होती है। प्री-स्कूल के बच्चे शब्दों की ध्वनियों को समझने, कहानियों में तुकबन्दियों (rhymes) को पहचानने और उत्साह के साथ बातचीत करने में काफ़ी अच्छे होते हैं।

समूह का आकार : 10 से 20 बच्चों का समूह हो सकता है।

प्रक्रिया : बच्चे गोल घेरे में बैठाए जाते हैं। हर बच्चे को एक चित्र कार्ड दिया जाता है जिस पर कोई आसान-सा शब्द (जैसे—cat, pen, fun, आदि) लिखा होता है (चित्र का होना ज़रूरी नहीं है)।

शिक्षक एक बच्चे को एक कार्ड देते हैं। अगर वह कार्ड बच्चे के पास पहले से मौजूद कार्ड से मिलता-जुलता है (rhyme करता है) तो वे कहते हैं, "मैच हो गया!" और दोनों मिलते-जुलते शब्दों को पढ़कर बताते हैं। मसलन, 'sun' और 'fun', 'cat' और 'hat', आदि। अगर कार्ड मैच नहीं होता है तो वे कहते हैं, "मैच नहीं हुआ!" और वह कार्ड अगले बच्चे को दे देते हैं।

बच्चों को यह खेल खेलने में बहुत मज़ा आता है। वे मौज-मस्ती करते हुए सीखते हैं, और अगर उनसे कोई ग़लती हो भी जाती है तो वह उतनी बड़ी नहीं लगती, जितनी कि कोई पाठ पढ़ते समय या कागज़-पेंसिल वाला कोई अभ्यास करते समय लगती है। यह गतिविधि भावना नायक ने साझा की है। वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन धमतरी, छत्तीसगढ़ की ईसीसीई टीम में कार्यरत हैं।

गतिविधि 2 : हमारे आस-पास के लोग

यह गतिविधि कक्षा 3 और उससे ऊपर की कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

उद्देश्य : यह गतिविधि विद्यार्थियों को समुदाय में विभिन्न प्रकार की आजीविका में लगे लोगों और उनके काम को देखने तथा उनके बारे में अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके साथ ही, यह उनमें विभिन्न लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्यों के प्रति सम्मान की भावना भी पैदा करती है।

इस गतिविधि को शुरू करने से पहले विद्यार्थियों को बताएँ कि आजीविका का आशय क्या है। उन्हें हर तरह के काम के महत्त्व, और हमारे जीवन से उसके जुड़ाव के बारे में बताएँ। इससे विद्यार्थियों में हर पेशे के प्रति सम्मान की भावना पैदा होगी।

विद्यार्थियों से कहें कि :

1. वे विद्यालय जाते समय अलग-अलग पेशों में लगे लोगों को ध्यान से देखें। उदाहरण के लिए, सब्जी बेचने वाला, कपड़े सिलने वाला, ट्रैफ़िक पुलिसवाला, आदि।

- वे उन पेशों के नाम बताएँ, और यह भी बताएँ कि वे लोगों को कौन-सी सेवा प्रदान करते हैं। मिसाल के तौर पर, कपड़े सिलने वाला दर्जी, जिसे कई जगह टेलर या मास्टरजी कहते हैं, वह लोगों के नाप के अनुसार कपड़े सिलता है। इसके अलावा, वे झोला, सीट कवर, आदि जैसी कुछ उपयोगी चीजों की सिलाई भी करते हैं।
- वे एक पेशा चुनें, और कक्षा को बताएँ कि वह पेशा लोगों के लिए क्यों और कैसे महत्वपूर्ण है। और अगर वह व्यक्ति उस काम को न करे तो क्या होगा?
- यदि कोई ऐसा पेशा है जिसके बारे में विद्यार्थी और अधिक जानना चाहते हैं तो वह कौन-सा है? साथ ही, वे उस व्यक्ति से कौन-से पाँच सवाल पूछना चाहेंगे?



चित्रांकन : शिवेन्द्र पाडिया

शिक्षक, विद्यार्थियों द्वारा चुने हुए कुछ लोगों से मिलने का कार्यक्रम बना सकते हैं, और विद्यार्थियों को उनसे मिलवाकर, उनके सवालों के जवाब दिलवा सकते हैं। शिक्षक अलग-अलग काम करने वाले एक या दो लोगों को विद्यालय में बुलाकर, उनसे उनके काम के बारे में बात करने को भी कह सकते हैं।

यह गतिविधि चन्द्रिका मुरलीधर ने साझा की है। वे अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बंगलूरु में कम्युनिकेशन और पब्लिकेशन टीम में कार्यरत हैं। उनकी विज्ञान शिक्षा में विशेष रुचि है।

गतिविधि 3 : मेरी संख्या पता करो ?

यह गतिविधि कक्षा 5 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। यह रणनीति बनाने वाली गतिविधि है जो गणित से जुड़ी है। इससे विद्यार्थियों में गणित की तरह से सोचने-समझने की शक्ति बढ़ती है।

आसान स्तर :

शिक्षक किसी एक विद्यार्थी से कहते हैं कि वह स्वेच्छा से आगे आकर वॉलंटियर बने। वह कक्षा के सामने आता है। इस विद्यार्थी को एक संख्या (जैसे कि 1 से 100 के बीच की कोई एक संख्या) सोचनी होती है, और शिक्षक को फुसफुसाकर बतानी होती है। बाक़ी विद्यार्थियों को यह नहीं पता होता कि उस विद्यार्थी ने कौन-सी संख्या को चुना है।

कक्षा के बाक़ी विद्यार्थी उस वॉलंटियर से सवाल पूछते हैं ताकि वे उस संख्या का अन्दाज़ा लगा सकें जो वॉलंटियर ने चुनी है।

नियम :

- पूछे जाने वाले सवाल ऐसे होने चाहिए जिनका जवाब सिर्फ़ 'हाँ' या 'नहीं' में दिया जा सके।
- जवाब खोजने की कोशिश करते समय वे सीधे तौर पर किसी संख्या का नाम नहीं ले सकते। जैसे—क्या चुनी गई संख्या 65 है, आदि।

चूँकि यह रणनीति बनाने वाला खेल है, इसलिए इसमें संख्या का पता लगाने से ज़्यादा ज़रूरी सही सवाल पूछकर 'रणनीति बनाना' है।

शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सभी सवालों और वॉलंटियर के जवाबों को ब्लैकबोर्ड पर लिखते रहते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ सवाल ऐसे हो सकते हैं : क्या यह संख्या 20 से बड़ी है; क्या यह 40 से छोटी है; क्या यह 20-30 के बीच है; आदि।

शिक्षक हर सवाल को पिछले सवालों से जोड़ते हुए सवालों और जवाबों को सही तरीके से रखते हैं। इससे विद्यार्थियों को सोचने और अगला सवाल बनाने में मदद मिलती है।

इस तरह, विद्यार्थी सही या ज़रूरी सवाल पूछने के तर्क पर आपस में चर्चा करते हैं, और सही जवाब तक पहुँचते हैं। मसलन, जब यह सवाल पूछा जाए कि क्या यह संख्या 20-30 के बीच है, और उसका जवाब 'नहीं' हो तब आगे यह पूछना बेकार होगा।

कि क्या यह 30 से बड़ी है, क्योंकि यह सवाल विद्यार्थियों को सही जवाब की ओर आगे नहीं बढ़ाएगा।

कठिन स्तर

इस स्तर पर शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा जवाब तक पहुँचने के लिए पूछे जा सकने वाले सवालों की संख्या सीमित कर देते हैं। जैसे कि वे केवल 7 सवाल पूछ सकते हैं। इससे विद्यार्थी कम-से-कम सवालों में सही जानकारी निकालने के लिए कारगर सवाल पूछना सीखते हैं।

शिक्षक उनके साथ इस बात पर भी चर्चा कर सकते हैं कि जब सवालों की संख्या सीमित हो तो कुछ खास तरह के सवाल पूछना, जवाब तक पहुँचने का एक कारगर तरीका क्यों नहीं है। ऐसे सवाल 'बेकार' माने जाते हैं। उदाहरण के लिए, 1 से 100 तक की संख्याओं वाले किसी सवाल में यह पूछना बेकार होगा कि वह संख्या विषम है या सम, क्योंकि यह संख्याओं के समूह को बस दो अलग-अलग, बराबर हिस्सों में बाँट देता है। नतीजतन, यह सवाल न तो जवाब खोजने के दायरे को सही तरीके से कम करता है न ही विद्यार्थियों को सही जवाब के करीब ले जाता है। इसके बजाय, अगर यह पूछा जाए कि क्या यह संख्या 1 और 50 के बीच है तो यह उन्हें सही जवाब के करीब ले जाने में मदद करेगा, क्योंकि अगर जवाब 'हाँ' है तो विद्यार्थी के लिए सही जवाब तक पहुँचने में आसानी हो जाती है। अगर जवाब 'नहीं' है तब भी वे सही जवाब के करीब ही होते हैं, क्योंकि इसका मतलब है कि सही जवाब 50 और 100 के बीच है।

यह गतिविधि कृतिका ने साझा की है जो अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बंगलूरु की कम्युनिकेशन टीम में कार्यरत हैं। उनकी कम्यूटेशनल थिंकिंग में गहरी रुचि है।

अँग्रेजी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।



चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया



सम्पादक के नाम

कक्षा को समावेशी और जीवन्त बनाती है पीयर लर्निंग

पाठशाला भीतर और बाहर के अंक 27 में छपा शमीम भाटी का लेख 'सीखने की एक प्रभावी पद्धति है पीयर लर्निंग' सहपाठी शिक्षण की उपयोगिता को संवादात्मक और व्यावहारिक तरीके से प्रस्तुत करता है। लेख केवल सिद्धान्त की बात नहीं करता, बल्कि कक्षा के वास्तविक उदाहरणों जैसे गिनती सीखना, कहानी बुनना, स्कूल ट्रिप की योजना बनाने, आदि के माध्यम से बात रखता है। इसमें बताया गया है कि कैसे विद्यार्थी बिना शिक्षक के सहयोग के एक दूसरे से सीखते हुए अपनी गलतियों में सुधार करते हैं। यह उन सभी शिक्षकों के लिए ज़रूरी लेख है जो अपनी कक्षा को अधिक समावेशी और जीवन्त बनाना चाहते हैं।

अमित शर्मा, सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय मऊखेड़ा, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

विषयों पर काम करते हुए विद्यार्थियों के भाषाई विकास पर ध्यान ज़रूरी

अंक 27 में प्रकाशित श्वेता विश्वकर्मा का लेख 'विविध विषयों पर काम करते हुए भाषाई दक्षताओं का विकास' भाषा की पढ़ाई में कमज़ोर विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में वृद्धि करने के उपाय बताता है। इसमें सुझाया गया है कि भाषाई कौशलों में पीछे रह गए विद्यार्थियों को शिक्षण के दौरान बीच-बीच में पाठ पढ़वाए जाएँ ताकि यह पता लगाया जा सके कि विद्यार्थी धाराप्रवाह पढ़ पा रहा है या नहीं। जब तक भाषा समृद्ध नहीं होगी तब तक अन्य विषयों में विद्यार्थी अपेक्षित दक्षताएँ हासिल नहीं कर पाएँगे। इसलिए विविध विषयों में काम करते समय भी विद्यार्थियों को भाषाई विकास के लिए पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए।

महेन्द्र कुमार मीना, अध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, अहमदनगर, महाराष्ट्र

इस लेख को पढ़ना अपने काम को बेहतर करने में बहुत मददगार रहा

पत्रिका के अंक 27 में कीर्ति लांबा के लेख 'पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुए इको क्लब' में कक्षा 6, 7 और 8 के सामाजिक विज्ञान विषय से संसाधन और पर्यावरण अध्यायों को मिलाते हुए विद्यालय में जो पर्यावरणीय जीवन्त माहौल बनाया है, वह पढ़ाई और उसके प्रभाव को बहुत ही अच्छे से दर्शाता है।

आखिर नल बन्द करने से हम कितना पानी बचा सकते हैं? जैसे सवालों से उन्होंने कक्षा में विद्यार्थियों को मौलिक तरीके से सोचने और जवाब ढूँढ़ने हेतु 'डाटा' एकत्रित करने के लिए प्रेरित किया है। मुद्दों पर चर्चा से विद्यार्थी कैसे तार्किक सवाल करना सीखते हैं, यह उनके लेख में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

महेश झरबड़े, सदस्य, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भीकनगाँव, खरगोन, मध्य प्रदेश

शिक्षिका के जज्बे ने आँगनवाड़ी केन्द्र को बनाया सीखने का केन्द्र

अंक 27 में अनन्या के लेख को पढ़कर समझ बनी कि शिक्षिका की सूझबूझ से आँगनवाड़ी केन्द्र पर बिना कोई खर्च किए अनुपयोगी सामग्री से बच्चों को सिखाया जा सकता है। शिक्षिका ने घर में पड़े पुराने बिन्दी के पैकेटों, फ़ालतू कागज़, खाने की चीज़ों के रैपर, आदि से रुचिकर सामग्री बनाकर बच्चों को सिखाने के प्रयास किए। इससे उनमें नई-नई चीज़ें बनाने में रुचि बढ़ी, बच्चों का नामांकन बेहतर हुआ, और अभिभावक भी उनको केन्द्र पर भेजने के लिए उत्सुक हुए।

टीना वर्मा, आँगनवाड़ी वर्कर, सेक्टर बनेठा, परियोजना अलीगढ़, टोंक, राजस्थान

जब शिक्षक क्षमतावान बनते हैं तब विद्यार्थी बेहतर सीखते हैं

'शिक्षकों के विकास में सहयोग ही उनका सम्मान है', अनुराग बेहार द्वारा 25वें अंक में लिखा गया यह लेख प्रेरणादायक है। लेख में दर्शाया गया है कि शिक्षा का कार्य आसान नहीं है, और शिक्षकों को सुधार के लिए लगातार समय व समर्थन की आवश्यकता होती है। एक बार का प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं होता क्योंकि हर कक्षा और हर विद्यार्थी अलग होता है। शिक्षक सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब वे अपने विचार साझा करते हैं, एक दूसरे का अवलोकन करते हैं, और कक्षा की समस्याओं पर चर्चा करते हैं।

वानी, सहायक शिक्षिका, केपीएस मारेनहल्ली, साउथ-2 ब्लॉक, बेंगलूरु शहरी, कर्नाटक

लाइफ़ सेविंग स्विचल सिखाने जैसा है विद्यार्थियों को पर्यावरण से जोड़ना

पत्रिका का 27वाँ अंक लाजवाब है। इसमें लगभग सभी विषयों को केन्द्र में रखकर आलेखों का चयन किया गया है। इन आलेखों में भाषाई दक्षता से लेकर पुस्तकों के रखरखाव तक, पर्यावरण के प्रति विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने से लेकर इबारती सवालों की उलझन को दूर करने तक का सफ़र शानदार रहा। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए तो यह शिक्षण सहायक सामग्री की तरह नज़र आया।

कीर्ति लांबा का लेख 'पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुए इको क्लब' पढ़ते हुए समझ आया कि लेखिका ने विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने का एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म दिया जिसमें उन्होंने जैविक-अजैविक, प्राकृतिक संसाधन एवं जीव-जन्तुओं के संरक्षण जैसे किताबी विषयों को धरातल की सच्चाई पर स्वयं जाँचा-परखा है।

मीनू नयाल, शिक्षिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुमराह खटीमा, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक के सभी लेख अच्छे हैं

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा यानी ईसीसीई पर बहुत कम लेख देखने-पढ़ने को मिलते हैं। अतः इस विषय पर पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद। विशेषांक के सभी लेख अच्छे हैं, लेकिन किन्नरी पाण्ड्या का लेख 'प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा : एक वैचारिक खोज' विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

इसमें प्रारम्भिक बाल्यावस्था से लेकर कक्षा 2 तक में शिक्षण की प्रक्रिया को समझने के बारे में चर्चा की गई है, और बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को समझने पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही, इस अवस्था की शिक्षा को आगे कैसे और बेहतर बनाया जा सकता है, इसके लिए विभिन्न विधानों / परिकल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न गतिविधियों के साथ उपयुक्त वातावरण का निर्माण कर बच्चों के विकास को कैसे बेहतर किया जाए और उनकी शुरुआती शिक्षा को कैसे सुखद बनाया जाए, यह इस लेख का मूल आधार है।

बिरादार शिवाजी, ब्लॉक कोऑर्डिनेटर, औराद (बा) बीदर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, महाराष्ट्र

विद्यार्थियों के मानसिक व रचनात्मक विकास में पुस्तकालय सार्थक भूमिका निभाता है

पाठशाला भीतर और बाहर के अंक 27 में 'स्कूल पुस्तकालय को प्रभावी बनाने की तरकीबें' शीर्षक से एक लेख है। इसमें बताया गया है कि विद्यार्थियों की रचनात्मकता और उनके मानसिक विकास में पुस्तकालय अपनी सार्थक भूमिका किस प्रकार निभा सकता है।

इसे पढ़कर मैंने अपने विद्यालय में पुस्तकालय को सार्थक बनाने के लिए चकमक, साइकिल, प्लूटो, आदि जैसी पत्रिकाओं को टेबिल पर रखा। विद्यार्थी इन्हें जब चाहें पढ़ सकते हैं। साथ ही, विद्यार्थियों को पुस्तक जारी करने और वापस लेने की प्रक्रिया को आसान किया।

मोहन सिंह नेगी, प्रवक्ता, भौतिकी अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

भाषा और संज्ञानात्मक विकास का सशक्त माध्यम है कहानी

हिन्दी शिक्षक के रूप में, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिका पाठशाला भीतर और बाहर में मंजू रेवरिया का लेख 'एक कहानी के ज़रिए कई दक्षताओं तक पहुँचना' मेरे लिए प्रेरणादायी रहा। यह लेख कहानी को सिर्फ़ मनोरंजन का साधन न मानकर उसे भाषाई और संज्ञानात्मक विकास का एक सशक्त माध्यम बनाता है। ग्रामीण परिवेश में जहाँ विद्यार्थी रटने की पद्धति से जुड़ते हैं, वहीं कहानी के माध्यम से व्याकरण और बोध की समझ उन्हें भाषा की बारीक़ियों से सहजता से परिचित कराती है। एक शिक्षक के तौर पर मेरी समझ बनी कि कहानी के द्वारा मैं विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता हूँ।

बनवारी लाल मैनी, हिन्दी शिक्षक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रतनपुरा, टोंक, राजस्थान

कहानी सुनने-सुनाने का मजा ही कुछ और है

पाठशाला भीतर और बाहर के अंक 27 में प्रकाशित मंजू रेवरिया द्वारा लिखित 'एक कहानी के ज़रिए कई दक्षताओं तक पहुँचना' लेख अच्छा लगा। वास्तव में, बच्चों को कहानी सुनना बेहद पसन्द होता है। कहानी सुनते या पढ़ते समय बच्चे उसे अपने अनुभवों से जोड़कर समझने का प्रयास करते हैं। लेख में भी कहानी पर बच्चों से चर्चा का जीवन्त अनुभव लिखा गया है। जब मैं अपनी कक्षा में बिगबुक के चित्र दिखाकर बातचीत करती हूँ तब बच्चे अपने अनुभवों से अपनी बात रखते हैं।

दिमनी सिंह, राजकीयकृत मध्य विद्यालय नन्दावल, चैनपुर, गुमला, झारखण्ड

उत्तर देने वाली मशीन के बजाय विद्यार्थी-सोचने वाले इन्सान बनें

पत्रिका के 27वें अंक में शमीम भाटी का 'पीयर लर्निंग' पर लेख पढ़ा जो सीखने की एक प्रभावी पद्धति है। कभी-कभी जब शिक्षक किसी विषय को स्पष्ट रूप से नहीं समझा पाते, वे पीयर लर्निंग के माध्यम से उसे विद्यार्थियों को आसानी से समझा सकते हैं। मैंने कक्षा में ऐसा करके भी देखा है। मीनू पालीवाल का लेख 'इबारती सवालों में क्यों उलझते हैं विद्यार्थी?' भी पढ़ा। इसमें बताया गया है कि विद्यार्थी सामान्य जोड़-घटाव तो कर लेते हैं, लेकिन इबारती सवालों को हल करने में उन्हें परेशानी होती है। इसका कारण विद्यार्थियों में रटने की पद्धति और तर्क की कमी होना है क्योंकि ये सवाल उनके दैनिक जीवन से जुड़े नहीं होते। विद्यार्थियों को केवल 'उत्तर देने वाली मशीन' बनाने के बजाय 'सोचने वाला इन्सान' बनाना अत्यन्त ज़रूरी है।

शिव कुमारी कंवर, शिक्षिका, प्राथमिक शाला कृष्णापुर, संकुल उर्दना, रायगढ़, छत्तीसगढ़

विद्यार्थी रोज़मर्रा के जीवन में खेलना, खाना, नहाना 'पीयर लर्निंग' से ही तो सीखते हैं

अंक 27 में शमीम भाटी का लेख 'सीखने की एक प्रभावी पद्धति है पीयर लर्निंग' उन सभी शिक्षकों के लिए बढ़िया है जो अपनी कक्षाओं में सहज तरीके से सीखने का माहौल तैयार करना चाहते हैं। यदि पारम्परिक कक्षाओं से हटकर बच्चों को गौर से देखें और सुनें, हम पाएँगे कि उसी पद्धति, जिसे हम 'पीयर लर्निंग' कहते हैं, का इस्तेमाल वे अपने रोज़मर्रा के जीवन में खेलते, खाते, तालाब में नहाते या सामान्य बातचीत में कर रहे होते हैं। वे एक दूसरे को बड़े ही सहज और सरल तरीके से सुधार रहे होते हैं और दूसरे उसे स्वीकार भी रहे होते हैं। वहाँ वे न केवल गणित और भाषा से जुड़ रहे होते हैं, बल्कि जीवन के हर उस पहलू का आधार तैयार कर रहे होते हैं जिन्हें हमने विद्यालयों में 'विषयों' का नाम दिया है। यदि यही सहजता हमारी कक्षाओं में भी दिखाई देने लगे तो सीखना और भी आसान और आनन्ददायक हो जाएगा।

गुलज़ार बरेठ, प्रधान पाठक, प्राथमिक शाला रोहदी, जाँजगीर-चाँपा, छत्तीसगढ़

समूह में विद्यार्थी बेझिझक व निडर होकर सवाल पूछते हैं

पत्रिका के 27वें अंक में शमीम भाटी के लेख 'सीखने की एक प्रभावी पद्धति है पीयर लर्निंग' ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इसमें भाषा और गणित, दोनों कक्षाओं के अनुभवों को साझा किया गया है। विद्यार्थियों का समूह में जब भी कुछ पठन-पाठन होता है, वे बेझिझक, बिना डरे अपने समूह के विद्यार्थियों से सवाल पूछते हैं, और उनका निराकरण भी सहजता से कर लेते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि 'पीयर लर्निंग' शिक्षण पद्धति से मुश्किल पाठ को भी आसान बनाया जा सकता है।

लिली प्रभा एक्का, राजकीय उत्कर्मित उच्च विद्यालय मझगाँव, डुमरी, गुमला, झारखण्ड

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक से आँगनवाड़ी केन्द्रों के बारे में नई समझ बनी

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक के लगभग सभी आलेख आँगनवाड़ी केन्द्रों से सम्बन्धित हैं। इन्हें पढ़कर यह समझने में मदद मिली कि आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण आनन्ददायक होना क्यों ज़रूरी है। साथ ही, आँगनवाड़ी से लेकर प्रारम्भिक शिक्षा का महत्त्व इन लेखों को पढ़ने से समझ आया। मुझे लगता है ऐसे लेख प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को लेकर पढ़ने को मिलेंगे तब और अच्छा रहेगा।

डॉ. श्रीनिवास नायक, शिक्षा संयोजक, क्षेत्र शिक्षाधिकारी कार्यालय भटकल, उत्तर कन्नड़, कर्नाटक

सार्थक वार्तालाप से सीखने में मदद मिलती है

मुझे लगता है हम बच्चों द्वारा प्रश्न पूछने पर ज़्यादातर उन्हें चुप करा देते हैं, और हमारे द्वारा प्रश्न पूछने पर बच्चे कभी-कभी आसक्ति दिखाते हैं। प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक में छपे लेख से पता चला कि 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था के शिक्षकों द्वारा अकसर पूछे जाने वाले प्रश्न' कौन-से और कैसे होने चाहिए। यह भी समझ बनी कि सार्थक वार्तालाप से भाषा सीखने में कैसे मदद मिलती है।

अविनाश हिरेमठ, शिक्षक, बि सी कलहाल प्रौढ़शाला काकनूर बागलकोट, कर्नाटक

मैं लेखक के आँगनवाड़ी केन्द्रों के अनुभव से खुद को जोड़ पाया

अपने लेख 'आँगनवाड़ी केन्द्रों का माहौल आनन्ददायक होना चाहिए' में, लेखक सुनील कुमार साह आँगनवाड़ी केन्द्रों को वास्तव में प्रभावी और ऐसी जगह बनाने की बात करते हैं जहाँ गर्मजोशीपूर्ण, सुखद और बाल-अनुकूल माहौल हो। लेख का वह हिस्सा जिसमें 3 अलग-अलग आँगनवाड़ी केन्द्रों के अनुभव साझा किए गए हैं, मुझे सबसे दिलचस्प लगे, क्योंकि मैं इनसे बहुत अच्छी तरह जुड़ सका। मैं भविष्य में केन्द्रों के साथ अपनी सहभागिता के दौरान लेखक द्वारा बताई गई अमूर्त और मूर्त तत्त्वों को मिलाकर ऐसी गतिविधियाँ बनाने और लागू करने के लिए उत्सुक हूँ जो आँगनवाड़ी वर्कशॉपों और बच्चों दोनों के लिए प्रभावी हों।

सिद्धार्थ, सदस्य, अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

अच्छा लगता है बच्चों के साथ समय बिताना

मुझे जे विमला का लेख 'बाल मेला : एक सामुदायिक कार्यक्रम ने नज़रिए को कैसे बदला' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। ऐसे मेले में, मुझे बच्चों के साथ समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। मुझे बड़े बच्चों को पढ़ाने का दायित्व मिला है, लेकिन छोटे बच्चों के साथ उनके व्यक्तित्व विकास के लिए काम करने में बहुत आनन्द आया, ऐसा लगता है।

एम एम गड़गी, जिलाध्यक्ष, हिन्दी शिक्षक संघ, बागलकोट, कर्नाटक

प्रिंट रिच कक्षा के लिए योजना बनाने का नज़रिया मिला

पत्रिका के 25वें अंक में प्रकाशित आलेख 'प्रिंट रिच कक्षा' में लेखिका सीमा अरोड़ा ने बहुत अच्छे ढंग से बताया है कि प्रिंट रिच कक्षा किस प्रकार विद्यार्थियों की मदद करती है। कक्षा 3 और 4 में विद्यार्थियों के साथ भाषा पर काम करना मेरे लिए आसान है क्योंकि मैं पूर्व में उनके साथ लम्बे समय तक काम कर चुकी हूँ। इस आलेख से मेरी समझ बनी कि कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों के साथ प्रिंट रिच कक्षा के माध्यम से पढ़ने-लिखने और भाषा के अन्य आयामों पर कैसे काम किया जा सकता है, और कैसे बच्चों को सहज भाव से उनके अनुभवों से जोड़ा जा सकता है।

बीना सिंह, सदस्य, अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, खूँटी, झारखण्ड

विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ काम करने का आत्मविश्वास बढ़ा

मेरा दृष्टिकोण विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को लेकर पहले कुछ ख़ास नहीं था, लेकिन पाठशाला भीतर और बाहर के लेखों को पढ़ने पर मेरी समझ बनी कि ऐसे विद्यार्थियों की संवेदनशीलता के साथ थोड़ी मदद करने पर उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। अब इन विद्यार्थियों के साथ काम करने का मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया है। उम्मीद है हमें ऐसे अन्य विषयों पर नए-नए लेख आगे भी पढ़ने के लिए मिलते रहेंगे।

एम भजंत्री, सरकारी हाईस्कूल आचनूर, बागलकोट, कर्नाटक

टीएलएम के प्रयोग से सीखना आसान, स्थाई और गहरा होता है

पत्रिका के अंक 25 में प्रकाशित राजेंद्र कुमार कुमावत का लेख 'अमूर्त अवधारणाओं को सिखाने के लिए मूर्त टीएलएम का उपयोग' में बताया गया है कि कैसे शिक्षक कठिन और अमूर्त विषयों को सरल बनाने के लिए सहायक शिक्षण सामग्री (टीएलएम) का प्रयोग कर सकते हैं। यह विचार अच्छा लगा कि जब विद्यार्थी किसी अवधारणा को देखकर, छूकर और प्रयोग करके सीखते हैं, उनका सीखना स्थाई और गहरा होता है। साथ ही, गणित के प्रति उनमें जो भय बैठा रहता है वह भी दूर हो जाता है। ऐसे लेख शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में रचनात्मक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं।

नवीन कुमार, प्राथमिक शिक्षक, एक पठशाला (ईपीईएस) सुहेला, दमोह, मध्य प्रदेश

शिक्षकों के लिए ख़ास हैं 25वें अंक की 25 शिक्षक डायरियाँ

अंक 25 में विद्याश्री एस एस का लेख 'विद्यार्थियों के विकास में देरी सम्बन्धी समस्याएँ और समाधान' आज की परिस्थितियों में बहुत उपयोगी है। इसमें बताया गया है कि जिन विद्यार्थियों को भाषा ठीक से नहीं आती, और जिनकी मातृभाषा उनकी अध्ययन भाषा से अलग है, उन्हें सीखने में किस तरह की समस्याएँ होती हैं। साथ ही, उनकी घर की परिस्थितियाँ कैसे उनके सीखने को प्रभावित करती हैं। सभी 25 शिक्षक डायरियाँ शिक्षकों के लिए बहुत महत्व रखती हैं।

अन्नपूर्णा, सहायक शिक्षिका, केपीएस बसवनगुड़ी, माउथ-1 ब्लॉक, बेंगलूरु शहर, कर्नाटक

लेखकों के लिए

1. लेख वर्ड फ़ाइल में ही भेजें जिसमें कोई डिज़ाइन, बॉर्डर, बॉक्स, आदि न हों। लेख पीडीएफ़ में न भेजें।
2. लेख से सम्बन्धित तस्वीरें या कोई अन्य विज़ुअल अच्छी क्वालिटी का हो, और उसे वर्ड फ़ाइल में लगाकर भेजने की बजाय अलग से अटैच करके भेजें। तस्वीर को image 1, image 2 के नाम से सेव करके भेजें, और लेख में लिख दें कि कहाँ पर आपको लगता है कौन-सी तस्वीर लगनी चाहिए। हालाँकि, इस बारे में अन्तिम निर्णय सम्पादकीय टीम का होगा।
3. तस्वीर का सोर्स ज़रूर बताएँ। कॉपीराइट का ध्यान रखें कि तस्वीर या तो कॉपीराइट फ़्री हो, या जहाँ से ली गई है वहाँ से अनुमति ली गई हो, या आभार व्यक्त किया गया हो। अगर तस्वीर आपने ख़ुद ली है तो वह भी बताएँ, और तस्वीर लेते समय, विद्यालय या कक्षा से इजाज़त ज़रूर लें।
4. विद्यार्थियों की तस्वीरें बिल्कुल न लें, ख़ासकर ऐसी तस्वीरें जिनमें उनका चेहरा स्पष्ट हो।
5. लेख में जब भी किसी किताब का अंश, लेख का अंश, किसी लेखक के उद्धरण (quote) इस्तेमाल में लाएँ, कृपया उनका उल्लेख ज़रूर करें, और क्रेडिट दें।
6. अपने लेख के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, एक फ़ोटो जिसमें आपका चेहरा सामने से स्पष्ट और क्लोज़ हो, मोबाइल नम्बर, पूरा पता, और ईमेल आईडी भी दें।
7. जो भी लेख आप *पाठशाला भीतर और बाहर* के लिए भेज रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे न तो कहीं और भेजा गया हो न ही सोशल मीडिया पर साझा किया गया हो।
8. लेख मिलने पर आपको लेख के मिलने की सूचना तुरन्त दी जाएगी, और 30 दिन के अन्दर लेख की स्वीकृति या अस्वीकृति, या उसमें सुधार के सम्बन्ध में सूचना प्रेषित की जाएगी।
9. पत्रिका में लेखों की तीन श्रेणियाँ हैं। पहली श्रेणी में लेख 2000 शब्दों का, दूसरी में 1500 शब्दों, और तीसरी श्रेणी में यह 700 से 1000 शब्दों का होगा।
10. सम्पादकीय टीम को लेख में सम्पादन का अधिकार होगा। ज़रूरी सम्पादन के बाद आपको लेख भेजा जाएगा।
11. *पाठशाला भीतर और बाहर* अब हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी और कन्नड़ में भी प्रकाशित होगी। माने, आप तीनों में से किसी भी भाषा में लेख भेज सकते हैं। लेख भेजने का आईडी है : pathshala@apu.edu.in
12. आपने जिस भी मौलिक भाषा में लेख भेजा है, अनुवाद होकर तीनों भाषाओं में प्रकाशित होगा। इसका अधिकार सम्पादकीय टीम को होगा।

किसी भी तरह की अन्य जानकारी के लिए आप सम्पर्क कर सकते हैं—

प्रतिभा (हिन्दी) : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org

शेफ़ाली (अँग्रेज़ी) : shefali.mehta@apu.edu.in

राघवेंद्र हेर्ले (कन्नड़) : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार ऋषिकेश बी एस द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार

Anuvada Sampada

अनुवाद सम्पदा

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की अनुवाद रिपॉजिटरी

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।



निःशुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल

- पुस्तकें और पुस्तकों के अंश
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशनों के लेख
- विभिन्न स्रोतों से चयनित लेख

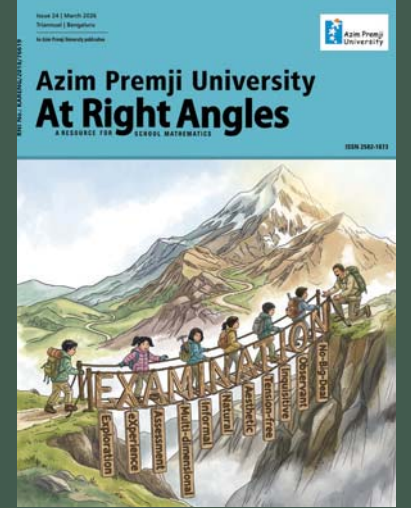
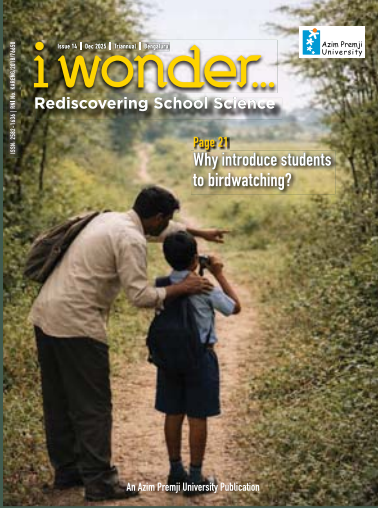
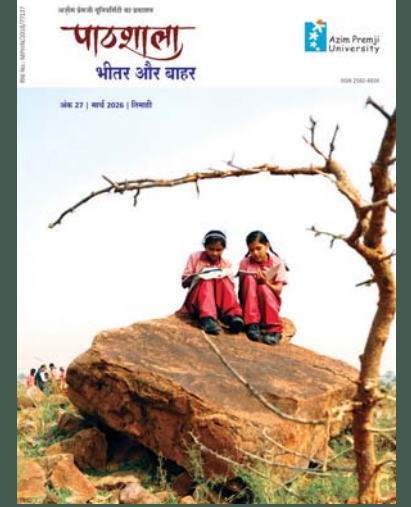
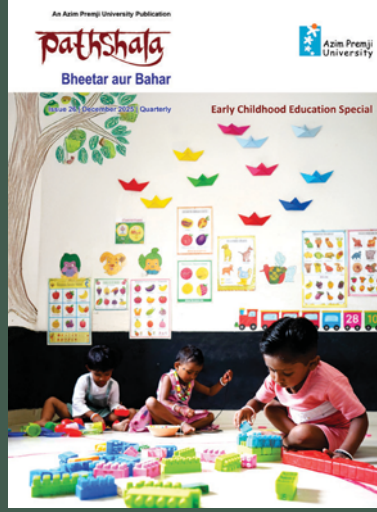
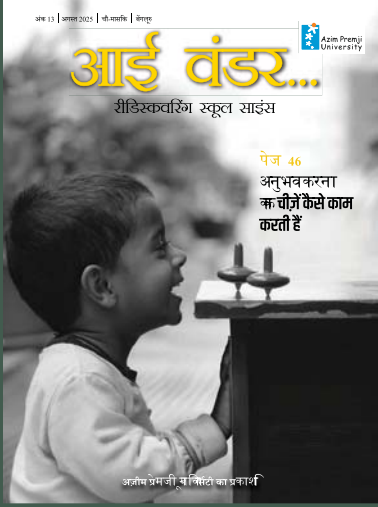
अनुवाद सम्पदा पर आएं

<https://anuvadadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/>



यहाँ स्कैन करे

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिकाएँ



अन्य प्रकाशनों के बारे में अधिक जानने के लिए हमें लिखें - publications@apu.edu.in



पाठशाला की निःशुल्क सदस्यता के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

Azim Premji University
Bengaluru | Bhopal | Ranchi

Website: azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: [/azimpremjiuniversity](https://www.facebook.com/azimpremjiuniversity)

Youtube: [@azimpremjiuniversity](https://www.youtube.com/@azimpremjiuniversity)

Instagram: [@azimpremjiuniv](https://www.instagram.com/azimpremjiuniv)

X: [@azimpremjiuniv](https://twitter.com/azimpremjiuniv)

Address: Survey No. 66, Burugunte Village, Bikkannahalli Main Road, Bengaluru – 562125 Karnataka